Rāmāyaṇa. — Bālakāṇḍa.

Raimain Balmeek Bhakha
Balkand

रामायण वाल्मीकीयभाषा

رامائن بالمیکی

बालकाण्ड



जिसको

सकलहरिभक्त व महात्माओं के रामचरित श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवल किशोर
अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशालाके तृतीयाध्यापक
श्री पण्डित महेश दत्त जी से संस्कृत वाल्मीकीय रामायण से भाषा
में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापीगई
सितम्बर सन् १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् सितम्बर सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	महाभारत पर्व्व अलेह	रामायण रामविलास	रामायण गीतावली स-
महाभारत	दा भी हैं	रामायण तुलसी कृत	विनयपत्रिका बा० मो०
१-पहिले हिस्सा में	१- आदि पर्व्व	रामायण सटीक मय मा	विनयपत्रिका बा० श्रि-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२- सभा पर्व्व	नस दीपिका कोष आदि	विष्णुपुराण भाषा
बन पर्व्व	३- बन पर्व्व	रामायण तु० टी० सुखदेव	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४- विराट पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
विराट् पर्व्व उद्योग पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	बाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	शुक्र नीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व ग-	८- कर्ण पर्व्व	सातों काण्ड	रसरश्मि व रसचंद्रोदय
दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व ऐ-	९- शल्य पर्व्व व	१-बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
शिक पर्व्व विशोक पर्व्व	गदा पर्व्व सौप्तिक मय	२- अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में	ऐशिक व विशोक व	३- आरण्य काण्ड	श्री अनुराग रस
राज धर्म्म आपद् धर्म्म	स्त्री पर्व्व	४- किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
मोक्ष धर्म्म	१०- शान्ति पर्व्व राज	५- सुन्दर काण्ड	रास लीला
४ - चौथे हिस्सा में	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दान	६- लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म अ-	धर्म्म	७- उत्तर काण्ड	नाटक
श्वमेध आश्रम बासिक	११- अश्वमेध आश्रम	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोध चन्द्रोदय
पर्व्व व मौशल पर्व्व व म-	बासिक मुशल पर्व्व म-	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
हा प्रस्थान स्वर्गारोहण	हा प्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण मानस दीपिका	आनंद रघुनंदन
पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२- हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	भ्रमजाल

इश्तहार

बड़े परिश्रम के साथ श्री पोथी बाल्मीकि रामायण का उल्था भाषा में श्री पण्डित महेशदत्त जी से कराया गया है - जिन्हों ने पहिले इस से पोथी श्री विष्णु पुराण व श्री देवी पुराण अर्थात् देवी भागवत संस्कृत का उल्था भाषा में किया था उन्हों ने ही इसको भी किया है -

अभी केवल दो काण्ड का उल्था छप गया है वह प्रचलित किया गया - आगे जैसा जैसा कि उल्था होकर मतबे में आयेगा - प्रचलित किया जायगा -

यदि ख़रीदार लोग आगे के काण्डों के लेने से इत्तिलाअ देंगे तो उनकी एक फ़ेहरिस्त कुतुबख़ाने के दफ़्तर में रक्खी जायगी और जब कोई काण्ड तैयार होगा तो भेजा जायगा -

नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ

श्रीरामचन्द्रोभद्रमातनोतु॥

रामायण बाल्मीकीय भाषा॥

बालकाण्ड॥

दोहा॥

मङ्गलकरण जन भय हरण रामचरण शिरनाय।
बाल्मीकि भाषा करत गणपति गिरा मनाय॥ १॥

अथ

तपस्या व वेद पाठ करने में निरत वेद जाननेवालों में व मुनियों में श्रेष्ठ नारदमुनि से तपस्वी बाल्मीकिजीने पूंछा कि इस मर्त्यलोक में इस समय गुणवान् वीर्य्यवान् धर्म्मज्ञ उपकार माननेवाला सत्यवादी व दृढ़व्रत धारण करनेवाला अनेकचरितकारी सब प्राणियों का हित करनेवाला परम विज्ञानी सब कुछ करने में समर्थ अति दर्शनीय रूप आत्मज्ञानी क्रोध जीतनेवाला तेजस्वी निन्दारहित व संग्राम में जब उसके क्रोध हो तो देवता भी भयभीत हों ऐसा कौन है हे महर्षिजी यह सुनने की हमको बड़ी इच्छा है आप ऐसे मनुष्य के जानने में समर्थ हैं बाल्मीकिजी के ऐसे वचन सुन तीनों लोकों के जाननेवाले नारदमुनि अति हर्षितहो सुनिये ऐसा कह बोले हे मुनिराज जो गुण आपने कहे वे सबतो बहुत हैं और दुर्ल्लभ हैं परन्तु अब हम अच्छी भांति विचार के जिसमें वे सब गुणहों व उनसे अधिक भी उत्तम २ गुण हों ऐसे मनुष्य रूप को बताते हैं सुनिये वैवस्वत मनुके ज्येष्ठ पुत्र राजाइक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न श्रीरामचन्द्रजी महाराज जिनको ताड़कादि मारने विश्वामित्र की यज्ञरक्षा करने अहल्या को पाषाण से स्त्री बनाने शिवधनुष खण्डन करने परशुराम को अहङ्कार मिटाने सात ताड़ के वृक्ष एक बाण से छेदने बाली के मारने समुद्र में सेतु बँधाने आदि कर्म्मों से साक्षात्पराक्रम

परमात्मा स्वरूप मनुष्य देह धारण करने पर भी सब छोटे बड़े जानते हैं वही जितेन्द्रिय महापराक्रमी अति तेजस्वी धारणा शक्ति सहित सब के स्वामी अतीव बुद्धिमान् न्यायशास्त्रनिपुण सुन्दर वचन बोलनेवाले श्रीमान् शत्रुनाशकारी विपुलस्कन्धधारी प्रलम्बवाहु शङ्ख के समान तीन रेखा सहित गल बड़ी भारी चौहरी अति चौड़ी छाती बड़े धनुषवाले मारे मुटाई के कांधेपर के हाड़ मूंदेहुये शत्रुओं के मारने में तत्पर आजानुवाहु सुन्दरशिर सुन्दरलिलार सुन्दरचाल सकल अङ्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े अति मनोहर रूप महाप्रतापी मोटीछाती विशालनयन लक्ष्मीवान् सब शुभलक्षणयुक्त धर्म्मज्ञ सत्यप्रतिज्ञ प्रजाओं के हित में निपुण महायशस्वी अतिज्ञानी अतिपवित्रमूर्त्ति भक्त पराधीन शरणागतरक्षण चिन्ताकारी प्रजापति के समान प्रजापालन निपुण अति शोभावान् सबके धारण करनेवाले रिपुओं के विनाशनेवाले सबजीवों के रक्षा करनेहारे धर्म्म के अतीव रक्षक अपने धर्म्म के रखानेवाले अपने भक्त के पालक वेदवेदाङ्ग के तत्व के जाननेवाले धनुर्विद्यामें अतीव प्रवीण सब शास्त्रार्थों के निश्चय जाननेवाले सकल वस्तु स्मरण रखनेवाले महातेजस्वी सब लोकोंके प्रिय परम साधु सदा प्रसन्नचित्त महापण्डित सज्जन लोगों की जिन में सदा पहुंच जैसे समुद्र में सब नदियों की पहुंच होती है वैसेही सज्जनों की जहां परम श्रेष्ठ सब समय में समान दुःख सुख सदा प्रियदर्शन सब गुण युक्त कौसल्या के आनन्द बढ़ानेवाले समुद्र के समान गम्भीरस्वभाव हिमवान् के समान धैर्य्यवान् पराक्रम में विष्णु के समान चन्द्रमा के समान प्रियदर्शन क्रोध समय कालाग्नि के समान क्षमा करने में पृथिवी के समान दान देने में कुवेर के समान सत्य बोलने में मानों दूसरे धर्म्म ऐसे गुणी सत्य पराक्रमी श्रेष्ठ गुणयुक्त ज्येष्ठपुत्र मंत्री आदिकों के हित में तत्पर तिन्हीं मंत्री आदिकों को प्रीति के लिये राजा दशरथ ने रामचन्द्रको प्रीति से युवराज देना चाहा तिसके अभिषेक की सामग्री देख राजा दशरथ की रानी केकयी ने आगे के पाये हुये दो वरदान राजासे मांगे उनमें से एकसे रामचन्द्र को बन को गमन दूसरे से भरतजी को युवराज होना मांगा राजा दशरथ सत्यवचन के सिवाय झूंठ कभी बोलतेही नथे इसलिये धर्म्म

की फांसी में फंस राम ऐसे परमप्रिय पुत्र को भी बन के जाने की आज्ञा दी तब श्रीरामचन्द्रजी पिता की आज्ञा पालन करने व केकयी के प्रिय करने की इच्छा से बन को चलेगये तिन को जाते हुये जान सुमित्राजी के आनन्द बढ़ाने वाले परमप्रिय भाई लक्ष्मणजी मारे स्नेह के साथ चले गये व श्रीरामचन्द्र की परमप्रिय स्त्री सीताजी जो कि राजा जनकके कुल में उत्पन्न थीं व स्त्रियों के सबउत्तम२गुणों से युक्त थीं श्रीरामचन्द्रजी के पीछे बन को चली गईं जैसे कि चन्द्रमाके पीछे रोहिणीनाम उन की स्त्री चलती है उनके पीछे अयोध्यावासी भी बहुतदूर तक चलेगये राजा दशरथ भी दूर तक गये शृंगिवेर पुर में पहुंच गंगाजी के किनारे पर से सुमंतु रथ के हांकनेवाले अपने पिता के मंत्रीको बिदा किया वहां निषादों का स्वामी अतिप्रिय गुह मिला धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्र उसके व सीता लक्ष्मण के साथ बड़ी २ नदियां उतरते हुये एक बनसे दूसरे बनको गये भरद्वाज के सिखाने से फिर जाते २ चित्रकूट में पहुंचे वहां रम्य स्थान बनाय देवता गंधर्व्वों के समान क्रीडा करते हुये तिस बन में तीनों जन सुख पूर्व्वक बसे जब रामचन्द्रजी चित्रकूट में पहुंचे तो राजा दशरथ पुत्रशोक से दुःखित हो पुत्र २ कह रोते हुये स्वर्ग को गये तिन के मरने के पीछे वशिष्ठादि मुनियों ने भरत को राजा होने के लिये कहा पर महा बलवान् भरतजी ने राज्यकी इच्छा न की वरन रामचन्द्रजी के मनाने के लिये बन को चलेगये वहां सत्यपराक्रम महात्मारामचन्द्र जीके पास पहुंच बड़ी नम्रता व शिष्टाचारी के साथ प्रार्थना करनेलगे कि हे राम हे धर्म्मज्ञ राजा होनेके योग्य तुम्हींहो परमदानी महायशस्वी रामचन्द्र जीने भी पिता की आज्ञासे छूटेहुये राज्यकी फिर इच्छा न की बारबार समझाय बुझाय राज्यकार्य्य चलनेके लिये अपनी पादुका भरतजी को दे बड़ीयुक्तिसे लौटाया रामचन्द्र जीके चरणारविन्दों की पादुकाओं को स्पर्शकरते हुये सबकामों को पाय रामचन्द्र जी के आगमन की बांछा करते हुये भरतजी नन्दिग्राम जो भदर्सा तहाँ बस राज्य करनेलगे जब भरतजी इधर आये तो सत्यसन्ध जितेन्द्रिय रामचन्द्रजीने देखा कि यहाँ अब नगरनिवासी लोग बहुत आने लगे हैं इसलिये दण्डकारण्य को चलेगये कमलनयन श्रीरामभद्र दण्डकबन में पहुँच विराध

नाम राक्षसको मार शरभङ्गमुनि के आश्रम पै गये व उनको देखा फिर सुतीक्ष्ण अगस्त्य व उनके भाई सुदर्शन को देखा वहाँ अगस्त्यजी के कहने से इन्द्रका धनुष खड्ग व अक्षय बाण तर्कस ग्रहण किये तिस बनमें रामचन्द्रजीके बसनेके समय राक्षस व असुरों के मारने के लिये ऋषि लोग आये रामचन्द्रजी ने उनसे कहा कि हम राक्षसों को अब मारेंगे दण्डकारण्यनिवासी ऋषिलोगों ने जाना कि अब रामचन्द्रजीने इन राक्षसों के मारने के लिये प्रतिज्ञा की तिन मुनियों के सङ्ग रामचन्द्रजी उस बनमें बसेरहे थे कि जन स्थान निवासिनी महाविकराल रूप स्वेच्छाचारिणी शूर्पणखा राक्षसी आई लक्ष्मणजी ने रामचन्द्र जीके कहनेसे उसकी नाक काटडारी इसलिये उसके वचनसे खरदूषण त्रिशिर राक्षस व उनकी सेना आई रामचन्द्रजी ने रणमें उन सबको मारडारा उस बनके निवासी १४००० राक्षस मारेगये तब अपने बन्धुओं का मरण सुन अतीव क्रोधकर रावणने मारीच नाम राक्षस से सहायता माँगी मारीच ने रावण को बहुत रोंका कि हे रावण बलवान् रामचन्द्रके साथ तुम विरोध न करो परन्तु कालके वशहो रावण मारीच के वचन न मान तिसको सङ्गले जहाँ रामचन्द्रजी थे उस आश्रम पै पहुँचा वहाँ मारीच ने मायाकरके श्रीराम लक्ष्मणजी को दूर करदिया तब रामचन्द्रजी की स्त्री सीताजी को रावण हरिलेगया जाते समय जटायुनाम गीधराजसे लड़ाईहुई कि जिसमें जटायु मारेगये रामचन्द्र जी ने जटायु को मृतप्राय देख व सीताजी को हरीहुई सुन अति व्याकुल हो बहुत विलाप किया फिर जटायु की दाहक्रिया अपने हाथों कर बनमें जानकीजी को ढूंढ़ते चले जाते थे कि बनमें अति भयानक रूप कबन्धनाम राक्षस को देखा उसको श्रीरामचन्द्रजी ने वध किया कि वह गन्धर्व्व रूप धारण कर स्वर्गको चलागया चलने के समय उसीने रामचन्द्रजी से बताया कि हे राघव बड़ी धर्म्मचारिणी शबरी नाम स्त्री तुम्हारी भक्ति करनेवाली है तिसके निकट जाइये शत्रुविनाशी रामचन्द्रजी शबरी के स्थान पै गये व उसने बड़ी पूजा की वहाँसे चल पम्पासरके किनारे हनुमान्नामवानर से भेंटहुई फिर हनुमान्हीके वचन से सुग्रीव से रामचन्द्रजी ने मित्रता की हनुमान्जी ने सुग्रीव से राम-

चन्द्र जी का पराक्रम अच्छीभांति कहा रामचन्द्र जी ने भी अपने सबवृत्तान्तकहे परसीताजी के समाचार तो बहुत विशेषतासे कहे सुग्रीव ने भी सबरामचन्द्रजी के हाल सुन अति प्रसन्नहो अग्निको साक्षीदे श्रीरामभद्रके सङ्ग मित्रताकी व अपना सब दुःखकहा सोसुन रामचन्द्रजीने बाली के मारनेकी प्रतिज्ञा की तबसुग्रीवने बालीके बल की प्रशंसा की व उनको रामचन्द्रजीके पराक्रम में शङ्काबनीरही कि ये धौं बालीको मार सकेंगे वा नहीं इसलिये रामचन्द्रके बलकी परीक्षा करनेकेलिये दुन्दुभी नाम राक्षस की देहसे जमेहुये ताल के वृक्ष देखाये रामचन्द्रजी देखहँसे व उठके पांयके अंगूठेसेमारा कि वे ४० कोश पैजायगिरे व फिर एक बाण ऐसामारा किसातों ताल रत्ती २ टूटगये व वहपर्व्वतभी चूर्णीभूत होगया इस बातको देख सबको विश्वासहोगया तब सुग्रीव अतिप्रसन्न हो व विश्वास मान किष्किन्धानाम पर्व्वतके ऊपर जो पुरीथी रामचन्द्र जीके साथवहां पहुंचे पहुंचतेही वहांजाय बड़े वेग से गर्ज्जे जिसे सुन वानराधीश बालीनिकला सुग्रीव से लड़ाईहुई रामचन्द्रजीने एकही बाणसे बालीको मारडाला व सुग्रीवको वहांका राजा बनाया तब सुग्रीव ने सबवानरोंको बटोर जानकीजीके देखने केलिये सबदिशों को भेजा जाते २ सम्पातिनाम गृध्रसेभेंट हुई उसके कहने से हनुमान्जी ४०० कोस के फाँटके समुद्रको नांघगये व वहांरावण की पाली लङ्कामें रामचन्द्र को ध्यावतीहुई सीताकोअशोकवाटिका में बैठीदेखा रामचन्द्रजीकी अंगूठी जो लेगयेथे चिन्हके लिये दिया व बहुतभांति समझाय बुझाय अशोकवाटिका की खांई व वृक्षादिक तूर फार डाले ५ सेनापति व ७ मन्त्री के पुत्रमारे अतिशूरअक्षकुमार को मारा तिसकेपीछे मेघनादादिकों ने नागपाश से बँधुआ किया परन्तु ब्रह्माजी के वर से ब्रह्मपाश से छूट गये यद्यपि हनुमान्जी राक्षसों के मारने में समर्त्थ भी थे पर राक्षस व मन्त्रियों के दुर्व्वचनादि सहलिये जब पूंछमें वस्त्रादि लपेट राक्षसों ने फूंकदिया तब कूद फाँद जिस स्थान में जानकीजी थीं उसे तो बचाय दिया बाकी सब लङ्का की लङ्का फूंक अति प्रिय सन्देश कहने के लिये फिर रामचन्द्रजी के पास आये आतेही रामचन्द्रजी की प्रदक्षिणा कर बैठे कि श्रीराघवने कहा कहो सीताको देख आये इसके पीछे सुग्रीवादि

कों को सङ्गले समुद्र में सेतुबांधा उसीमार्ग से लङ्का में जाय संग्राम में रावण को मारा पीछेसे सीताजी को पाय रामजी बड़ी खिसेई में परे व सबके सामने सीताजीको रामचन्द्रजी ने कुछ दुर्वचन कहा इसलिये वे अग्निमें प्रवेश करगईं अग्निके वचन से जानकीजी को निष्पाप जान बड़े आनन्दित हुये व सब देवताओं ने उनकी पूजा की व इस बड़े भारी रावण के मारने के कर्म्म से चराचर तीनोंलोक प्रसन्नहुये व सब ऋषि गण भी हर्षित हुये श्री रामचन्द्र भी लङ्का में विभीषण को राक्षसेन्द्र बनाय कृतकृत्य हो परमानन्दित हुये फिर देवताओं से वरदान पाय समरमें मरेहुये वानरों को जिआय पुष्पक विमान पै चढ़ सुहृदोंके साथ अयोध्याको चलेआते २ भरद्वाजजी के आश्रम पै पहुँचे वहाँसे हनुमान जी को भरतजी के पास भेजा फिर सुग्रीवके सङ्ग पुष्पक पै चढ़ नाना-भांतिकी कथा कहते हुये नन्दिग्राम में आये वहाँ सब भाइयोंके सङ्ग जटानिरवारि सीताको प्राप्त हो राज्य सिंहासन पै बैठे तब श्रीराम-चन्द्रजीके राज्यमें सबजन परमानन्दितहुये और ॥

चौ० प्रमुदित लोक प्रहर्षित नीके । तुष्ट पुष्ट धार्म्मिक मतिठीके ॥ सकल अरोग निरामय रहहीं । नहिं अकाल बार्त्ताकोउलहहीं १ ॥ पुत्र मरण न लखत जन कोई । नारी बिधवा कबहुं न होई ॥ सकल पतिब्रत धारण करहीं । सुभगा रहत सदासुख भरहीं २ ॥ पावक सों न होत भय काहू । नहिं जलमहं बूड़हिं नरसाहू ॥ बात ब्याधि काहुहि नहिं ब्यापा । ज्वरबाधा सपन्यहु नहिं सापा ३ ॥ काहुहि क्षुधा केरि भय नाहीं । चोर नाम नहिं देत सुनाहीं ॥ नगर राज्य धन धान्य समेता । सदा सुखी नहिं दुखके हेता ४ ॥ नित्यमुदित जनजिमि कृतमाहीं । अश्वमेध कीन्हे बहु ताहीं ॥ बहुत सुवर्ण बुधन कह देहीं । परधन काहु कबहुं नहिं लेहीं ५ ॥ कोटिन धेनु द्विजन कहं दीन्हीं । विधि पूर्वक संशय नहिं कीन्हीं ॥ संख्या रहित दीनधन बिप्रन । महायशी रघु-नायक क्षिप्रन६ ॥ राज बंश शत गुण रघुनाथा । थाप्यो भली भांति नहिं गाथा ॥ चातुरर्ब्बर्ण्य लोक महं नीके । निज २ धर्म्म चला यहु ठीके ७ ॥ एकादशसहस्त्र समराजू । करि रघुनन्दन सब सुख साजू ॥ ब्रह्मलोक गे सहित विधाना । यह रघुनाथ चरित शुभ भाना ८ ॥ अति

पवित्र अघनाशन हारा । पुण्य रूप श्रुति सम निरधारा ॥ रामचरित जो पढ़िहि उदारा । सकल पाप सों होइहि न्यारा ९ ॥ यह आयुष्य सुभग रामायन । पढ़त सुनत समुझत नितगायन ॥ पुत्र पौत्र पावत सो प्रानी । अन्त स्वर्ग जावत गुण खानी १० ॥

हरिगीतिका ॥

जो पढ़िहि द्विज सो श्रेष्ठ वाणी लहिहि नहिं शंका धरो ।
जो क्षत्रिकुलभूषण पढ़िहि तो राज्यपाइहि आकरो ॥
बाजार फलसब वैश्यपैहैं पढ़त राम चरित्तकम ।
अरु शूद्र जन मनलाय सुनिहैं लहि महत्व पवित्र कम ॥ ११ ॥

इत्यार्षेरामायणेआदिकाव्येबाल्मीकीयेबालकाण्डेप्रथमस्सर्गः ॥ १ ॥

नारदजी के वचन सुन वचन विशारद सहित भरद्वाज धर्म्मात्मा बाल्मीकि जीने नारद जीकी बड़ीपूजाकी तब यथाविधि पूजितही नारदजी बाल्मीकिजीसे अच्छीतरह से पूंछ्व आज्ञाले आकाश को चले गये जब नारदजी आकाश को चलेगये तो बाल्मीकिजी एक मुहूर्त्त भर विचार गंगाजी के उत्तर थोड़ीही दूर पर एक तमसा नाम नदीथी उसके किनारे पै पहुंच पहुंच के देखा तो उस नदीका जल ऐसा निर्म्मलथा कि कहीं बोदा न था उसे देख बगलमें खड़ेभये भरद्वाज अपने शिष्यसे बोले कि हे भरद्वाज यहतीर्थ बोदारहित अतिरमणीय व प्रसन्नजलहै जैसे कि अच्छे मनुष्यका मन होताहै तिससे हे तात यहां कलश धर दीजिये और हमारा वल्कलदीजिये कि हमइस उत्तम तमसातीर्थमें स्नान करें जब बाल्मीकिजीने भरद्वाजजी से ऐसा कहा तो भरद्वाजजी ने अपने गुरुदेव मुनिराज बाल्मीकिजी को वल्कल दिया शिष्य के हाथसे वल्कलले बाल्मीकि जितेन्द्रियहो उस नदीके किनारेपै चारों ओर से महा बन देखतेहुये बिचरनेलगे कि उसी बनमें नदी के तट पै एक क्रौञ्चक्रौञ्ची का शब्द सुन परा उसशब्दसे विदितहुआ कि ये दोनों मैथुनमें लगे हुये हैं जाते २ उनको देखाभी कि मुनिके देखतेही देखते उन दोनों जो पुरुष पक्षी क्रौञ्च था उसको बैररूप एक निषादने आय मार डारा उसको रुधिरमें डूबे हुये पृथिवीमें लोटतेदेख मराजान क्रौञ्ची अति करुणापूर्व्वक रोनेलगी अबक्रौञ्ची बेचारी अपने क्रौञ्चपति से हीन होगई

मारे रक्त के उस क्रौञ्च का शिर लाल होगयाथा वह मैथुनतो करहीरहा था इसलिये मतवालाभी था बाण लाग के निकल नहीं गयाथा वरन उसी को देह में गड़ा हुआथा निषाद के मारे हुये ऐसे पक्षी को देख धर्म्मात्मा बाल्मीकिजी के करुणा आई मुनियों का दयालु स्वभाव तो होताही है क्रौञ्ची का रोदन सुन उस निषाद से बोले कि हे निषाद जिससे कि तुमने इस क्रौञ्च की जोड़ीमें से काम मोहित एक क्रौञ्च को मारडारा है इससे बहुत बर्षों तक तुम प्रतिष्ठा को न प्राप्त होवो जब मुनि ने यह श्लोक रूप बार्त्ता निषाद से की तो मन में बड़ी चिंता हुई कि इस पक्षी के शोक से कष्टित मुझने यह क्या कहा यह चिंतना करते ही महापण्डित बाल्मीकिजी बुद्धि को स्थिर कै अपने शिष्य भरद्वाजजी से यह वचन बोले कि यह जो वाक्य हमने निषाद से कहा उसमें चार तो चरण हैं सब चरणों में अक्षर बराबर हैं व बीणा बजाय कै गाने के योग्य शोक से कष्टित हो के हमारे मुख से जो निकला है वह श्लोक होगा इसके सिवाय अन्य कुछ न होगा यह सुन भरद्वाज मुनि बहुत प्रसन्न हो बड़ाई करने लगे बाल्मीकिजी ने भी बड़ी बड़ाई की फिर तिसी तीर्थ में यथाविधि स्नान कर तिसी बात की चिंतना करते हुये मुनिराज वहां से लौटे तिनके पीछे २ परम विनीत उनके शिष्य भरद्वाजजी भी तीर्थ जल से पूर्ण कलश लेकर चले आते २ सहित शिष्य बाल्मीकिजी अपने आश्रम पै पहुंच व बैठकर औ बहुत सी कथा ध्यान लगाय करने लगे उसी समय लोक के कर्त्ता श्रीब्रह्माजी महराज महातेजस्वी चार मुख धारण किये मुनिराज को देखने के लिये आये २३ तिनको देख मौनव्रत धारण किये हुये बाल्मीकि जी एकाएकी उठ खड़े हुये व हाथ जोड़ परम बिस्मितहो चित्त लगाय सामने खड़े रहे २४ व पाद्य अर्घ्य आचमनीय आसनादि से विधि पूर्वक पूजा की व प्रणाम कर कुशल पूंछा २५ तब ब्रह्माजी आप आसनपैबैठ व महर्षि बाल्मीकिजी कोभी उन्होंने बैठने की आज्ञादी ब्रह्माजीकी आज्ञा पाय मुनिराजभी आसन पै बैठ गये २६ जब लोक के पितामह ब्रह्माजी आसन पै विराजे तो बाल्मीकिजी भी ब्रह्मा में चित्त लगाय उसी बातकी चिंतना करने लगे २७ कि देखो उस पापीनिषाद ने बैरबुद्धि से उस मैथुन कर तैरतेहुये

रमणीय बोली बोलते हुये बिचारे क्रौञ्च को नाहक मारा २८ बार २ उस क्रौञ्चीमें मन लगाय शोचने लगे व वही श्लोक जिस्में मानिषाद यह पद है कहने लगे व बहुत शोक करने लगे २६ यह दशा देख ब्रह्मा जी ने मुनिश्रेष्ठ से हँस के कहा कि आपने यह श्लोक ही बनायाहै इसमें कुछ शोच बिचार न कीजिये ३० हे ब्रह्मन् हमारी इच्छासेही तुम्हारी सरस्वती ऐसी प्रवृत्त हुई है इससे ऐसेही श्लोकों में श्रीरामचन्द्र के सम्पूर्ण चरित तुम करो ३१ इसलोक में धर्म्मात्मा गुणवान् बुद्धिवान् अति धीर रामचन्द्र के वृत्त जैसे तुमने नारद से सुने हैं सब कहिये ३२ नारद ने तो तुम से संक्षेप रीति से कहा है पर हम तुम को आशीर्व्वाद देते हैं कि बुद्धिमान् श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी व राक्षसों के भी जो वृत्तांत गुप्त व प्रकट जितने होंगे ३३ व जानकीजी के भी जो २ वृत्तांत गुप्त व प्रकट होंगे जिन्हे कि अन्य कोई किसी रीति से नहीं जान सक्ता उन सबको तुम यथातथ्य जानोगे ३४ इसलिये तुम अति मनोहर अति पुण्य रामचन्द्रजी की कथा श्लोकों में बनाओ क्योंकि आज तक किसी ने श्लोकों में कुछ भी नहीं बनाया इस काव्य में तुम्हारी वाणी कोई भी झूठी न होगी जो २ कहोगे सब सत्यही होगी ३५ और जब तक पृथिवीतलमें पर्वत व नदियां रहेंगी तबतक तुम्हारी कीहुई रामायण की कथाका प्रचार रहेगा ३६ व तबतक तुमभी नीचे ऊंचे के जितने लोक हमारे बनाये हुयेहैं उनमें टिकेरहोगे पीछे मोक्षपंद को पहुंचोगे ३७ इतना कह भगवान्ब्रह्माजी तो उसी स्थान पै अंतर्द्धान होगये व बाल्मीकिजी अपने शिष्य भरद्वाजजीके साथ परम विस्मय कोप्राप्त हुये ३८ और बाल्मीकि भरद्वाज दोनों जनों के शिष्यगण प्रसन्नता के मारे वही श्लोक बार२ विस्मितहो गाने लगे ३६ व कहने कि जो श्लोक महर्षि बाल्मीकि जी ने आठ २ अक्षरों के चार चरणों में क्रौञ्ची को दुःखदेख शोक करके कहाहै वही श्लोक ताको पहुंचा ४० शिष्यगण तो ऐसा बिचारतेही थे बाल्मीकि जी की बुद्धिभी ऐसी हुई कि अब हम सब रामायण काव्य बहुधा ऐसेही अनुष्टुप् श्लोकोंमें करेंगे कहीं २ अन्य श्लोकोंमें भी बनावेंगे ४१ ॥

चौ० तासों अति उदार पद छंदा । परम मनोहर श्रुति सुख कन्दा ॥ शुभ समान अक्षर युत नीके । श्लोक सहस्रन कीन सुठीके १ ॥ की-

र्तिमान मुनिराज महाना। परम यशस्वि राम गुण गाना ॥ करन लगे शुभ काव्य बनाई । जासों सुयश होय अधिकाई २ ॥ सन्धि समास सकल यहिमाहीं । दूर २ नहिं कतहुं लखाहीं ॥ न्यूनाधिक पद कतहुं नयामें। असवर काव्य कीन कविता में ३ ॥ सकल मधुरपद वाक्य बिशाला । रघुवर चरित हरण भव जाला ॥ मुनिवर भणित सुनहुं सब लोगू । जामें रावण बधि गत शोगू ४ ॥ कीन चराचर राम उदारा । फैल्यहु सुयश सकल संसारा ॥ जासु सुनत बांचत पुनि गावत । सुकृती जन सब अभिमत पावत ५ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेआदिकाव्येबालकाण्डेद्वितीयस्सर्गः ॥ २ ॥

इस भांति नारदजी के मुखारविंद से धर्म्म अर्थ काम मोक्ष देनेवाला सब वस्तु रूप रामचन्द्र का चरित सुन तिससे भी अधिक बुद्धिमान् श्री रामचन्द्रजी के चरित फिर मुनिराज ढूंढ़ने लगे १ उस समय पूर्व्वओर को फुनगी कर कुश बिछाय तिनके ऊपर बैठ आचमन कर अपने गुरू को ध्यानकर हाथ जोड़ धर्म्म से रामचन्द्र के चरितों की गति निहारने लगे २ देखते २ राम लक्ष्मण सीता औ राजा दशरथ कैकयी कौसल्यादि रानियों ने व अयोध्या के राज्य के निवासियों ने जो २ सम्बन्ध पायाथा सब मुनिराज ने ध्यान दे के देखा व जाना ३ जैसा कुछ हँसना बोलना चलना क्रीडादि करना इन लोगों का था मुनि यथाविधि देखने लगे ४ बन में सत्यसंध श्रीरामचन्द्रजी ने जानकीजी व लक्ष्मणजी के साथ जो २ चरित किये थे सो भी बाल्मीकिजी ने अच्छी भांति दिव्य दृष्टिसे देख लिया ५ क्योंकि पूर्व्वही जो२राम चरित ब्रह्माजीके प्रसाद व नारदजी के कहने से जानाथा सोसब साफ२देखने लगे जैसे किसीके हाथमें अँवरा का फल धराहो उलट पलट मनुष्य उसे देखसक्ता है ६ तिस सब चरित को जब निश्चय करलिया तो लोकाभिराम रामचन्द्र के चरितों को श्लोकबद्धकाव्य प्रबन्धमें करनेको उतारू हुये ७ श्रीरामचन्द्रजीका चरितकामार्त्थ गुण संयुक्त व धर्म्म मोक्षके गुणोंको विस्तार करनेवाला सुनतेही मन हरनेहारा समुद्रके समान सबरत्न सहित ८ जैसाकि महात्मा नारदजीने कहाथा रघुबंशी श्रीरामचन्द्र के चरित भगवान बाल्मीकि जी करने लगे ९ जैसे कि प्रथम रामचन्द्र का जन्म फिर महापरा-

क्रम व सबके ऊपर प्रसन्न रहना उनके ऊपर सबका प्रसन्न रहना सब लोकका प्रियकरना क्षमाकरना सौम्यता सत्यशीलतादिगुण १० फिर बिश्वामित्र के साथ जाय नानाभांति की विचित्र कथा कहना सुनना मारीचादिको मारहटाना जानकीजीका बिवाह धनुषतोड़ना ११ रामचन्द्र व परशुराम का विवाद श्रीरामचन्द्रके गुण रामचन्द्र का राज्याभिषेक कैकेयी की उस विषय में दुष्टता १२ रामचन्द्र के अभिषेक का विघात व रामचन्द्र जीका बनगमन राजा दशरथ का शोक व रोना व परलोक जाना १३ अयोध्यावासी व नौकर चाकरों का विषाद मार्ग्ग से सब लोगोंका लौटना निषादराजका सम्बाद सुमन्तजीको रथदेकर बिदा करना १४ गङ्गाजीका उतरना प्रयागमें जाय भरद्वाज के दर्शन करना भरद्वाजही की कृपासे चित्रकूटका दर्शन १५ फिर वहाँ पर्णकुटी बनाना भरतजीका अयोध्या से चित्रकूट जाना रामचन्द्रजीका विलाप व पितरोंको जल पिण्डादि देना १६ भरतजीका रामपादुकालाना तिनका अभिषेक नन्दिग्राम में बस अयोध्या का राज्य करना रामचन्द्र जीका दण्डकारण्य जाना व विराधकाबधकरना १७ शरभङ्गमुनिके दर्शन सुतीक्ष्ण मुनिका समागम अनसूया और जानकीजीकी भेंट व चन्दन देना १८ अगस्त्यमुनि का दर्शन व अगस्त्य से धनुष लेना शूर्प्पणखा का सम्बाद व उसके नाक कान आदि काटना १९ खरदूषण त्रिशिरका बध रावण मारीच की वार्त्ता मारीचका मरण सीताजी का हरना २० श्रीरामचन्द्र जीका विलाप गृद्धराजकी क्रिया कवन्धका दर्शन व मारना पम्पासरपर पहुंचना २१ शबरी के व हनूमान के दर्शन पम्पासरपै पहुंच महात्मा श्रीरामचन्द्रजीका विलाप २२ ऋष्यमूक पर्व्वतपै जाना सुग्रीवका समागम विश्वास के लिये अग्निको साक्षी करना बालि सुग्रीव की लड़ाई २३ बालि का बध सुग्रीवको राज्यदेना तारा का विलाप बर्षाकाल में प्रवर्षण पर्व्वत पै निवास २४ सुग्रीव के ऊपर श्रीरामचन्द्र का कोप बानर सेनाको सब दिशोंमें भेजना पृथिवी समुद्र द्वीपादिकों में जानकी जीकाढूंढ़ना २५ हनुमानजीको मुंदरी देना ऋक्षराज सम्पातिकी बिल देखना उपवासादिकर मरनेके लियेसमुद्रके तटपै बानरोंका बैठना वहां सम्पातिकेदर्शन २६ पर्व्वतपै चढ़ना हनुमानजीका समुद्रनांघना समुद्र

के बचनसे मैनाक पर्व्वतके दर्शन २७राक्षसीको भयदेना छायापकड़ने-वालेके दर्शन सिंहिकाका बध लंकामल देखाना २८ रात्रिमें लंकाप्रवेश करना असहाय करनेका बिचार मद्यपान भूमि मेंजाना रावणकी स्त्रियों में हनुमानजी का गमन २९ रावण को देखना पुष्पक विमान देखना अशोक वाटिकामें जानकीजी के दर्शन ३० चिह्नके लिये सीताजी को श्रीरामचंद्रजीकी मुदरी देना व सीताजीके संग महाबीरजीकावार्त्तालाप राक्षसियोंका दर्शन त्रिजटाका स्वप्नदेखना ३१ हनुमानजी को सीताजी का मणिदेना पुष्प वाटिका के वृक्ष तोड़ना राक्षसियों का महाबीर के भयसे भागना रावणके भटोंका मानमर्द्दन ३२ ॥

चौ० पवनतनय बन्धन जिमि भयऊ। लङ्का दहनगर्ज्जनो कह्यऊ॥ पुनि जलनिधिहि कूदि हनुमाना। जिमि आयहु सो कीन बखाना१ ॥ जिमि बानर सब हरे मधूका। सो सब कह्यहु तनिक नहिं चूका ३३॥ राघव समुझावन मणि दाना। सङ्गम जलधि सेतु बँधवाना २।३४॥ जिमि उतरे जलनिधि रघुराजू। लङ्का घेरी सहित समाजू॥ रावण अनुज विभीषण आयहु। दशमुख मरण उपाय बतायहु३।३५॥ कुम्भ-कर्णबध अरु घननादू। रावण मरन नराद विषादू॥ राम जानकी भेंट पुनीता। जिमि भै कही मुनीश विनीता ४।३६॥ जिमि लङ्कापति भयहु विभीषण। पुष्पक दर्शन सकल अदूषण॥ पुनि साकेत गमन जिमि कीना। भरत समागम भयहु प्रवीना ५।३७॥ श्रीरामाभिषेक जिमि भयऊ। जिमि सब सैन्य विसर्ज्जन कियऊ॥ पुनि जिमिरामप्रजा सब पाली। जनक सुतहि त्याग्यहु यश शाली ६।३८॥ द्विजसुतदान अश्व-मेधादी। वसुधा तलमा कीन अनादी॥ सो सब उत्तरकाण्डहि माहीं। बाल्मीकि बरण्यो सक नाहीं७।३९॥ इमि संक्षेप रीतिसो गावा। जिमि मुनीश सो सकल बतावा॥ सुनत सुनावत सुनि मन भावत। रामकृपा सों सो सब पावत ८।४०॥

इत्यार्षे रामायणेबाल्मीकीये आदिकाव्येबालकांडे तृतीयस्सर्गः॥३॥

जब श्रीरामचंद्रजी लङ्कासे आय राज्य करनेलगे तभी अपने आश्रम पै निवास कर भगवान् बाल्मीकिजी ने सम्पूर्ण रामचरित नारदजी के कहने व ब्रह्माजीके आशीर्व्वादसे विचित्र पद सहित बनाया क्योंकि

आत्मज्ञानीथे नहीं तो ऐसा सुन्दर ग्रन्थ दूषण रहित न बनता । १ ।
चौ० चौबिस सहस पद्य यहि माहीं । बाल्मीकि बरणयो सकनाहीं ॥ सर्ग पञ्चशत अरु छाकांण्डा । कीन काव्य करगाड़ यहु भाण्डा १ ॥ उत्तरकाण्ड बनायहु पीछे । ललित कथा करि बर मतितीछे ॥ सकल काण्ड सब सर्ग सुहाये । सकल पद्य मुनिवरके गाये २ । २ ॥ बालकाण्ड सतहत्तरि सर्गा । एक शत उनइस अवध निसर्गा ॥ पचहत्तरि अरण्य महँ नीके । सरसठि किष्किन्धा महँ ठीके ३ ॥ सुन्दर में अरसठि अति पावन । एकशत एकतिस युद्ध बतावन ॥ एकशत दश उत्तर महँ सर्गा । छसे सतालिस सकल सुवर्गा ४ ॥
जब सब काव्य महाप्राज्ञ बाल्मीकि जी ने सहित उत्तरकाण्ड बनाया तो चिन्तनाकी कि इस इतने बड़े ग्रन्थको कौन पढ़ै सुनैगा ३ महाज्ञानी मुनिराज इस भांति चिन्तना करही रहेथे कि मुनि वेष धारण किये कुशी लव दोनों भाइयों ने मुनिके चरण गहे ४ ये कुशी लव परम धर्म्मज्ञ यशस्वी ज्ञान विद्या में निपुण व महाराज रामचन्द्रजीके पुत्रथे जो कि बाल्मीकिजी के आश्रम पे रहतेथे इनको मुनिराजने देखा ५ व जाना कि ये बड़े बुद्धिमान वेदमें परिनिष्ठितहैं इसलिये वेदके अर्थ को श्लोकों में प्रकट करने के लिये दोनों जनोंको ग्रहण कराया ६ थोड़ाही ग्रन्थ नहीं पढ़ाया बरन सम्पूर्ण राम व सीताके चरित्र युक्त रावण बध सहित रामायणबनाय मुनिराजने पढ़ाया ७ वह रामायण पढ़ने व गानेमें मधुर द्रुतमध्य विलम्बित येजो तीन प्रमाण गानविद्यामें हैं तिनके सहित निषाद ऋषभ गान्धार षड्ज मध्यम धैवत व पञ्चम इन ७ स्वरों से बँधाहुआ वीणा वेणु मृदङ्गादिकोंको बजाय२ गानेके योग्य ८ शृङ्गारकरुणा हास्य रौद्र भयानक वीर वीभत्स अद्भुत शान्त इन नवरसों समेत बनाय पढ़ाया इसमें राम सीताका विहार शृङ्गार रसहै राजा दशरथादिकोंका बिलाप स्नेहादि करुणारस शूर्प्पणख्यादिका विरूप करण हास्यरस लक्ष्मण हनुमानादिके कर्म्म वीर रसकेहैं रावण कुम्भकर्णादिकोंके कर्म्म रौद्र रसको बतातेहैं मारीचादिकोंके वृत्तान्तोंस भयानक विराध कवन्धादिकोंके वृत्तान्तसे वीभत्स श्रीराम रावणादिकोंके युद्धसे अद्भुतरस सुननेमें सुखद होनेसे शान्तरस है ऐसे काव्य को दोनों जन

गानेलगे ६ क्योंकि वेदोनोंभाई गानविद्यामें बड़े निपुणसबतालस्वर आ-दिमें महापण्डित मानोंदोनों अश्विनीकुमारकी मूर्त्तिहींहैं १० सब रूप लक्षणसम्पन्न मधुर स्वरभाषी रामचन्द्रजीके देहसेमानों उनकी मूर्त्तिही हू अलग स्थितहैं ऐसे दोनों गानेलगे ११ कहीं कुछ छोड़ानहीं सब २४००० श्लोक उत्तम धर्म्माख्यान एक ओर से कण्ठ कर लियाथा किसी तरह का दोष उनमें नथा जिससे गाने में कुछ अन्तर परे १२ वे दोनों महाभाग्यवाले महात्मा सब लक्षणयुक्त इसबाल्मीकीय रामायण काव्यको ऋषिलोगों द्विजलोगों व साधुओं के समागममें सावधान हो गातेथे १३ एक समय बहुतसे महात्मा ऋषिलोग रामचन्द्रजीके अश्व-मेध यज्ञमें एकत्र हुयेथे तब बीच सभामें बैठके इसकाव्यको दोनों भाइयों ने अति मनोरम ताल स्वरसे गाया १४ तिसे सुनि सब मुनि लोगों के अङ्ग गद्गदा उठे आंशु बहने लगे इस अद्भुत नवीन काव्य के सुनने से अतीव विस्मितहो साधु २ कहने लगे १५ व धर्म्म वत्सल सब मुनि लोग प्रसन्न मनहो गाते हुये कुशी लवकी प्रशंसा करने लगे १६ कि अहो इस गानकी मधुरता तिससेभी अधिक श्लोकोंकी माधुरी जिसमें पदोंके विरामस्थानमानों अर्थको प्रत्यक्ष कियेदेतेहैं १७ जब मुनिलोगोंने ऐसी प्रशंसाकी तो दोनोंभाई षड्ज मध्यमादि स्वरोंसे अतिमाधुरी बाणी में गाया कि सुनतेही सबकेमन हरलिये १८ किजिससे सिवाय वाह२ के कुछ और नहींहोताथा जैसे२ बड़ाई होतीथी तैसे२ और विशेष गान-विद्याके भावोंके साथ गातेथे १९ तब प्रसन्नहोके किसी मुनिने अपना कलश दिया किसीने प्रीतिपूर्व्वक अपना वल्कल २० किसीने मृगचर्म्म किसीने यज्ञोपवीत किसीने कमण्डलु किसी महामुनि ने मौंजी मेखला २१ किसीने वृसीनाम मुनियों का आसन किसीने कोपीन किसीनेपर-मानन्दित हो फरसा दिया २२ किसीने गेरूका रँगाहुआ वस्त्र किसीने चीर किसीने जटा बांधनेके लिये सूत्र किसीने काठकी रस्सी २३ किसी ऋषिने यज्ञकरने का पात्र किसीने यज्ञ करनेका काष्ठ किसीनेगूलर की वृसी किसी मुनिने केवल स्वस्तिहो यही कहा २४ किसी २ ने कहा आयुष बढ़े तिसके पीछे सब सत्यवादी मुनियों ने वरदान दिया २५ कुशी लव को ऐसा वरदान दे काव्यकी प्रशंसा करने लगे कि वा-

ल्मीकि मुनिने यह आख्यान अतीव आश्चर्य्यदायक बनाया है इससे कवियों को अब कविता करने की युक्ति आजायगी फिर इसके मध्यमें कोई भी दोष नहीं यथा क्रम ग्रन्थ समाप्त होगया है २६ फिर जैसा यह अद्भुत काव्य है वैसाही सब गीतों में अतीव पण्डित इन दोनोंभाइयोंने गाया भी कैसी मधुरता से है व यह सुनतेही मनको हरलेता है सुननेवालों व पढ़नेवालों की आयुष बढ़ाता व पुष्टता उत्पन्न कराता है २७ इसभांति मुनिलोग प्रशंसा करही रहेथे कि राजमार्ग्गमें गातेहुये ये दोनों भाई निकले व श्रीरामचन्द्रजीने देखा २८ और पूजा करने के योग्य दोनों भाइयों को देख अपने मंदिर में लाय यथोचित पूजाकी २९ फिर अपने भाइयों व मंत्रियों के साथ सुखपूर्व्वक कांचन के सिंहासन पैबैठे ३० और इन दोनों भाइयों को रूप सम्पन्न व सुशिक्षित देख लक्ष्मण शत्रुघ्न व भरतजीसे बोले ३१ कि इन देव समानतेजस्वी गायकों के गायेहुये इस इतिहास को सुनो इसमें नानाप्रकार के विचित्र अर्थ सहित पदहैं इतना भाइयों से कह इन दोनों भाइयों को अच्छी रीति से गानेकी आज्ञादी ३२ ॥

चौ० तब कुश लव दोउ राजकुमारा । मधुर वचन सों राग उचारा ॥ श्रवण सुखद स्वेच्छा अनुसारा । वीणास्वरसम,नअतिप्यारा १ । ३३॥ कुश लव गान सुनत रघुनाथा । मन प्रसन्न सब अंग सनाथा ॥ हृदय प्रहर्षित श्रवण सुखारी । सभामांझ सब मुदित निहारी २ ॥ इमि जब गानभलीबिधि सोहा । सकल सभाकर सुनि मन मोहा ३४॥ नृप लक्ष्मण युत ये मुनि दोऊ । नाम कुशी लव तपस्वी जोऊ ३ ॥ जो चरित्र गावत सो श्रीकर । म्वहि अतिप्रिय जाकर प्रभाव वर ॥ सुनहु तात सो चरित सुहावन । सबप्रकार हमका मनभावन ४ । ३५ ॥ तब रघुवर प्रेरित दोउ भाई । मार्ग्गभिधान गान सरसाई ॥ सभा मध्य महँ श्रीरघुराजा । भषित गानकीनगुण भ्राजा ५ । ३६ ॥

इत्यार्षे रामायणे बाल्मीकीये बालकाण्डे चतुर्थस्सर्गः ४ ॥

राजा वैवस्वत मनुआदि महा जयशाली राजाओं के समय से यह सब पृथिवी अपूर्व्व चली आती है १ जिसबंश में सगर नाम राजा हुये जिनके ६०००० पुत्रथे जिन्होंने समुद्र खोदा इसीसे इसका

सागरनाम हुआ फिर इसीवंशमें राजा भगीरथ हुये जो इस पृथिवी के पवित्र करने के लिये गंगाजी को लाये २ तिन्हीं महात्मा इक्ष्वाकु आदि राजाओं के बंशमें महा अद्भुत रामायण की कथा उत्पन्न हुई यहबंश ऐसाही उत्तम है ३ तिस रामायणी कथाको आदिसे ले धर्म्म कर्म्म सहित कहते हैं इसके सब पद सुननेवाले व निन्दा रहित हैं ४ एक अति धन धान्य सहित परमानन्दित सब समृद्धि युक्त सरयूनदीके तटपै अति महान् कोसलनाम देशहै ५ उसमें मनुष्योंके राजा स्वायम्भुवजी ने अयोध्या नाम पुरी बसाई जोकि तीनों लोकोंमें प्रसिद्धहै ६ व जो १२ योजनकी लम्बी और तीन योजन की चौड़ी है व जिसमें अनेक राजमार्ग्ग हैं ७ बड़ी २ सड़कें चारोंओर से शोभित हैं जिनपर सब प्रकार से जलका छिरकाव होरहाहै व पुष्पमाला ठौर २ पर्राहैं ८ तिसपुरीमें बड़े राज्य के बढ़ानेवाले महाराज दसरथजी बसे जैसे कि स्वर्ग्गलोक में इन्द्र बसते हैं ९ जिसमें कि केवाँरा तोरणलगे व बड़ी २ बाजारेंलगीहुई हैं सबप्रकार के यन्त्र व औषध व आयुध धरेहुये व सब थवई लोगोंकी ही लगाई हुई मिट्टी सर्व्वत्र हैं १० पौराणिक व सूत मागध बंदीजन जहां देखो अपना २ काम कररहे हैं सकल शोभा होरही है फिर चमक ऐसी है कि जिसका बखान नहीं होसक्ता ऊंचे २ अटारों पर ध्वजा फहरारहीहैं पुरकी रक्षाके लिये खावां के किनारे २ सैकरों तोपै लगीहैं ११ स्त्रियोंके नाटक कला समुदाय से संय्युक्त नानाप्रकार की फुलवाड़ी और आमों के वृक्ष समेत बड़ाभारी घेरा चारों ओर विद्यमान १२ कोटके किनारे किनारे बड़ा गहिरा खावां विद्यमान शत्रु लोग जिसमें किसीउपायसे न आयसकें घोड़े हाथी गाय बैल ऊंट खंचर ठौर २ बँधे हुये हैं १३ सेनापति मन्त्री महाजनादि सब चारोंओर से विराजमान नानाप्रकारके देशोंके व्यापारी व्यापार कररहे हैं १४ रत्नों के धवरहर मानों पर्व्वताकार देखपरतेहैं स्त्रियोंके क्रीडा करनेके सैकरों स्थान विद्यमानहैं मानों दूसरी इन्द्रकी अमरावती पुरीहै १५ सब पुरी के ऊपर स्वनहुला पानीफिराहै जिससे चित्र विचित्र सबकहीं देखपरता है स्त्रियोंके समूह भरेहैं सब रत्न जड़ित विमान ठौर २ एकत्र होरहे हैं १६ ऐसी घनी बसतीहै कि राजमार्गोंके सिवाय अन्य रास्ता नहीं देख-

परते सबपुरी बराबर भूमिपर सुखपूर्व्वक बसीहै जड़हनके चावलोंके जहां देखो ढेरलगे हैं ऊखके रसके समान मीठापानी सब नगरके कूपों में भराहै १७ नगारे मृदङ्ग वीणा शङ्खादि बाजे ठौर २ बजरहेहैं पृथिवीतल में ऐसी उत्तम नगरीहै कि दूसरी उसकी समता नहीं रखसक्ती १८ मानों तपस्या से सिद्धलोग स्वर्गको प्राप्त हुयेहैं उनके सैकरों स्थान बने हैं सहस्त्रों मुनिलोगोंकेगृह विद्यमान कोटिन मनुष्य बसे हुये १९ जिन वन्य पशुओंको बाणोंसे राजा राजमन्त्र्यादि नहीं मारसक्ते उनको शब्दवेधी शिकार खेलके मारतेहैं २० ॥

चौ० सिंह व्याघ्र सूकर मतवाले। जे बन फिरत हरत पशु जाले॥ तिन मारण हितवीर अनेका। अस्त्र शस्त्र धारत सविवेका १। २१॥ तादृश कोटि महारथ पूरित। पुरी बसत दशरथ धन भूरित २२ ॥ साग्निक गुणी षडङ्ग पाठरत। सत्य वचन ऋषि द्विजगण हरिनत।२॥ निवसत शत सहस्र द्विजराजा। जहँ देखहु तहँ विप्र समाजा॥ सकल वेदरत अतिहि पुनीता। जपतप निरत जगतके मीता ३। २३॥

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे पञ्चमस्सर्गः ॥५॥

तिस अयोध्यापुरीमें वेदके जाननेवाले सर्व्ववस्तुसंग्रहकारी, दूरदर्शी महातेजस्वी अयोध्यानिवासी व सकलदेशवासी जनोंके प्यारे १ इक्ष्वाकुक वंशमें महारथी अनेक यज्ञ करनेवाले सकल धर्ममें तत्पर सबजनों को अपने वशीभूत रखनेवाले महर्षियोंके समान तेजस्वी तीनोंलोकोंमें प्रसिद्ध २ अति बलवान् शत्रुरहित सबके मित्र परम जितेन्द्रिय नानाप्रकार के धन प्रताप ऐश्वर्यके मारे इन्द्र व कुवेरके समान ३ महाराजाधिराज दशरथ विराजते हुये राजा मनुके समान लोककी रक्षा करते हुये बसतेथे ४ तिसपुरीकी पालना करतेरहे जैसे कि अमरावती पुरीकी रक्षा इन्द्र करते हैं महाराज दशरथ अर्त्थ धर्म्म काम तीनोंकी सेवा समान करतेहुये पालतेथे व परम सत्यप्रतिज्ञ थे ५ तिस अतिश्रेष्ठ अयोध्यापुरी में सर्व जन मारे सुखके हृष्टपुष्ट धर्म्मात्मा बहुत जानने सुननेवाले, धनधान्यादि से सन्तुष्ट अपने २ धनकी अभिलाषा करनेवाले दूसरे के धनकी न इच्छा करनेवाले सत्यवादी मनुष्य बसते ६ यहां के निवासी कोई भी अल्प धनधान्य नहीं रखते वरन अपने २ परिवार के योग्य गाय बैल घोड़े

धनधान्यादि सबके यहां विद्यमान रहते ७ कोई भी पुरुष कामी नहीं बसता न ऐसा कि जो अपना को व धर्म्मकार्य्यको पुत्र स्त्री पिता माता आदिकोमारे लोभसे पीड़ादेवे न कोई मूर्खहीरहता न नास्तिक ८ किन्तु सब स्त्रीपुरुष धर्म्मशील अपनी २ इन्द्रिय अपने २ वश में रखनेवाले अपने आचरण और स्वभाव से सदा प्रसन्नचित्त मानों सबके सबपाप- रहित ऋषिगणहैं ६ व न कोई ऐसा था जो कुण्डल मुकुट पुष्पमालादि न धारण किये हो व जिसको थोड़ाही भोगविलास मिलता हो जो अच्छीभांति तेल फुलेल आदि न लगायेहो न ऐसाही चन्दनादि अनु- लेपन जिसको न मिलते हों १० न कोई ऐसाही बसता जो सुन्दर भोजन करताहो जो दानी न हो जो माला बजुल्ला कण्ठा कंकणादि न पहिनेहो व जो अपने अन्तःकरण को जीते न हो ११ न कोई ऐसाही बसता जो प्रतिदिन अग्निहोत्र बलिवैश्यदेवादि न करता हो न यज्ञ करता हो शुद्धस्वभाववाले और चोर भी न सदाचारहीन न वर्णसंकर १२ किन्तु सबलोग अपने २ कर्म्म में तत्पर ब्राह्मणलोग सबके सब जितेन्द्रिय दान अध्ययन करनेवाले दान कोईभी नहींलेते और असदान की ओर तो दृष्टिही किसी की नहीं जाती १३ वेदशास्त्र ब्राह्मण देवता की निन्दा करनेवाला भी कोई अयोध्या में नहीं बसताथा न झूठा न थोड़ा पढ़ने जाननेवाला न निन्द्य न असमर्थ न मूर्ख १४ न ऐसा जो षडङ्गसहित वेद न पढ़ेहो जो एकादश्यादि व्रत न रहताहो न ऐसा जिसके १००० मुद्रासे भी कम धन हो न दुःखी न व्याकुलचित्त न कोई रोगी १५ चाहे स्त्री हो वा पुरुष कोई ऐसा नहीं था जो शोभा- हीन हो वा जो कुरूपवाला हो न कोई ऐसाही राजा दशरथ के समय में अयोध्या में देख परताथा जो कि राजाका भक्त न हो १६ ब्राह्मणादि तीन वर्णों में सब के सब देवता अतिथि आदि की पूजा करते थे सबके सब नेकी माननेवाले अपने कौल के पूरा करनेवाले शूरवीर थे १७ सब मनुष्य धर्म्मज्ञ बड़ी २ आयुषवाले सत्यवक्ता पुत्र पौत्र स्त्री संयुक्त उस समय बसते थे १८ क्षत्रियलोग ब्राह्मणों की आज्ञा से च- लते वैश्य क्षत्रियों के अनुगामी रहते शूद्रलोग तीनों वर्णोंकी सेवाकरते जोकि उनका धर्म्म है १६ जैसे आगे मनुष्यों में इन्द्ररूप बुद्धिमान्

राजा मनु से यह अयोध्यापुरी रक्षित थी वैसेही तिन इक्ष्वाकु बंशियों के नाथ महाराज दशरथ से भलीभांति रक्षितहुई २० जैसे सिंहव्याघ्रादिकोंसे पर्वतकी कन्दरा पूर्ण रहतीहै तैसेही अग्निसमान तेजस्वी सरलचित शत्रुबल को न सहनेवाले व सकल शस्त्रास्त्र विद्याओं में निपुण योधों से उस समय पृथिवी पूर्णथी २१ व काम्बोजदेशीय काबुलदेशीय बनायुजदेशजात सिन्धुनदतटस्थ उच्चैश्श्रवा के समान उत्तम घोड़ों से मही पूर्ण होगई २२ ॥

चौ० विन्ध्याचल हिमगिरि पर जाये । मत्त मदान्वित अतिबल पाये ॥ सकल मतंग भूधराकारा । तिनसोंपूर्ण महीतलसारा १।२३॥ ऐरावत कुलके बहु नागा । महापद्म कुल अनयुत रागा ॥ अञ्जनकुलि वामनकरि कुल नाता । पूरित महि इन करिके बाता २।२४॥ भद्र मन्द्र मृगजाति करीशा । भिन्न २ राजत गुण ईशा ॥ भद्र मन्द्र मृग इन गुण योगू । करिवर रहत लहत शुभ भोगू ३ ॥ भद्र मन्द्र गुणके जो नागा । भद्रबहुरि मृग जाति विभागा ॥ पुनिमृग मन्द्र जाति करि यूहा । नित्य मत्त सब दन्ति समूहा ४ ॥ अचल समान नाग सब ठीके । इनसों पूर्ण महीविधि नीके २५ ॥ नाम अयोध्या सार्थक तासू । रिपुरण हेतुजात नहिं जासू ५ ॥ योजन तीन पुरी सो राजत । योजन द्वय तामें अति साजत ॥ जहँ दशरथ नृप बसि जग पालत । अरु नित सकल बैरिकुल घालत ६ । २६ ॥ महातेज अरु अतिहि महाना । राजा दशरथ शत सम माना ॥ दमित सकल रिपु सो पुरपाला । जिमि विधु उडुपन करत सिहाला ७ । २७ ॥

हरि गीतिका ॥

दृढ़ तोरण दृढ़ अर्गला सचधाम भूषित सो पुरी ॥
जहँ सदन चित्र विचित्र राजत सकल मंगल योगुरी ॥
नर सहस संकुल विपुल धनयुत शक्रसम महि पालहू ॥
त्यहि करतशासनसहितदासन बैरिउरनितशालहू ८ । २८ ॥
इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआदिकाव्येबालकाण्डेषष्ठस्सर्गः ६ ॥

तिस इक्ष्वाकुबंशी महाराजाधिराज महात्मा दशरथजी के सेवक अष्ट के सब मन्त्र जाननेवाले राजाके मनकी बात समझनेहारे व नित्य

राजा के प्रियकार्य में तत्पर थे १ व मन्त्री अति यशस्वी महाराज के ८ थे जो कि अति पवित्र और नित्य राजकार्य में लगे हुये थे २ वे धृष्टि जयन्त विजय सिद्धार्थ अर्थसाधक अशोक मन्त्रपाल व सुमन्त्र इन नामोंसे प्रसिद्ध थे इनमें सबसे महान् सुमन्त्रजीथे ३ व ऋषिश्रेष्ठ वसिष्ठ बामदेव दो यज्ञ कराने वाले थे व मंत्री भी थे ४ इनके सिवाय सुयज्ञ जाबालि काश्यप गौतम मार्कण्डेय कात्यायन ये व्यवहारद्रष्टा मंत्री थे ५ इन ब्रह्मर्षियों के साथ वसिष्ठ बामदेव दोनों यज्ञ कराया करते तथा मन्त्री का भी काम देते रहे ये सब परम्परा से चले आते हैं सबके सब विद्याविनय सम्पन्न अनुचित कार्य्य करने में लज्जावान् नीतिशास्त्र में कुशल अकरणीय काम करने से दूर रहने वाले ६ लक्ष्मीवान् महा-बुद्धि नीतिशास्त्रज्ञाता अति पराक्रमी कीर्तिकारी राजकार्य्यमें सावधान राजाके वचनों के करनेवाले ७ तेज यश क्षमा सब विद्यमान् अहंकार-रहित वादी वा क्रोध काम अर्थ के लिये जो कभी झूंठ न कहैं ८ व तिन मन्त्रियों को ऐसी कोई वस्तु न थी जो विदित न हो न उनकेकोई अपना बिराना था जो कुछ करते वा करने के योग्य समझते सबदूतों की द्वारा अच्छी तरह जानबूझके काम करते थे ९ फिर सब व्यवहार में कुशल सुहृदता में परीक्षा किये हुये व कदाचित् पुत्र भी अनुचित कर्म्म करै तो दण्डके समय पर उचितदण्ड अवश्य देते १० खजानाइ-कट्ठा करने में बड़े निपुण चतुरंगिनी सेनाके वश करने में चतुर व चाहे शत्रु भी हो अपराध न करै तो उसको कभी न मारेंगे ११ सब प्रकार से वीर शत्रुओं के जीतने में नित्य उत्साह युक्त राजनीतिशास्त्रमें नि-पुण इसीसे जो पवित्रचित्त लोग राज्य में बसते हैं वे उनकी रक्षाकरते १२ व ब्राह्मण क्षत्रियों को बिना अपराध कभी कुछनहीं कहते कोश को पूरित करते पुरुष को बलअबल देखजो बड़ा अपराध करता उसको बड़ा दण्ड देते जो थोड़ा अपराध करता उसको थोड़ाही दण्डदेते १३ जिससे कि सब मन्त्रीलोग पवित्र रहते व सबकी सलाह एकहीरहती इससे अयोध्या के राज्य व अयोध्या में कहीं झूठा मनुष्य नहीं रहता १४ न कोई दुष्ट उस राज्यमें पराई स्त्री में प्रीति करता इसी से दशरथ महाराज का राज्य व नगर सब प्रशान्त रहता १५ जितने मन्त्रीथे

सबके सब सुन्दर वस्त्र पहिनते सुन्दर ही सब वेष बनाये रहते व सदा-चारी रहते राजा का हितही सदा करते सदा न्यायशास्त्रही के अनुसार काम करते १६ व सबके सब गुरु लोगों से गुण सीख २ ग्रहण करते न कि अपने मनमाने गुण ग्रहण करें व सब पराक्रम करनेमें प्रसिद्ध थे व उनकी बुद्धि ऐसी थी जिससे विदेश में टिके हुये लोगों के भी गुणदोष जान लेते थे १७ फिर सबके सब जाननेहारे गुणवान् थे गुणहीन कोई भी न थे क्योंकि जब मन्त्री वा राजा गुणवान् न हुआ तो गुणियों के गुण नहीं जानता न अगुणियों के अगुण इसमें राज्य प्रबन्ध में बड़ी हानि होती है व सब मिलाप और बिगार करने में चतुर थे जो बिगार के योग्य होता उससे बिगार जो बनाव के योग्य होता उससे बनाव रखते सत्वरजस्तमोगुण सब समय २ पर धारण करते जब कभी महात्मा अच्छे लोगों के पालन का समय होता तो सत्वगुणी रहते जब भोगविलासादि करने का काम परता तो राजसी रहते जब दुष्टों को कभी दण्ड देना होता तो तमोगुण धारण करते क्योंकि इन २ समयों में बिना इन २ गुणों के धारण किये चलनही नहींचलता १८ व सबके सब जो सम्मति राजकाज के लिये करते उसको गुप्त रखते सूक्ष्म बिचार में सब तत्पर रहते न्यायशास्त्र की बातें विशेष भांति से जानते सदा सबसे प्रियही वचन बोलते १६ ऐसे सकल गुणखानि मन्त्रियों के साथ महाराज दशरथ पृथिवी पालन करतेथे २०॥

चौ० ॥ चार दृष्टि देखत सब लोगा । पालत प्रजा धर्म्म के योगा ॥
प्रजा धर्म्म राखत सब भांती । नहि अधर्म्म की गिरा पोसाती १ ।२१ ॥
सत्यसन्ध विश्रुत त्रैलोका । दानी दीनन करत विशोका ॥ पुरुषसिंह
दशरथ नृप धरणी । इमि पाल्यहु वरणी जिमि करणी २ ।२२ ॥ निजसों
अधिक न आप समाना । देखहु शत्रु भूप बलवाना ॥ मित्रवान नत सब
सामन्ता । निज प्रताप कण्टक किय अन्ता ३ ।२३ ॥ पाल्यहु जग भूपाल
महाना । जिमि सुरपति दिवपालन जाना २४ ॥ हितकारी तेजोमय सम-
रथ । मन्त्रिन सहित भूपमणि दशरथ ४ ॥ सदा मन्त्र हित अरु अनुरागी ।
कुशल सकल कृति लोभ विरागी ॥ इन मन्त्रिन सँग सब जगपाला ।
जिमि किरणन रवि करत निहाला ५ । २५ ॥

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे सप्तमस्सर्गः ॥ ७ ॥

तिस ऐसे प्रभावी प्रतापी धर्म्मज्ञ महात्मा राजा दशरथ के सुतके अर्थ तपस्या करने परभी वंशकारक पुत्र न हुआ १ तब महात्मा राजा चिन्तना करनेलगे कि पुत्र के अर्थ हम अश्वमेध यज्ञ क्यों न करें २ महा बुद्धिमान् महाराज दशरथ ने जब बनाय निश्चय करलिया कि अवश्य पुत्रके लिये यज्ञ करना चाहिये तो सब परमज्ञानी अपने मंत्रियों को बुलाया ३ बुलायकर सब मन्त्रियों में श्रेष्ठ सुमंत्र नाम मन्त्री से कहा कि सहित पुरोहित हमारे सबगुरुओंको शीघ्रलावो ४ तब अति शीघ्रगामी सुमन्त्रजी तुरन्त जाय सब वेदपारग वसिष्ठ वामदेवादिकोंको बुलालाये ५ इनके विशेष सुयज्ञ जावालि काश्यप आदि और भी जो वेदपाठी द्विजोत्तम थे सब को लाये ६ तिन सब महात्माओं की पूजाकर धर्म्मात्मा महाराज दशरथ धर्म्मार्थ सहित यह वचन बोले ७ कि यद्यपि हमको राज्य के सब सुख हैं पर पुत्र न होने से ऐसा दुःख है कि ये सब सुख कुछ भी नहीं जान परते इसलिये हमारी इच्छा है कि हम पुत्रके लिये अश्वमेध यज्ञ करें ८ सो इस विषय में आप लोगों से पूछते हैं कि हम शास्त्रके अनुसारही यज्ञ किया चाहते हैं इस काम को कैसे पावेंगे आप लोग भी अपनी बुद्धि से बिचार लें ९ यह राजाकी वाणी सुन वसिष्ठादि सब ब्राह्मण लोगों ने बहुत अच्छा २ कह राजा की वाणी की प्रशंसा की १० सब राजा दशरथजी से बोले कि बहुत अच्छा सब यज्ञ की सामग्री मँगाई जावे और घोड़ा छोड़ा जावे व सरयू के उत्तर किनारे पर यज्ञभूमि बनाई जावे ११ हे राजन् जिससे तुम्हारी पुत्रके अर्थ यह धार्म्मिकी बुद्धि है इससे सब प्रकार से वांछित पुत्र आप पावेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं १२ ब्राह्मणों की ऐसी वाणी सुन राजा बहुत संतुष्ट हुये व हर्ष से व्याकुल हो मन्त्रियों से बोले १३ कि गुरु लोग जो २ कहें सब सामग्री यज्ञ के लिये इकट्ठा करो व अच्छा समर्थ घोड़ा ४०० रक्षकों के साथ छोड़ा जावे उसके साथ ऋत्विक् लोग भी जावें क्योंकि घोड़े के पद २ पै होम करना परता है १४ और सरयू नदी के उत्तरकूलपै जहां मुनिलोग बतावें यज्ञभूमि बनाई जावे यज्ञविघ्न निवारण के लिये सब उपाय किये जावें सब कर्म्म शास्त्रानु-

सारही किये जायँ १५ इस अश्वमेध यज्ञ को सब राजालोग कर सक्ते हैं पर जो कोई अनर्थकारक विघ्न न हो तो यह यज्ञराज सिद्ध होता है १६ क्योंकि इसके जानने वाले ब्रह्मराक्षस लोग यज्ञमें छिद्र ढूंढ़ाकरते हैं। कि कोई बात इसमें शास्त्रविधि से हीन तो नहीं हुई इसीसे विधि-हीन यज्ञ का कर्त्ता तुरन्त नाश होजाता १७ तिससे यह हमारा यज्ञ विधिपूर्वक समाप्त हो कुछ विधिहीन न होने पावे तुमलोग चाहोगे तौ सब विधि सहित ही होगा क्योंकि सब कुछ करने में समर्थ हौ १८ राजा के ऐसे वचन सुन यह कह कि हाँ महाराज जो २ आप कहते हैं सब ठीक है हम लोग सब करतेहैं ॥ १९ ॥

चौ० तथा सकल धर्म्मज्ञ विप्रगन। दै आशिष प्रसन्न किय नृप मन ॥ आज्ञा लै सवगे निज गेहू। मनमहँ सरहत भूपसनेहू १।२०॥ द्विजन विदाकरि मंत्रिन पाहीं। बोल्यहु नृपगुनि निजमन माहीं॥ जिमि विप्रन विधिकहि समझाया। तिमियहिक्रतुकर करहु बनावा २।२१॥ इमि सचिवन सों कहि नृपराजू। गे निज मन्दिर माहिँसुसाजू २२॥ परमप्रिय सब नारिनि पाहीं। बोल्यहु भूप समुझि मन माहीं ३॥ तुम सब नियम धर्म्म सों रहहू। सुतहित यज्ञकरत सुख लहहू २३॥ सुनि अति कान्त वचन नृप केरे। भे प्रसन्न मन रानिन्ह केरे ४॥ मुख अर-विन्द सुशोभित कैसे। हिमगत भये कमल गण जैसे॥ मन महँ कहन लगीं सब येहू। भूप मनोरथ भलो अहेहू ५।२४॥

इत्यार्षेरामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डेऽष्टमस्सर्ग्गः॥ ८॥

सुमन्त्रजी ने राजाके वचन सुन एकान्त में जाय भूपालमणि से कहा कि इस अश्वमेध यज्ञ के विषय में वसिष्ठादि ब्राह्मणों के कहने से हमने यह इतिहास सुना है १ कि हे राजन् आपके पुत्र होने के विषय में ऋषियों के निकट आय भगवान् सनत्कुमारजी ने पूर्वही यह कथा कहीहै २ कि काश्यपऋषिके पुत्र जो विभाण्डक मुनिहैं तिनके पुत्र ऋष्यशृङ्ग नाम होंगे ३ सो वे मुनिवर नित्य अपने पिता की सेवाकरते हुये बनमें सदाबसेंगे और कुछ संसारी वासना न जानेंगे ४ हे राजन् लोकमें प्रसिद्ध ब्राह्मणों के कहेहुये दो ब्रह्मचर्य्य हैं एक मेख-ला मृगचर्म्मादि धारणकर नियम से रहना दूसरा ऋतुकाल में प्रथम

की ४ रातें छोड़ १६ रात्रि पर्य्यन्त छठीं आठवीं दशवीं आदि युग्मरात्रियों में अपनी स्त्री के संग भोग करना ये दोनों ब्रह्मचर्य्य महात्मा ऋष्यशृङ्ग के होंगे ५ सो ऋष्यशृङ्ग अग्नि और यशस्वी अपने पिता की सेवा करते रहेंगे कि बहुतकाल बीत जायगा ६ उसीसमयमें महाप्रतापी रोमपाद नामराजा अंगदेश में होंगे ७ वे कुछ शास्त्र की आज्ञा को ऐसा उल्लंघन करेंगे कि उनके राज्यमें अति दारुण व घोर अनावृष्टि बहुत दिनों तक होगी जिसमें उनके राज्यमें बसनेवाली प्रजाको बड़ा दुखःहोगा ८ जब ऐसी अनावृष्टि होगी तो राजा दुःखित हो बड़े २ वेदपारग पुराने ब्राह्मणोंको बुलाय यह पूंछेंगे ९ कि हे ब्राह्मण लोगो आप लोग सब जनोंके चरित जानते हैं इसलिये जिन हमारे कर्म्मों से हमारे राज्यमें वर्षा नहींहोती उनको भी अवश्य जानते हैं फिर जिसरीतिसे उन कर्म्मोंका प्रायश्चित्तहो सो कृपापूर्व्वक बताइये १० जब इसरीतिसे राजा सब ब्राह्मणश्रेष्ठों से पूंछेगा तो वे वेदपारग ब्राह्मण राजासे यह कहेंगे ११ कि हे राजन् विभाण्डक मुनिके पुत्रको सब उपायोंसे यहां लाइये १२ और लायके आदर सत्कारकर विधिपूर्व्वक अपनी शान्तानाम कन्यादे दीजिये १३ तिनब्राह्मणोंके वचन सुन राजारोमपाद बड़ी चिन्ताकोप्राप्त होंगे कि महाप्रतापी ऋष्यशृङ्ग किस उपायसे यहां आयसक्तेहैं १४ फिर राजाअपने मनमें बिचार मन्त्रियोंसे सलाहले पुरोहित व अन्य सेवकोंको मुनिके बुलानेकेलियेभेजेंगे १५ परन्तु वे लोग राजाके वचनसुन विभाण्डक ऋषिके कोपसे भयभीतहो मारेदुःखके नीचेको मुखकरलेंगे वहां न जायंगे केवल राजाको समझायही देंगे १६ फिर शोच बिचार तिसके उपाय भी राजासे कहेंगे कि हमलोग उनको लेआवेंगे व कुछ दोषभी न होगा १७ ॥

चौ० यहिविधि नृप गणिका गण प्रेषी । ऋषिसुत आन्यहु जानिविशेषी ॥ शान्तानाम सुता दैंतासू । वर्षा करवाईसहुलासू १।१८॥सोइऋषिशृङ्ग भूप तुम काहीं । देहहिंसुत संशयकछु नाहीं ॥ जासों तव जामाताआहीं । करिहैंकाजकठिनकछु नाहीं॥२॥ सनतकुमारकहीयहगाथा । तुमसन कही सकलनरनाथा १९ ह्वैप्रसन्न सुनिसुगमउपाई । दशरथ कह्यहु सुमंत्रहिंआई॥ज्यहिउपायशृंगीऋषिआवें ।सोउपायअबआपबतावें ॥३।२०॥

इत्यार्षेरामायणेबालकाण्डेवाल्मीकीयेनवमस्सर्गः ॥ ९ ॥

जब राजादशरथने पूंछाकि फिर कौन उपाय ऋष्यशृंगके आनेके लिये रोमपादके मन्त्रियोंने कहाथायहसुन सुमन्त्र बोलेकि जिसउपायसे ऋष्यशृंगको राजाने बुलाया सोकहते हैं १ जब राजा रोमपादने पूंछा तोमंत्री समेत राजासे पुरोहित बोले कि हम लोगोंने बिना बिघ्नका उपाय शोचा है २ ऋष्यशृंग बनमें रहाकरते तपस्या व वेदाध्ययन करते परस्त्रियोंके भोग विलासके सुखको नहीं जानते ३ तिससे आप उपाय कीजिये जो२ बस्तु इन्द्रियोंके मथन करनेमें समर्त्थहो उनको इकट्ठाकर बहुतही शीघ्र मुनिकोयहां लातेहैं ४ प्रथमतो सब प्रकारके भूषण पहिराय वेश्या वहां भेजीजावें कि वे मुनिको लोभाय विविध उपायसे यहाँ लावें ५ यह सुन राजाने कहा बहुत अच्छा यही उपाय कियाजाय सोसुनि पुरोहित व मन्त्रियोंने वैसाही किया ६ वेश्यालोग राजमन्त्री आदिकोंको पठाई बनमें पहुंची व मुनिके आश्रमके लगेही ऋषि के दर्शनका उपाय करनेलगीं ७ परन्तु अतिधीर नित्य अपने आश्रमही पर रहनेवाले मुनिकेपुत्र किअपने पिताके बड़ेदुलारेथे आश्रमपरसे न निकले८ व ऋष्यशृङ्ग ऐसे तपस्वी थे कि जन्म पर्य्यन्त स्त्री वा पुरुष वा अन्य नगर राज्यादि के जीव देखेही न थे ९ सो ऋष्यशृङ्ग दैवयोग से जहाँ वे वेश्या टिकी थीं अपने आप आये व उन स्त्रियों को देखा १० तो वे सब स्त्रियाँ चित्र विचित्र वस्त्र भूषणादि पहिने ओढ़े मधुरवाणी से गाती हुई सबकी सब आय मुनिके पुत्रसे बोलीं ११ हे ब्रह्मन् तुम कौन जाति किस के पुत्रहो व तुम्हारा नाम क्याहै कौन कर्म्म करतेहो व अकेले इसघोर बन में क्यों फिरतेहो सो सब हम लोग जानना चाहती हैं कहिये १२ जिससे कि कभी उन्हों ने स्त्री देखीही न थीं व वे सब अतिसुन्दरी थीं इसलिये उनके देखने से कुछ मुनिकुमार को स्नेहहो आया कि अपने पिता का नाम बताने में बुद्धि लगी १३ कहने लगे कि हमारे पिता का विभाण्डक नाम है व हम उनके और सपुत्रहैं हमारा इस भूतल में ऋष्यशृङ्ग नाम है १४ हे शुभदर्शन देनेवाली स्त्रियो यहाँ से थोड़ीही दूर पै हमारा स्थान है जो तुम वहाँ चलो तो हम सबकी विधिपूर्ब्बक पूजा करेंगे १५ ऋषि पुत्र के ऐसे बचन सुन सब के मन में आई कि चलो इनका आश्रम देखें इसलिये मुनि कुमार

के संग सबकी सब आश्रम देखने को गईं १६ जब वे पहुँचीं तो ऋषि-पुत्रने उनकी पूजा की व कहा यह अर्घ्य यह पाद्य यह मूल फलादि हम से लीजिये १७ तिस पूजा को ले स्त्रियों के चित्त में आया कि ऋषिपुत्र को यहाँ से लेचलें परन्तु विभाण्डक जी के शाप से भयभीत हो चलने की तयारी की १८ व कहा कि हे द्विजराज हमने तो तुम्हारे फल अंगीकार किये आप भी हमारे ये फल अङ्गीकार कीजिये व भो-जन कीजिये देखिये तो इनमें कैसा स्वादुहै १६ यहकह सबोंने मुनि कुमार को अच्छी तरह भेंटा व छपटालिया व कुछ लड्डू बहुतअच्छे ब-नायेहुये लिये थीं दिये २० ये नित्य बनके निवासी तो थेही कभी ऐसे लड्डू तो खायेही न थे जाना कि येभी एकप्रकार के फल हैं २१ फिर मुनिकुमार से पूंछ पांछ उनसे कुछ झूंठ मूंठ व्रतविधि कह विभा-ण्डक के शाप के भय से बहुत देरतक न ठहरसकीं वहाँ से चलीआईं २२ जब वे सब चलीआईं तो विभाण्डक के पुत्र मारे दुःख से कुछ उ-दासीन रहनेलगे २३ उसके दूसरे दिन मुनिदेव मनसे चिन्तना करते हुये वहां आये जहाँ अतिरमणीक स्त्रियों को देखाथा २४ उन वेश्याओं ने देखा कि ब्राह्मण देव आते हैं बहुत प्रसन्न हो ठाढ़ होकर मिलीं भेंटीं व बोलीं २६ कि यहाँ अति विचित्र कन्द मूल फलादिहैं व यहाँ से भी अधिक हमारे यहां हैं २७ यह सुन ऋषिपुत्र को वहाँ जाने का मन हुआ तब वे सब मुनिकुमार को लेकर चली आईं २८ जैसेही मुनिराज वहाँ आये कि रोमपाद के राज्य में इन्द्र ने एकाएकी बड़ी वर्षाकी कि जिससे सब लोग परमानन्दित हुये२६वर्षाके साथ मुनिराज के आनेपर राजा रोमपाद ने उठके दण्डवत् प्रणाम कर बैठाया ३० व न्यायपूर्ब्बक मुनिकी बड़ी पाद्यार्घ्यादिसे पूजाकी और वर मांगा कि आ-पके प्रसादसे आपके पिताजी न कोपकरें व आपभी यहां वेश्यओंकी द्वा-रा अनेसे न कोपकीजिये३१मुनिसे अभीष्ट वरपाय राजा मुनिको घरके भीतर लेगये वहांशान्त चित्तहो शांतानाम कन्याके साथ बिवाह कर-दिया व अति हर्षित हुये ३२ इस रीतिसे ऋष्यशृंग शांता नाम अपनी भार्य्याके साथ सब कामनाओं से पूजित भोगविलास करने लगे ३३॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेदशमस्सर्गः १० ॥

इतनी कथा सुनाय सुमन्त्रजी फिर राजादशरथ से बोले कि हे राजन् देवों में श्रेष्ठ सनत्कुमारजी ने कथा प्रसंग में फिर ऐसा कहा १ कि इक्ष्वाकुवंशियों के कुलमें एक बड़े धर्म्मात्मा शोभायमान सत्यवादी दशरथनाम राजा होंगे २ तिनसे अंगदेशके राजा रोमपादसे मित्रता होगी व तिनके शान्तानाम कन्या भी होगी ३ तिस अंग राजा के पुत्र रोमपाद के निकट ऋष्यशृंग के बुलाने के लिये राजा दशरथ जायँगे ४ व कहेंगे कि हे धर्म्मात्मन् आप आज्ञादें कि शान्ताकन्याके पति ऋष्यशृङ्ग हमारे कुलमें सन्तान होनेकेलिये पुत्रेष्टियज्ञ करावें क्योंकि हमारे कोई सन्तान नहीं है ५ राजा दशरथ के ऐसे वचन सुन इस कार्य्य को शोच बिचार पुत्रवान् ऋष्यशृङ्ग को आत्मज्ञानी राजा रोमपाद राजादशरथ को देंगे ६ तिस ब्राह्मण को पाय राजादशरथ प्रसन्नचित्तहो पुत्रेष्टियज्ञ करेंगे ७ तिस यज्ञमें यशकी कामना से हाथजोड़े हुये राजादशरथ तिन्हीं ऋष्यशृंगही को ऋत्विज बनावेंगे तिस द्विजों में मुख्य ऋष्यशृङ्ग से दशरथ जी यज्ञ पुत्र व स्वर्ग के लिये सैकरों काम पावेंगे ८ राजा के इस यज्ञसे अमित पराक्रमी बंश की प्रतिष्ठा करनेवाले सबलोकों में प्रसिद्ध चारपुत्र होंगे १० इस कथा को इस चौयुगी के पहिले सत्ययुगमें देवोंमें श्रेष्ठ सनत्कुमारजी ने कहरक्खा है ११ तिससे हे महाराज दशरथ सत्कार सहित तिस ऋष्यशृङ्ग को सहित सेना व बाहन के जाय आपही ले आइये १२ सुमंत्र के ऐसे बचन सुन राजादशरथ बहुत प्रसन्न हुये व वसिष्ठजी को बुलाय मंत्रीके बचन सुनाय उनकी भी सलाह ले रानी मंत्री नौकर चाकरों के साथ जहां ऋष्यशृङ्ग रहतेथे वहां गये १३ मार्गमें बन नदी पर्व्वतादि धीरे २ नाघते हुये जहां मुनिराज ऋष्यशृंग थे वहांजायपहुंचे १४ देखातो विभाण्डकऋषि के पुत्र ऋष्यशृंग राजारोमपादके समीप देदीप्यमान अग्निके समान बैठेहैं १५ पहुंचतेही अति प्रसन्न मन हो राजा रोमपाद ने मित्रता के कारण राजादशरथजी की बड़ी पूजाकी १६ व ऋष्यशृङ्ग से राजा दशरथकी अपनी मित्त्रका सम्बन्ध बताया तब ऋष्यशृंगजी ने भी राजादशरथकी बड़ी बड़ाई की १७ इस भांति राजा दशरथ वहां बड़े सत्कारके साथ सात आठ दिन रहके राजा रोमपादसे बोले १८ हे राजन् शान्ता नाम तुम्हारी कन्या अपने

पतिके साथ हमारे नगरको चलें क्योंकि हमारा बड़ा कामहै १९ राजा रोमपादने यह सुन कहा बहुत अच्छा ये तुम्हारे यहां जायँगे इतना कह ऋष्यशृंग से भी कहा कि आप अपनी स्त्री के साथ राजादशरथ के नगरको जाइये २० ऋषि पुत्रने यह सुन राजासे कहा बहुत अच्छा हम जायँगे इतना कह राजासे पूंछ सहित स्त्री चलदिये २१ तब राजा दशरथ व राजारोमपाद दोनों परस्पर हाथपकड़ छाती लगायमारे स्नेह के भेंटे व दोनो परमानन्दित हुये २२ फिर परमप्रिय राजा रोमपाद से पूंछ दशरथजी सहित समाज अपने पुरको चले व अति शीघ्र चलनेवाले दूत अपनी पुरीको खबर जनाने के लिये भेजा २३ व कहा कि जातेही सब अयोध्यापुरी बहुत ही शीघ्र झार बहार लीपपोत छिरकाव कर गुग्गुलादि सुगन्धोंसे धूपितकर पताकावन्दनवारके लाके खम्भा आदिसे सुशोभित कराओ २४ यह सुन दूत अति वेग अयोध्यामें पहुंचे महाराजकी आज्ञा सुन पुरवासियोंने जाना कि महाराज आतेहीहैं तुरन्त जैसी आज्ञाथी नगरको सब प्रकारभूषित करदिया २५॥

चौ०॥ तदनन्तरभूषित सबरीती। प्रविश्योनगरमहीपसप्रीती॥ दुन्दुभि शङ्ख आदि बहु बाजा। बाजत आगेकरि मुनि राजा१।२६॥ सुरपतिकर्म्म समान नरेन्द्रा। करि सतकार धरित्रि सुरेन्द्रा॥ जबहि प्रवेश्यहु लषि पुरबासी। प्रमुदित भये सकल सुखरासी२।२७॥ जिमि सुरेन्द्र सँगवामनसुर पुर। प्रविश्यहु लषिप्रमुदितभेसबसुर॥ तिमि ऋषितनयविलोकि सुनागर। परमा नन्दमग्न सुख सागर३।२८॥ अन्तःपुर प्रवेशि महिपाला। पूज्यहु शास्त्ररीति गत जाला॥ ता पूजनसों मानि कृतारथ। पायहु भूपतिसकल पदारथ४।२९॥ पति सँग शोभितशान्तहि देखी। सब रनिवास मुदित अवरेखी॥ अति विशाल नयनी मुनिनारी। अव लोकत सबभई सुखारी५।३०॥ रानिन्ह पूज्यहु बहु विधि ताही। अरु भूपति बहु भांति सराही॥ कछु दिन बसीं तनयपति साथा। सुखित तहाँ वर्णत शुभगाथा६।३१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेएकादशस्सर्गः ॥ ११ ॥

इस प्रकार जब सहित पति शान्ता को महाराज दशरथ लाये रहतेरे बहुत दिन बीते जब अति मनोहर बसन्तऋतु आया तो राजा के मन

में आया कि अब अश्वमेधयज्ञ करें १ तब कुलके संतान के लिये ऋष्य-शृङ्ग के प्रणामकर उनको यज्ञ कराने के अर्थ प्रथम वरण किया २ मुनिने कहा बहुतअच्छा हम यज्ञ करावेंगे आप सब सामग्री इकट्ठा कराइये व यज्ञके योग्य घोड़ा छोड़िये व सरयू के उत्तर तट पै यज्ञभूमि बनवाइये ३ यह सुन महाराज दशरथ सब मन्त्रियों में श्रेष्ठ अपने सुमन्त्र नाम मन्त्री से बोले हे सुमन्त्र वेदवादी उत्तम २ ब्राह्मण ऋत्विज् होने के लिये बहुतही शीघ्र बुलावो ४ उनमें प्रथम तो सुयज्ञ वामदेव जावालि काश्यप व हमारे पुरोहित वसिष्ठजी को बुलावो फिर और जो ब्राह्मणोत्तम हों उन्हें भी बुलाना ५ यह सुन सुमन्त्रजी तुरन्त जाय सब वेद पारग सुयज्ञादिकों को बुलालाये ६ तिन सब को पूज धर्म्मात्मा राजा दशरथ धर्म्म अर्थ सहित बचन बोले ७ कि यद्यपि राज्यादि के सब सुख हम को हैं परन्तु बिना पुत्र कुछ भी सुख नहीं इसलिये हम चाहते हैं कि पुत्र के निमित्त अश्वमेधयज्ञ करें ८ तिस से अब हम अश्वमेध कर्म्म से यज्ञ करने की इच्छा करते हैं व निश्चय है कि ऋष्य-शृंग के प्रभावसे कामनाभी सब पावेंगे ९ राजाके मुखसे ऐसे बचन सुन वसिष्ठादि ऋषियों ने कहा बहुतअच्छा २।१० यह कह ऋष्य शृंगादि राजासे बोले कि अब सब यज्ञ सामग्री एकत्र कराइये और तुरंग छोड़िये ११ व सरयू के उत्तर तीर यज्ञभूमि बनवाइये १२ निस्संदेह आप चार पुत्र पावेंगे क्योंकि तुम्हारी यह पुत्रके अर्थभी धार्मिकीही बुद्धि रही १३ ब्राह्मणों के ऐसे बचन सुन राजा बहुत प्रसन्नहुये व अपने मन्त्री आदिकों से यह शुभ अक्षर सहित वाणी बोले १४ कि इन गुरु लोगों के बचन के अनुसार सब सामग्री बटोरी जाय अच्छा सब प्रकार सुन्दर यज्ञ योग्य घोड़ा छोड़ा जाय १५ सरयू के उत्तर तटपै यज्ञभूमि बनाई जाय यज्ञ में विघ्न न होने पावे इसलिये शांतिपाठ सब पढ़े जायँ १६ इस यज्ञको सब राजालोग कर सक्ते हैं परन्तु जो कोई विघ्न न होजाय १७ क्योंकि यज्ञोंमें विद्वान् ब्रह्म राक्षस लोग भूल निहारा करतेहैं कि कहीं विधिहीन तो यज्ञ नहींहोता इसीसे विधिहीन यज्ञ का कर्त्ता तुरन्तही नाशको प्राप्तहोताहै १८ तिससे जिसमें यह यज्ञ विधिपूर्व्वक समाप्त हो ऐसा उपायकरो क्योंकि तुम लोग विधि सहित करने कराने में स-

मर्त्यहो १६ राजाधिराजके ऐसे वचन सुन सब मन्त्रियोंने बड़ी बड़ाई की व कहाकि बहुत अच्छा ऐसाही होगा यह कह जैसी२ आज्ञाहुई वैसाही उन्होंने किया २० ॥

चौ० तब सब द्विज गणधर्म्म महीपहि। आशिषदैपार्थिव कुलदीपहि॥ आज्ञा पाय सकल निजधामा। भये भाँति सब पूरण कामा ॥१२१॥ जब गे द्विजवर निज२ गेहा। मन्त्रिन्हँ बिदा कीन ससनेहा॥ आपगये नृपमणि निजमन्दिर। सब गुणखानि सकल सुख चन्दिर॥ २१२२॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेद्वादशस्सर्गः॥१२॥

फिरजब बसन्तऋतु पूर्णहुआ व होते २ एक वर्ष बीता तो अश्वमेध विधि से सन्तानके निमित्त यज्ञ करनेमें राजा उद्यत हुये १ प्रथम वसिष्ठजीके निकट जाय न्याय पूर्व्वक प्रणाम व बड़ाईकर राजाविनय सहित बचन बोले २ हे मुनिराज जैसा वेदमें लिखाहै उसी विधि विधानसे हमारा-यज्ञ कराइये जिसमें यज्ञके अंगोंमें कोई विघ्नन्हो ३ क्योंकि आपहमारे अच्छेसुहृद् व महा गुरूभीहैं यह यज्ञका भार आपहीके उठानेके योग्य है इससे उठाइये ४ वसिष्ठजी राजासे बोले कि जोर२ आपने कहा व विचाराहै हम सब करेंगे ५ राजासे ऐसा कह यज्ञ कर्म्मों में कुशल वृद्ध ब्राह्मणों व स्थापत्यकर्म्ममें निष्ठपरम धार्म्मिक अन्य द्विजराजों से यज्ञ करानेके लिये कहा ६ फिर उन सेवकोंसे कहा जोजबतक यज्ञसमाप्त न हो बराबर काम काज करते रहें व थवई बढ़ई खोदने खननेवाले लोग ज्योतिर्व्वित् पण्डित चित्रसारी उरेहनेवाले नट व नाचने गानेवाले लोगोंसेभी कहा ७ फिर तैसेही जो पुरुष पवित्रचित्त सब शास्त्र वेद जानने वाले बहुत बातें सुने सुनाये देखे देखाये थे उनसेभी कहा किराजा की आज्ञाहै सब लोग चित्त लगायके यज्ञके काम काज करो ८ प्रथम बहुत सी ईटेंलावो कि जिसमें राजाओंके बैठने उठनेकेलिये सुन्दर२ मन्दिरबनायेजांय कि जिनमें स्नान भोजनादि की सब सामग्री विद्यमानहो ९ तिसी प्रकार ब्राह्मणोंके रहनेके लिये भीसैकरोंहजारों स्थान बनायेजायँ जिनमें सब तरह के भक्ष्यभोज्य पदार्थ सदा एकट्ठा रहें १० तिसी प्रकार पुरवासी वे, राज्यनिवासियों के लिये भी बैठने उठने के स्थान बनायेजायँ व जो राजालोग दूर२ से यज्ञमें न्योते आवेंगे उनके लिये

अलग२ सहस्रों स्थान जिनमें सब तरहका सुपास हो बनाये जायँ ११ तैसेही घोड़े हाथियों के रहने के स्थान नाना प्रकार की शय्या व नाना प्रकार के घर जो योधा परदेशी आवेंगे उनके रहने के लिये बड़े २ स्थान बनाये जायँ १२ तैसेही नीचजनों के रहने के लिये भी उन के लायक सामग्री सहित अति सुन्दर २ स्थान बनाये जायँ १३ चाहे जो यज्ञ में आवे सब को सत्कार सहित अन्नादि दिये जायँ किसी का अनादर न होने पावे चाहे जिस वर्ण का मनुष्य हो अपने २ मनोरथ को पहुँचाया जाय व सब तरह की सामग्री उनके लिये सबकहीं तैयार रहै १४ व काम क्रोध के वश होकर भी किसी का अनादर न कियाजाय १५ व जो पुरुष थवई आदि यज्ञ के कर्म्म में लगेहों तिनकी भी पूजा यथा क्रम की जाय उलटा पलटी न होने पावे कि बड़े की पूजा पीछे हो छोटों की पहिले क्योंकि जिन सेवक लोगों की पूजा धन भोजनादि से अच्छी रीति पर होतीहै १६ वे अच्छी तरह चित्त लगाय काम करते हैं कि कोई काम बिगड़ने नहीं पाता इससे तुमलोग हम में प्रीति लगाय तैसाही कामकरो १७ तब सब आय वसिष्ठजी से यह बोले १८ कि अश्वमेध कर्म्म में आपजो २ बातें चाहते हैं वे सब हम लोगों से होंगी सबकुछ करेंगे कोई काम न छोड़ेंगे १६ तब वसिष्ठ जी सुमन्त्र को बुलाय के बोले कि पृथिवी में जो राजा लोग धर्म्मात्मा हैं तिन सब को न्योतो २० राजों के विशेष ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र व और श्वपच चाण्डालादि कों को भी देश २ से सत्कार सहित बुलाइये २१ व सत्यवादी शूर बीर सब वेद शास्त्र में निष्ठित मिथिलापुरी के राजा जनकजी को अपने बूते जायकै सत्कार पूर्व्वक बुलालाइये उन को दूत द्वारा न बुलाइये गा २२ क्योंकि वे बहुत दिनों के व्यवहारी स्नेही हैं यह जान उन को प्रथम बुलाने को तुम से कहते हैं २३ तैसेही निरन्तर प्रियवादी सदाचारी देव समान रूप काशीनरेश को भी अपने बूते जायकै बुला लाइये २४ तैसेही अति वृद्ध परम धार्म्मिक महाराज दशरथजी के श्वशुर केकय देशके राजा को भी सहित पुत्र वहां जायही कै लावो २५ तैसेही महाराजके मित्र अंगदेश के राजा रोमपादजी को भी जायकर लावो क्योंकि वे बड़े यशस्वी हैं २६ तैसेही दक्षिण कोशला के स्वामी भानुमान

को अच्छे सत्कार के साथलावो मगध देशके राजा को भी जायही कर लाना होगा क्योंकि वेभी बड़े शूरबीर व सकल शास्त्र बिशारद हैं २७ इन्हें छोड़ अन्य राजों को महाराज का आज्ञा पत्र भेज के बुला लेवो जैसे कि पूर्व्वदेश के राजा लोग सिन्धु सौवीरदेश के राजा सौराष्ट्र देशा धिपति २८ दक्षिण देशके राजा इन सब को बुलावो इन्हें छोड़ और भी जो पृथिवी तलपै अच्छे २ राजा हैं २९ तिन को नौकर चाकर व भाई बन्धुओं के साथ बहुत शीघ्र दूत भेज २ कर बुलावो ३० वशिष्ठजी ऐसे बचन सुन सुमन्त्रजी ने देश देश के नरेशों के बुलाने को तुरन्त मनुष्य भेजे ३१ व आप भी वसिष्ठजी की आज्ञा से राजाओं के लेने को बड़ी जल्दबाजी के साथ गये ३२ अब यज्ञ के कर्म्म करनेवाले लोग जो २ कुछ करते सब धीमान् वसिष्ठजी से आय निवेदन करते कि महाराज हमने इतना कामकिया ३३ तिन सबों से फिर वसिष्ठजी प्रसन्न हो कहने लगे कि किसीको कोई भी वस्तु निरादर के साथ व खेलपूर्व्वक न देना क्यों कि जो कर्म्म अनादर के साथ किया जाता है वह दाता कोही बिनाशता है इसमें कुछ संदेह नहीं ३४ इस रीति से सब सेवक अपना २ काम करते जाते थे कि कुछ दिनों में ठौर २ के राजालोग बहुत २ रत्नादि ले राजा दशरथजी की भेंट को आये ३५ तब वशिष्ठजी ने अति प्रसन्न हो राजा से कहा हे नरव्याघ्र दशरथजी आपकी आज्ञा से सब राजालोग आये हैं ३६ हमने भी यथायोग्य सब राजाओं का सत्कार करदिया है ३७ हे राजन् इन पुरुषों ने अब यज्ञ की सामग्री सब इकट्ठा करदीहै आपभी यज्ञकरने के लिये यज्ञशाला को पधारिये ३८ व सब वस्तु देखिये कि कैसी शीघ्रता व सावधानी व सुंदरता सुगमता के साथ सेवकों ने सकल पदार्थ एकत्र किये हैं मानो मनसे ही कर दिया है कुछ परिश्रमही नहीं करना परा ३९ ॥

चौ० ॥ यहसुनि भूपति भयहु सुखारी। धर्म्म शील करुणातनु धारी ॥
मुनि वशिष्ठ शृंगीऋषि ज्ञानी । शुभ दिन शुभ नक्षत्र जो भानी ॥ १ ॥
ता दिन भूप शिरोमणि दशरथ । यज्ञ सदन कहँगे सब समरथ ॥ ४० ॥
तब वशिष्ठ आदिक मुनिराजा । ऋष्यशृंग आगेकरि भाजा ॥ २ ॥ यज्ञ
कर्म्म आरम्भ्यह नीके । वेदविधान सकलविधि ठीके ॥ ४१ ॥ तमिकै व

वेद रहित कछु होई । करत शास्त्र विधि सो नहिं गोई ॥ ३ ॥ रानिन्हँ सहित महीपति आपू । क्रतु दीक्षा महँ टिक्यहु सुलापू ॥ ४२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेत्रयोदशस्सर्गः ॥ १३ ॥

अब जब वर्ष पूरा हुआ व सबकहीं से घूम घुमाय अश्वमेधवाला घोड़ा जिस दिन अयोध्याजी में पहुंचा उसी दिन शुभमुहूर्त में सरयूके उत्तर किनारे पै महाराज दशरथ का यज्ञ होनेलगा १ सब ब्राह्मणश्रेष्ठ ऋष्य-श्रृंग को आगे कर महात्मा राजाधिराज के यज्ञ के कर्म्म करने लगे २ सब ब्राह्मण यज्ञ करनेवाले वेदशास्त्र के पारगन्ताथे इसलिये जैसा वेदमें कर्म्म कहाहै वैसा न्याय शास्त्रानुसारकहीं न्यूनाधिक नहीं कल्प-सूत्रके अनुसार ठीक २ करतेथे कोई विधि भूलने नहीं पातीथी ३ प्रथम ब्राह्मणोक एक प्रवर्ग्य कर्म्म होता ऋत्विजों ने उसे शास्त्रानुसार किया फिर एक उपसदकर्म्म होता उसको फिर उपदेश शास्त्रसे अधिक कर्म्म किया ४ तिन २ कर्म्मोंकी देवताओं की पूजाकर प्रसन्न-चित्तहो सब मुनिलोग विधिपूर्वक दूसरे दिन प्रातस्सवनादि कर्म्म करनेलगे ये तीन कर्म्महैं प्रातस्सवन माध्यन्दिनसवन तृतीयसवन ये तीनों यथाविधि किये गये ५ जैसे कि प्रथम प्रातस्सवन हुआ फिर इन्द्र देवता को भाग दियेगये राजाकी स्तुति कीगई तब माध्यन्दिन स-वन हुआ तदनु तृतीयसवन शास्त्रानुसार ब्राह्मणश्रेष्ठों ने किया ६ । ७ तब ऋष्य श्रृंगादिकों ने स्वर वर्ण सहित मन्त्रोंसे इन्द्रादि सब देवोंका आवाहन करनेलगे ८ सब होतालोग अति मधुर सचिक्कण वाणी से सामवेद गाय २ आवाहन कर इन्द्रादिकोंको तिस २ के मन्त्रसे हव्य भागदेने लगे ९ ऐसे महाविज्ञानी यज्ञकारयिता थे कि न तो कोई आ-हुति बिना प्रयोजन हुनीगई न कोई अज्ञानसे सब आहुतें वेदमन्त्र सहितही हुई व सब कल्याणयुक्त ही ब्राह्मणोंने किया १० फिर जि-तने दिन यज्ञ हुआ न तो कोई ब्राह्मण प्यासा हुआ न भूखा रहा न कोई ऐसा ब्राह्मण देखपरा जो मूर्ख हो न कोई ऐसा कि जिसके साथ सैकरों सेवक न हों ११ फिर यह नहीं कि केवल ब्राह्मणों कोही भोजन मिले अन्य लोगोंको न मिले नहीं नित्य २ ब्राह्मण भोजन करते नित्य २ शूद्रादिभी भोजन करते जोकुछ यज्ञका कामनहीं करते वे भीभोजन पाते

सन्यासी लोगभी भोजन से तृप्त कियेजाते १२ सैकरों वृद्ध रोगी स्त्रियां बालकादि बार २ भोजनकरते यद्यपि उनके पेट तो भरजाते पर ऐसे स्वादिष्ठ सब रस सहित भोजन करनेको मिलते कि कोई मानोंतृप्तहीनहीं होताथा बार२ भोजनहां सब किया करते १३ राजा व कार्य्याधिकारियों की बार२ यही आज्ञा होतीथी कि अन्न व विविध भांतिके वस्त्र बराबर देतेरहो जैसे २ आज्ञा होतीथी सब अन्न वस्त्रादि बराबर दिये जाते थे १४ हजारों पर्व्वताकार पक्के कच्चे अन्नके ढेर लगेथे जो चाहेकच्चाअन्नले जो चाहे बना बनाया भोजन करै १५ तिस महात्मा राजादशरथजी के यज्ञमें पुरुष व स्त्रियोंके झुण्डके झुण्ड नानाप्रकार के देशोंसे आयेथे उन सबको भोजनपानवस्त्रादि बराबर मिलताथा १६ विविध भांतिका स्वादिष्ठ अन्नजो खिलाया जाताथा ब्राह्मणलोग भोजन कर २ प्रशंसा करते थे कि अहो हम अघाने हम तृप्तहुये महाराज का कल्याण हो सब ओरसे महाराज यही शब्द सुनतेथे १७ सब प्रकारके भूषण वस्त्र धारण किये हुये अन्य राजाके नौकर चाकर भोजन जलादि से ब्राह्मणों की सेवाकरतेथे व उन लोगों की और लोग करते थे वे भी दिव्य मणियों के कुंडलादि धारण किये थे १८ अब एक सवन समाप्त हुआ जब दूसरे सवन की तयारी हुई तो ब्राह्मण लोग अपनी २ बुद्धिमत्ता व धीरता देखाने व परस्पर जीतने की इच्छा से नानाप्रकार के शास्त्रार्थ करनेलगे १९ इसरीति से प्रतिदिन यज्ञ कर्म्ममें कुशल ब्राह्मण लोग जैसी कुछ शास्त्र की आज्ञा है सब यज्ञकर्म्म करते कराते थे २० तिस महाराजाधिराज के यज्ञ में ऐसेकोई सदस्य ब्राह्मण नहीं थे जो छवो अङ्गसहित वेद न पढ़े हों व जो व्रतको न धारणकिये हों न बहुत कुछ देखे सुने किये कराये हों न ऐसे कोई थे जो शास्त्रार्थ करने में कुशल न हों २१ अब इतने कर्म्मोंके पीछे जब पशुबालम्भ के लिये खम्भा गाड़ने की तयारी हुई तो ६ खम्भा बेलके गाड़ेगये ६ खैरक तिसीप्रकार ६ पलाशके २२ १ बहेरा का दो देवदारु के यही सब यज्ञके लिये कहे हैं २३ इन सबको यज्ञकर्म्म में चतुर शास्त्रीलोगों ने यथास्थान यज्ञ शोभा केलिये गाड़ा इन सबमेंसोने का पानी ढारा हुआ था क्योंकि सोने से भूषितहुये भी थे २४ ये सब २१ खम्भा हुये इनसबोंमें चौबिस२ अंगुल की २१

अरत्नि लगाईगई सब खम्भों में एक २ वस्त्र लपेटे गये २५ प्रथम ब्राह्मणों ने अपने हाथ से स्थापित किया फिर गाड़नेवाले थवई बढ़ई तमोली आदिकों ने पुष्टता के साथ गाड़ा व चिकनाया सुधारा ये सब यज्ञस्तम्भ अठ कोने थे सब सुन्दर चीकने भूकने २६ सबमें वस्त्र लपेटे थे व सबकी चन्दन धूप दीपादि से पूजा होती थी इसलिये वे ऐसे सुशोभित होते थे कि जैसे स्वर्ग में सप्तऋषि लोग शोभित होते हैं २७ पश्वालम्भ स्थान बनाय यज्ञ के लिये अग्निस्थापन करने की वेदी यज्ञ कर्म्म में कुशल ब्राह्मण लोग जितनी ईंटों का प्रमाण है उतनी लें बनाने लगे बनाय के तैयार किया २८ इस भांति राजसिंह महाराज दशरथजी के यज्ञमें यज्ञकर्म्म कुशल ब्राह्मणोंने वेदी बनाई उस पर सोनेकी ईंटोंसे पङ्ख बनाय १८ प्रस्तार का एक गरुड़ स्थापित किया क्योंकि अश्वमेध यज्ञमें इसका स्थापन करना कहा है २९ तिनखम्भों में जिस देवता के लिये जो पशु चाहिये वह बाँधागया सर्प्प व पक्षी भी जो २ शास्त्र में लिखे हैं सब वहां स्थापित किये बैठाये बाँधेरूंधे गये ३० ये सब पशु तो यज्ञकी रक्षा के लिये बाँधेगये थे अब जो घोड़ा यज्ञान्त में बलिप्रदान कियाजायगा उसे शास्त्रके अनुसार ब्राह्मणों ने बलिप्रदान स्थान में बाँधा ३१ इसभांति तिन यज्ञ स्तम्भों में तीनसै पशु बाँधेगये व महाराज दशरथजीका तुरंग जो सबमें उत्तम यज्ञके योग्य जोकिप्रथम पृथिवी पर्य्यटन करनेको छोड़ा गयाथा वहभी बाँधागया ३२ इस घोड़ेको महाराज दशरथजीकी कौसल्यादि रानियों ने भलीभांति पूजाकर एक२ खड्ग ले बधकिया क्योंकि यह कर्म्म यजमानकी स्त्रीहीके करनेकाहै ३३ फिर कौसल्याजी धर्म्मकी कामनासे उस घोड़े के निकट रात्रिभर प्रसन्नचित्त होकर रहीं यह भी शास्त्राज्ञा है किउस घोड़ेकी रक्षाकरनेके लिये एकरात्रि यजमानकी स्त्री वहाँ रहै ३४ तब होता अध्वर्य्यु व उद्गाता इन तीनोंने रानी कौसल्या व एक वैश्यवंश की कन्या जो दूसरी रानीथी तथाएक शूद्र वंश कीथी इन तीनों को उस यज्ञके अश्वके साथ नियोजित किया ३५ फिर सब वेदसम्पन्न ऋत्विजों नेउस घोड़ेकी चरबीले शास्त्रकी आज्ञानुसार अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें कर अग्नि पर चढ़ाय परिपक्व किया ३६ उस समय चरबी गंध

सादिके चुरनेसे जो सुगन्धित धुआँ निकलताथा उसे महाराज दशरथादि जितने राजाथे सब सूंघ२ अपने २ पाप भस्म करतेथे अहोभाग्य ३७ तदनन्तर उसघोड़ेके सर्व्वांग काट २ जो सोरह ऋत्विजथे विधिपूर्व्वक अग्निमें हुनने लगे ३८ अश्वमेधयज्ञ को छोड़ अन्य यज्ञोंमें पकरिया की डारमें बाँधकर पशु माराजाताहै और अश्वमेधयज्ञ में तो बेतमें बांध घोड़ेको मार वलिप्रदान होता है ३९ कल्पसूत्र व ब्राह्मणभाग दोनों ने अश्वमेध यज्ञमें तीन सवनीयदिन कहे हैं उनमें पहिला अग्निष्टोमदिनहै ४० व दूसरा उक्थ तीसरा अतिरात्र सो शास्त्रविधि देख२ उसअश्वमेधयज्ञ में बहुत उसके अन्तर्गत यज्ञ किये करायेगये ४१ जैसेकि ज्योतिष्टोम आयुष्टोम अतिरात्र अभिजित् विश्वजित् आप्त आदिये महायज्ञ कियेगये अब सब विधिसे अश्वमेधयज्ञ समाप्त हुआ ४२ इस यज्ञकीदक्षिणामें महाराज दशरथने पूर्व्वकी दिशामें जितनी भूमिथी होताको दी व अध्वर्य्युको पश्चिम की ब्रह्माको दक्षिणकी ४३ उद्गाताको तैसेही उत्तरकी दिशाकी भूमिदी यह अश्वमेधयज्ञकी दक्षिणाहै ४४ जब शास्त्रविधिसेयज्ञ समाप्तहुआ दक्षिणामें सब पृथिवी राजाने यज्ञकरानेवाले ब्राह्मणोंको दे दी ४५ तोसब ऋत्विजलोग पाप रहित राजासे बोले कि महाराज इस सम्पूर्ण पृथिवीको अकेले आपही रक्षाकरनेके योग्यहैं ४६ हमलोगोंका भूमिसे कुछभी कामनहींहै व न हमलोग इसका पालनहींकरसक्तेहैं क्योंकि हमलोगतो नित्य अपने वेदपढ़ने पढ़ानेमें लगेरहतेहैं फिर इसका पालनकैसेहोगा ४७ हां इसयज्ञकीदक्षिणामें कुछ धनहम लोगोंको दे दीजिये सोभी पृथिवी का पोत नहीं कुछ मणिरत्न वा सुवर्ण वा गाय वा जोकुछ होसके ४८ सो देदीजिये महाराज भूमिसे हम लोगों का कुछ प्रयोजन नहीं जब राजा से ब्राह्मणों ने ऐसा कहा ४९ तो महीपालने एकलाख तौ गाय सौ करोड़ मोहरें जोकि उन दिनोंमें सोरह २ मासेकी होतीथीं इसके चौगुने चांदीके भाग दिये जो रुपये २ भरके थे ५० ऋत्विजों को इतनी दक्षिणा दीगई तो सबोंने बांटने के लिये ऋष्यशृङ्ग व वसिष्ठजी के आगे जाय धरा ५१ इन दोनों जनोंने शास्त्रके अनुसार उन सबके भाग लगादिये तब अपना २ उचित भागपाय अति प्रसन्न चित्तहो सबके सब राजा से बोले कि महाराज हम परमानन्दित हुये

अब कोई अभिलाषा पूरी होनेको नहीं रही ५२ इसके पीछे राजा ने जम्बूदेश का सोना अन्य अन्य अभ्यागत ब्राह्मणों को दिया इसमें कई करोर का सुवर्ण खर्च हुआ ५३ इसके पीछे एक अति दरिद्र ब्राह्मण आया कि उसने राजाके हाथका कङ्कणही माँगा राजाने बड़े हर्षसे उसे कङ्कणही देदिया ५४॥

चौ० ॥ तब सब द्विज विधिवत हरषाने । द्विजवत्सल नृपमणि पहिचाने ॥ हर्षसहित सबविप्रन केरे । कीनप्रणाम शीसकरि नेरे १ । ५५॥
जब इमि धर्षिण प्रणत महिपाला । भयहु द्विजन आशिषा विशाला ॥
दीन महीपहि विविधि प्रकारा । एक एक सब वचन उचारा २ । ५६॥
पापहरण स्वर्गद सब काहू । अति दुस्तर प्राकृत नृप आहू ॥ अस
क्रतुपाय प्रसन्न महीपति । भयहु लह्यहु सब सुखहु भलीयति ३ । ५७॥
तब शृङ्गीऋषि सों नृप दशरथ । बोल्यहु वचन सकल कृति समरथ ॥
कुलवर्द्धन कीजै द्विजराजा । कृपा करहु मोपर सजि साजा ४ । ५८॥
यह सुनि मन गुणि कह्यहु ऋषीशा । नृपवर सुनहु देहिं जगदीशा ॥
तनयचारि तुमकहँ कुलपालक । रिपुघालक दुष्टन उरशालक ५ । ५९॥

हरिगीतिका ॥

सुनि मधुरवानी ऋषि बखानी नृपति ज्ञानी आयकै ॥
विधि सहित कीन्ह प्रणाम विप्रहि प्रयतचित हित पायकै॥
पुनि भयहु हर्षित अर्थ वर्षित नृप महान सुजान हैं ॥
फिर शृंगिऋषिसों मधुरस्वर सों कहत अर्थ अपान हैं ६ । ६० ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेबालकाण्डेचतुर्दशस्सर्गः ॥ १४ ॥

जब राजा दशरथने प्रणामकर मुनिराज से पुत्रहोनेके विषयमें कहा तोअति बुद्धिमान्‌वेद जाननेवाले शृंगीऋषिकुछ समझ शोचविचार ध्यान दे जाना कि पुत्रेष्टियज्ञ कराने सेमहाराजके पुत्रहोंगे यह विचार ध्यान छोड़ राजासे बोले १ हे राजन् पुत्र होनेके लिये हम अथर्वण वेदमें कही हुई पुत्रेष्टि यज्ञविधान पूर्व्वक करावेंगे क्योंकि वह हमको विदितहै २ यह कह महातेजस्वी ऋषिशृङ्ग जीने पुत्रेष्टियज्ञ करनेका प्रारम्भ किया जैसा कुछ वेदमन्त्रों में उसकेलिये कर्म्म लिखाहै उसी कर्म्म से पुत्रेष्टियज्ञ होने लगा ३ इस यज्ञके प्रथमहीं देवता गन्धर्व सिद्ध व सब बड़े २

ऋषिलोग अपना अपना भाग लेनेके लिये जोकि रावणके मारे बन्दहो-
गया था एक संग हो किसी यज्ञ में आये थे वहां ब्रह्माजी भी आये थे
तिन को देख सब देवादि बोले ये सब उस यज्ञ में अन्तर्द्धान होकर टिके
थे, आपस में तो एक दूसरे को देखता था पर अन्य सभासदादि उन्हें
नहीं देखते थे ४ अति विनयपूर्व्वक यह वचन बोले ५ हे भगवन् तुमसे
वरदान पाय रावण नाम राक्षस मारे बलसे हम सबलोगों को सता-
ताहै उसके रोकने में हम लोगों की सामर्थ्य नहीं ६ क्योंकि आप ने
पूर्व्वही प्रसन्न हो तिसे वरदान दिया है कि देवतादिकों के मारे तुम
न मरोगे इसीसे हम लोग जो २ कष्ट वह देताहै सहते हैं ७ सो यह
हमीलोगों को नहीं दुःख देता वरन तीनोंलोकों को व्याकुल कर रहा
है अग्नि वरुण कुवेरादि लोक पालों से बैरभाव रखता है देवता ओं के
राजा इन्द्र को इन्द्रपुरी से निकाला चाहता है ८ आप के वरदान से
मोहित हो ऋषि गन्धर्व्व यक्ष ब्राह्मण असुर इनसब को पीडित करताहै
९ कहां तक कहें नतो इस रावण को सूर्य्य सन्तपित करते न उसके
निकट जोरसे कभी पवन चलती है यद्यपि समुद्र सदा खल भलाया
करता है पर जब उस को देखता है तो फिरि नहीं चलता ज्यों का त्यों
चुपचाप एक जगह भरा रहता है १० तिससे इस घोरदर्शन राक्षस
से हम लोगोंको बड़ाभय उत्पन्नहुआ है हे भगवन् तिसके मारनेके लिये
कोई उपाय आपको करना चाहिये ११ यहसुन ब्रह्माजीने कहा कि उ-
सके मारने का उपाय तोहै १२ क्योंकि उसने जब हमसे वर माँगा था
तो यहीकहा था कि देवता गन्धर्व्व यक्ष राक्षस दैत्यादिकों के मारे हम
नमरें तब हमने कहाथा किअच्छा इनके मारे नमरोगे १३ परन्तु वहदुष्ट
मनुष्यों को तो कुछ समझताही नहीं था इससे उसने मनुष्यों को नहीं
कहा कि इनसे भी हमारी मृत्युनहो तिससे वह मनुष्यही से मरेगा उ-
सके बधकी और उपायनहींहै १४ ऐसी प्रियवाणी ब्रह्माजीकी सुनसब
देवता व महर्षिलोग अतीव हर्षित हुये १५ इसी समय में शङ्ख चक्रगदा
हाथमें लिये पीताम्बर ओढ़े गरुड़ पै चढ़े श्रीविष्णु वैकुण्ठ सेआय स-
बके आगे खड़ेहुये १६ जैसे सूर्य्य नारायण कभी बादरके बीचमें उदय
हो शोभित होतेहैं वैसेहीसोनेके बजुल्ला बाँधे गरुड़पै चढ़ेश्री विष्णु शो-

भित होते थे सब देवतालोग बैकुण्ठवासी भी संग में थे जोकि स्तुति कर रहेथे १७ श्री हरिने इस भांतिसे आप ब्रह्माजी से समागम किया तब सब ब्रह्मादिदेव स्तुति करके श्रीभगवान् से बोले १८ हे विष्णुजी आप से हम लोग लोक की रक्षाके लिये प्रार्थना करतेहैं कि प्रसन्नचित्त हो कीजिये १९ वह रक्षा इस प्रकार से होगी कि धर्म्मज्ञ महा दानी बड़े २ ऋषियों के समान तेजस्वी सब कुछकरनेमें समर्थ अयोध्यापुरी के राजा महाराज दशरथजीकी २० जो तीन स्त्रियां लज्जा लक्ष्मी कीर्ति के समानहैं उनमें आप अपने शङ्ख चक्र अनन्त इन रूपों के साथ पुत्र भावको प्राप्त हूजिये २१ तहां आप मनुष्यवतार ले लोक के कण्टक रूप महा योधा रावण को समर में मारिये क्योंकि ब्रह्माजी के वरदान के कारण उसे मनुष्य को छोड़ देवता दैत्यादि नहीं मार सक्के २२ वह दुष्ट मूर्खाधिराज रावण मारे पराक्रम के देवता गन्धर्व्व सिद्ध ऋषि मनुष्यादि सबको कष्ट देताहै २३ वरन नन्दनवनमें क्रीडाकरतेहुये ऋषिगण अप्सरा गन्धर्व्व सिद्धादिकोंको उस भयानक रावणने मारभी डारा २४ इसीसे तिस दुष्टके मार डारने के लिये मुनि ऋषि गन्धर्व्व यक्षादिकों को संग ले हम लोग आप की शरणमें आयेहैं हे देवदेव हम लोगोंकी परमगति आपही हो आपके सिवाय और कोई दुष्टों को नहीं मारसक्का इसलिये मनुष्यलोक में अवतार ले सब के शत्रु इन रावणादिकों के मारने को मन कीजिये २५ जब सब लोक के नमस्कार के योग्य देवताओं में श्रेष्ठ श्री विष्णुजी की देवोंने ऐसी स्तुति की तो ब्रह्मादि देवता जो अपने व लोक के धर्म्म के हित के लिये एकट्ठा हुये थे सब से श्रीविष्णु बोले २७ हे देवताओ भय छोड़ो तुम्हारा कल्याण हो तुम लोगों के हितके लिये संग्राम में इस दुष्ट रावण को २८ पुत्र पौत्र मन्त्री जाति भाई बन्धुवों सहित मारेंगे क्योंकि वह दुष्ट देवता व ऋषिलोगों को भी बहुत भयदेता है २९ मनुष्यलोक में उस दुष्टको मार पृथिवी की पालना करते हुये ११००० वर्ष हम बसेंगे ३० इस रीति से देवों को वरदान दे श्रीविष्णु भगवान् मनुष्यलोक में अपने जन्म लेनेके योग्य स्थान विचारने लगे ३१ ॥

चौ० ॥ तबसरोज लोचनभय मोचन । हरि करि चारि रूपजन रो-

चन ॥ दशरथ नृपहि पिता गुनि नीके । कीन्हें प्रकाशित सब विधि ठीके १ । ३२ ॥ तबदेवर्षि रुद्र गन्धर्व्वा । यक्ष अप्सरागण मुनिसर्व्वा ॥ दिव्यरूप स्तुति करि ठीके । मधुसूदनहिं प्रशंसत नीके २ । ३३ ॥

॥ हरिगीतिका ॥

महा उद्धत उग्र तेजस लोक रावण रावणम् ।
अति प्रवृद्ध सुदर्प्प दर्पित त्रिदशपति मदहारकम् ॥
सकल साधु तपस्वि कण्टक लोक रोदन कारकम् ।
मुनि तपस्वि भयावहं हरि त्वरित जाहु मारकम् ॥ ३।३४॥

॥ दोहा ॥

सहित सेन बान्धव कठिन पौरुष रावण मारि ।
गत ज्वर निज वैकुंठ कहँ आवहु हरि सुखकारि ॥४। ३५॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेपञ्चदशस्सर्गः ॥ १५ ॥

जब देवताओं ने ऐसी प्रार्थना रावण के मारने के लिये की तो श्री नारायणविष्णु यद्यपि सब जानते थे पर देवों के आदर के हेतु बहुत मधुर वाणी से बोले १ हे देवो तिस राक्षसेश्वर रावण के मारने में कौन उपाय है जिससे हम उस ऋषियों के वैरी को मारें २ जब श्रीहरि ने देवों से ऐसा कहा तो उन लोगों ने निवेदन किया हे भगवन् आप मनुष्य देह धारण कर समर में रावण को वध कीजिये ३ क्योंकि उसने बहुत दिनों तक अति कठोर तपस्याकीथी जिससे सबसेबड़े व सब लोक करने वाले ब्रह्माजी संतुष्ट हुये ४ व संतुष्ट हो उन्होंने यह वरदान दिया कि रावण मनुष्य को छोड़ हमारी सृष्टि में किसी प्राणी के मारे तुम न मरोगे ५ रावण चाहता तो यह भी माँग लेता कि मैं मनुष्य से भी न मरूं परन्तु वह मनुजों को तो कुछ समझताही न था इसलिये उसनेहीं कहाथा कि तुम मनुष्यों को छोड़ और किसी प्राणी से मेरा मरण न हो इसीसे ब्रह्माजी ने यही वरदान दियाथा सो जब से उसने वरदान पाया है तब से महा अहङ्कारी होगयाहै ६ व तीनोंलोक उजारे देताहै स्त्रियों को भी पकर लेजाता तिससे हे देव उसका वध मनुष्य ही के हाथ से सक्ता है ७ देवों के ऐसे वचन सुन श्रीनारायण विष्णुभगवान् ने अपने

पिता दशरथजी को प्रकाशित किया ८ महाराज दशरथभी जानों पुत्र-हीन तो थेही उन्हीं दिनों में पुत्र होने की इच्छा से पुत्रेष्टि यज्ञ करने लगे ९ वहां श्री विष्णुभगवान् राजादशरथ के यहां अवतार लेने का विचार कर ब्रह्मा से पूंछ पाँछ कहसुन उसी स्थान पै अन्तर्द्धान होगये १० यहां महाराजाधिराज दशरथ के अग्निकुण्ड से अग्नि के समान रूप महातेजस्वी महावीर्य्य महाबलवान् ११ कृष्णवर्ण लालेवस्त्र ओढ़े अरुणनयन दुन्दुभि समान शब्द सहित चीकने २ सिंह कसभा वालोंके समान दाढ़ी मोंछ आदि रखाये १२ सब शुभ लक्षण युक्त दिव्य आभूषण धारण किये पर्ब्बत के शृंगके समान ऊंचा अहङ्कारी सिंह के समान बलवान् १३ सूर्य्य नारायण के आकार प्र-ज्वलित अग्निकी शिखाके समान देदीप्यमान एक पुरुष चांदीके ढकने से झाँपा हुआ सुवर्णपात्र हाथमें लिये १४ उसमें दिव्य खीर भरे मन्द २ मुसुकाता हुआ निकला १५ व महाराज दशरथजी से बोला कि हे रा-जन् हमको प्रजापतिके यहां से आये हुये समझिये १६ यह सुन हाथ जोर महाराज दशरथजी बोले हे भगवन् अच्छी तरह से तो आये सब आनंद मंगलहै आप का क्या काम हम करें सो कहिये १७ यह सुन वह प्रजापतिके यहां का पुरुष महाराज से फिर बोला कि हे राजन् तु-मने जो इस यज्ञ में देवताओंकी पूजाकी है उससे आज यह पदार्थ आ-पने पायाहै १८ हे नृपशार्दूल यह षीर देवताओं ने बनाई है लीजिये इससे पुत्र होतेहैं व धन्यहै आरोग्य भी करनेवाली है १९ इसे लेजाय अपनी सवर्णा स्त्रियों को खिलाइये जिसके लिये यज्ञ करतेहो स्त्रियोंसे पुत्र उत्पन्नहोंगे २०यहसुन राजाने बहुत अच्छाकह प्रसन्नहो देवताओं को बनाई हुई षीर से परिपूर्ण उस पात्रको नमस्कार पूर्व्वक ले २१ उस अद्भुत दर्शन पुरुषके प्रणाम व प्रदक्षिणा किया २२ राजा दशरथ उस षीर को पाय अति प्रसन्न हुये जैसे कि निर्द्धन पुरुष धन पाय प्र-सन्न होताहै २३ जब राजा दशरथजीने षीर लेली तो वह देदीप्यमान पुरुष जो षीरपात्र ले अग्निसे निकला था फिर उसी पावक में प्रवेश कर गया २४ महाराज दशरथ की रानियां भी उससमय ये समाचार पाय परमानन्दित हुईं व शोभायमान हुईं जैसे कि शरद ऋतुके च-

न्द्रमा के किरणोंसे आकाश शोभित होताहै २५ राजा रनिवासमें जाय कौसल्याजी से बोले कि यह पुत्र उत्पन्न करानेवाली खीर ग्रहण करो २६ इतना कह प्रथम आधी जाउरि कौसल्याजीको दी फिर आधी में दो भाग किये अर्थात् चौथाई उनसे छोटी स्त्री सुमित्राजी को दिया २७ फिर उस चौथाईमें दो भाग किये अर्थात् अठवां भाग कैकेयीजीको दिया २८ अब जो अठवां भाग बाकीरहा वहभी सुमित्राजी को देदिया इसरीतिसे तीनों रानियों को अलग २ पायस राजाने बांट दिया २९

दोहा

उचित पाय पायस सकल रानी भईं सहर्ष ।
मन जाना सन्तान वर ह्वैहैं पूरण तर्ष ॥ १ । ३०
नृपसों पायस पाय तिय पिय प्यारी युतमोद ।
तुरत गर्भधारणकियो प्रतिदिनसहितविनोद ॥ २ । ३१
गर्भसहितरानिन्हँनिरखि प्रमुदितचित महिपाल ।
जिमिसुरपुर महँहरि सुर पूजित होत निहाल ॥ ३ । ३२

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे षोडशस्सर्गः ॥ १६ ॥

जबश्रीविष्णु भगवान् महात्मा राजा दशरथजीके यहाँ पुत्रता को प्राप्तहुये तो ब्रह्मा भगवान् सब देवताओंसे यह बोले कि १ हेदेवो श्री विष्णुजी राजा दशरथके यहां अवतार लेनेवालेहैं व हम सब लोगोंका हित चाहतेहैं सत्यसन्ध व वीरहैं यद्यपि वे सबकुछ अपने आप करसक्ते हैं तथापि तिनकी सहायता व सेवा करने के लिये तुम लोग स्वेच्छा-चारी वानर ऋक्षादि देह धारण करो २ तुम सब माया जाननेवाले शूर-वीर बेगमें पवनके बेगकेसमान सब युक्ति करनेमें समर्थ बुद्धिमान् विष्णु के तुल्य पराक्रमी ३ किसीके मारनेसे न मरनेवाले सब उपाय जा-ननेवाले सिंह समान पुष्ट वा वीर शरीर सकल अस्त्रशस्त्रके गुणोंमें नि-पुण मृत्युरहित ४ होगे व येसब अप्सराओंमें जो मुख्य२हैं व गन्धर्वों कीस्त्रियां यक्ष सर्प्प ऋक्ष विद्याधरी ५ किन्नरोंकीस्त्रियाँ अपने२ परा-क्रमकेसमान पुत्र वानरोंकी देहमें उत्पन्नकरें ६ जोकहो कि तुम क्योंनहीं श्रीविष्णुकी सहायता करनेकेलिये अवतार लेते सोहमने तो रामावतार

में सहायता के लिये पूर्व्वही जाम्बवान्नाम ऋक्षराज अपने अंशसे उ-
त्पन्न कियाहै जोकि हमारे जँभोई आनेपर मुखसे उत्पन्न हुआहै ७ सब
देवोंने जब ब्रह्माजीकी ऐसी आज्ञापाई तो सबोंने बानररूपी पुत्र उत्पन्न
किये ८ तैसेही ऋषि महात्मा सिद्ध विद्याधर सर्प्प चारण इन लो-
गों ने भी बानररूपी पुत्र उत्पन्न किये ९ महेन्द्राचल के समान बाली
नाम बानरको इन्द्रजी ने उत्पन्न किया सूर्य्यनारायणने सुग्रीवनाम बा-
नर उत्पन्न किया १० वृहस्पति जी ने तार नाम बानर उत्पन्न किया
यह बानर सब बानरों में अतीव बुद्धिमान् हुआ ११ व कुवेरजीने गन्ध-
मादन नाम बानर बिश्वकर्म्माने नल नाम महाकपि उत्पन्न किया १२
व अग्नि ने अपनेही समान नीलनाम बानर उत्पन्न किया यह नील
तेज यश व पराक्रम में सब रीतिसे अग्निहीके समान हुआ १३ तैसेही
अति सुन्दर अश्विनीकुमारजी ने मैन्द व द्विविद नाम बानर बनाये १४
बरुणने सुषेणनामको उत्पन्नकिया मेघ देवताने शरभनामक बानर १५
व मारुत के औरस पुत्र हनुमान्नाम बानर जिनका वज्र समान पुष्ट
सकल अंग चलनेमें गरुड़ के समान बेग सब मुख्य २ बानरोंमें बुद्धि-
मान् व सबसे बलवान् रूप हुआ १६ ये सब बानर इन सब देवता-
ओं के मनसे उत्पन्न हुये इन्हें छोड़ अन्य सैकरों सहस्रों लक्षों बानर
बड़े २ बलवान् शूरवीर महापराक्रमी स्वेच्छाचारी रावण के वध में
उद्यत हुये १७ जितने ऋक्ष बानर व लम्बी पूंछवाले बानर हुये सबके
सब पर्व्वताकार महाबलवान् देहधारण किये हुये १८ जिस देवताका
जैसा रूप जैसा बेष जैसा पराक्रम है तिसके तैसाही पुत्र भी हुआ १९
ये बानर कोई २ तो लम्बी पूंछवाली बनरियों में उत्पन्न हुये कोई २
यक्षियों में कोई किन्नरियों में सब के सब जितना देवता होने में परा-
क्रमी थे उससे अधिक पराक्रमी इस बानरयोनि में हुये २० देवता
महर्षि गन्धर्व्व गरुड यक्ष २१ नाग किम्पुरुष विद्याधर गज ये सब
बहुत सहस्रों जन्मे २२ चारण लोगों नेभी वीर बानर पुत्र उत्पन्न कि-
ये ये सब महा पराक्रमी हुये २३ तैसेही मुख्य २ अप्सराओं में विद्या-
धरिओंमें नागकन्याओंमें गन्धर्व्वियोंमें २४ सब बानरही बानर उत्पन्न
हुये ये सब जब चाहें जैसारूप बलधारण करें जब चाहें जो बिचार

करलें अहंकार व बलमें सबके सब सिंहशार्दूलों के समान हुये २५ व सबकेसब शिला फेंकके मारनेमें निपुण सब पर्व्वत चलाय २ युद्धकरने में चतुर सबके नह दाँत आयुध धारण करनेवाले सब सब शस्त्र अस्त्र चलानेमें पण्डित २६ सबको जब लड़ाई परेगी तो पर्व्वतों को चलाय देंगे बड़े २ वृक्षोंको तोड़ताड़ डालेंगे समुद्रको खलबलादेंगे २७ पैरोंसे पृथिवी को कँपादेंगे समुद्रको पैर जायँगे आकाशमें प्रवेश करजायँगे बादरोंको पकर लेंगे २८ बनमें घूमते हुये मदान्ध हाथियों को पकर घसीटेंगे जब कभी किलकारी भरेंगे तो पक्षियों को गिरावेंगे २९ ऐसे महापराक्रमी स्वेच्छाचारी सैकरों सहस्रों लाषों बानर हुये ३० और जो सुग्रीवसे ले सुषेण पर्य्यन्त महापराक्रमी बानराधिराज कहेहैं वही लोग यूथप होंगे व उनसे अनेक वीर उत्पन्नहोंगे ३१ इनमें सहस्रों तो ऋक्षवान् नाम पर्व्वत के कँगूरों पर रहेंगे बहुत और २ पर्व्वतोंपै अपने मनमाने घूमतेफिरेंगे ३२ इनमें सबसेअधिक सूर्य्यके पुत्र सुग्रीव व इन्द्र के पुत्र बाली जो कि दोनों भाई ह उनके संग रहेंगे बहुतसे नलनील व हनुमान्‌केसाथ यूथप रहेंगे ३३ ये सबगरूड समान बलवान् सब युद्धकरने में बड़ेप्रवीण घूमतेहुये सब सिंह व्याघ्र बड़े सर्प्पोंको भी मर्द्दितकरेंगे ॥

दोहा ॥

महा प्रतापी बालि बहु बिक्रम युततिन काहिँ ।
निजभुज बलपालिहि सकलकपिगोपुच्छ ऋक्षवाहिँ ॥ १ । ३५ ॥
तिन कपि शूरन सों महीगिरि बन जलधि समेत ।
बिबिध भांति पूरण रहहि नानारूप निकेत ॥ २ । ३६ ॥
मेघबृन्द गिरि कूटसम रूप महाबलवान् ।
कपि यूथप अतिभीम तनु रघुपति हेतु महान् ॥ ३ । ३ ॥
सकल धरणि पूरित किये राजत सिंह समाम ।
करि सहाय रघुवीर की ह्वैहैं कीर्त्ति महान ॥ ४ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेबालमीकीयेबालकाण्डेसप्तदशस्सर्ग्गः ॥ १७ ॥

यहाँ महात्मा राजाधिराज का जब अश्वमेधयज्ञ समाप्त हुआ तो सबदेवगण अपना२ भागले जैसे अपने २ स्थानोंको गये १ महाराज

दशरथ भी यज्ञके सबनियम निबाहिअपनी स्त्रियों व मन्त्री सेवक वाहनादिकों के साथ अयोध्या पुरीमें आये २ यहां जो राजालोग देश २ से यज्ञ में न्योते आये थे महाराज दशरथजीने चलने के समय उनकी वस्त्र भूषणादिकों से बड़ीपूजाकी जिससे सबके सब प्रसन्नहो अपने२ घरको वसिष्ठजी के प्रणामकरके गये ३ जब अयोध्या जीसे नानाप्रकार के भूषण वस्त्रपाय२ सबराजाओंकी सेना अपने२ देशको चली तो मारे आनन्द के बहुत शोभित हुईं ४ जब सबराजा लोग अपने२ पुरको चलेगये तब फिरराजादशरथ सब ब्राह्मणोंको आगेकर पुरीके भीतर पैठे ५ गृहमें पहुँचनेके पीछे शान्ता अपनी स्त्रीकेसाथ ऋष्यशृङ्ग भी नानाभांति पूजितहो अपनी कुटीपै गये जोकि अङ्गदेश के राजा रोमपादके राज्यमें थी ६ इसरीति से सबलोगों को बिदा करकराय सकल मनोरथ पूर्ण महाराज दशरथ जी पुत्रजन्म की चिन्तना करतेहुये सुखपूर्ब्बक अपने घरमें निवास करतेरहे बसते २ यज्ञ समाप्त होने के दिनसे ६ ऋतुबीते ८ तब अश्वमेध यज्ञके समाप्त होनेसे बारहवें चैत्रमासकी शुक्लनवमी पुनर्ब्बसु नक्षत्र में व ५ ग्रह अपने उच्चस्थानपै विद्यमान थे ६ कर्कलग्न में वृहस्पति व चन्द्रमा विद्यमानथे तब जगन्नाथ सकललोकनमस्कृत १० दिव्य लक्षण संयुक्त विष्णु के पूर्णावतार इक्ष्वाकुवंशियोंके कुल बढ़ानेवाले श्रीरामचन्द्र जी को महारानी कौसल्या जी ने उत्पन्न किया ११

अथ श्रीराम जन्मकुण्डली ॥



दोहा ॥

भयप्रकरण जनभयहरण अशरणशरण उदार ।
क्षेम सदन वारिज वदन राम लीन अवतार ॥ १ ॥
चैत्रमाससुदिनवमि बुध अदिति कर्क तनुमाहिँ ।
कौसल्या रघुनन्दनहि उपजायो सक नाहिँ ॥ २ ॥
कर्क वृहस्पति उच्चशशि युतहैं सब सुख दैन ।
राहु तीसरे युवति के शनि चौथे तुल ऐन ॥ ३ ॥
मंगल सतयें मकर के नवम मीन भृगु केतु ।
सूर्य्य दशम अजके बुद्ध वृष ग्यरहें सुखहेतु ॥ ४ ॥
रवि गुरु कुज भृगुनन्द शनिउच्च सदनमहँवास ।
स्वगृही विधु नृपयोग यह पूरण कर सब आश ॥ ५ ॥
तरणि स्वोच्च के करत हैं सेनापति अरु भौम ।
स्वोच्चविपिन राजाकरत सुखदसदानहिँ औम ॥ ६ ॥
स्वोच्च वृहस्पति धनि करत राजराजपुनिदेत ।
स्वोच्च शुक्र नृप तीन श्री देत सकल मुद हेत ॥ ७ ॥
शनि स्वोच्चग नृपराजकरि देत कछूनहिँ शङ्क ।
सकल योगफल राममहँ घटित भये शुभ अङ्क ॥ ८ ॥

इस रीति से अमित तेजस्वी राम ऐसे पुत्र से श्रीकौसल्यामहारानी ऐसी शोभित हुईं जैसे प्रथम वामनावतार में देवों के वरदान से अदिति जी शोभित हुईथीं १२ फिर विष्णु के चौथे भाग से सत्यपराक्रमी सब शुभ गुण सहित भरतजी पुष्य नक्षत्र में कैकेयी में अवतरे १३ व सकल शस्त्रास्त्र में कुशल अति वीर लक्ष्मण शत्रुघ्न सुमित्राजी से आश्लेषा नाम नक्षत्र में हुये १४ भरतजी पुष्य नक्षत्र में तो अवतरे पर लग्न उस समय मीन थी इसीसे सदा प्रसन्नचित्त बनेरहते व लक्ष्मण शत्रुघ्न आश्लेषा नक्षत्र कर्क लग्नमें मध्याह्न समय में जन्मे १५ महाराजदशरथजी के चारो पुत्र सब शुभ गुण लक्षण सहित रूप में विलक्षण तेज में समान हुये जैसे पूर्व्वाभाद्रपदा व उत्तराभाद्रपदा ये दोनों नक्षत्र दो २ समान नक्षत्रों के साथ उदय होने से तेज में समान प्रकाशित होते हैं १६ राजकुमार परमोदार श्रीरामचन्द्रादिकों के जन्म होतेही गन्धर्व्व लोग

मधुरवाणी से गाने लगे व अप्सरोंके गण नाचने देवताओंके नगारे बा-
जने आकाशसे पुष्पोंकीबर्षाहोने लगी १७ श्रीअयोध्यामें केवल महाराज
दशरथही के सदन में नहीं बरन घर २ द्वार २ गली २ महाउत्सव
होने लगा ठौर २ वेश्या नट नटी आदि गाने बजाने नाचने कूदने लगीं
जिधर देखो धूम धड़क्का कहीं आने जाने की शरण नहीं १८ कोई २
अपने तालस्वर से गाय रही हैं कोई बाजा बजाय रहे हैं बहुत लोग
नानाप्रकार के वस्त्र भूषण पहिने ओढ़े इधर उधर डोल रहे हैं १९
महाराज दशरथजी सूत मागध व बन्दीगणों को पारितोषिक देने लगे
ब्राह्मणों को सुवर्ण रत्न भूषणादि हजारों धेनु दिये दिवाये २० इसरीति
से गाते बजाते दानदेते दिलाते श्रीरामचन्द्र के जन्मसे १२ दिनबीतने
पर वसिष्ठ मुनिने चारो भाइयों के नामकरण किये उनमें सबसे ज्येष्ठ
कौसल्यामहारानी के पुत्र महाप्रतापी का रामचन्द्र ऐसा परमशोभन
नाम धराया कैकेयीजीके पुत्रको भरत २१ सुमित्राजीके पुत्रोंको लक्ष्मण
व शत्रुघ्न नाम बताया २२ उसदिन सहस्रों ब्राह्मणों को अथम भोजन
कराया फिर सब अयोध्यावासी व राज्य के अनेक अन्यलोगों को भी
यथारुचि भोजन दिया ब्राह्मणों को नानाप्रकारके रत्नोंके ढेर दिये २३
इसके पीछे समय २ पर अन्नप्राशन मुण्डन कर्णवेध यज्ञोपवीतादि सब
कर्म्म चारो कुमारोंके राजाने वसिष्ठजी से कराये तिन सबोंमें जैसे सब
से ज्येष्ठ रामचन्द्र थे वैसेही सबमें पताका रूप अपने पिताके सन्तोष
करनेवाले हुये २४ व सब प्राणियों के लिये पालन पोषण में तो ब्रह्मा
जीकेही समान हुये इसके सिवाय चारो भाई सब वेदों के वक्ता महा
शूरवीर सब लोक का हित करनेवाले हुये २५ सबके सब परमज्ञानी
सब २ गुणों से भरे पुरे तिनमें भी महातेजस्वी सत्यपराक्रमी श्रीराम-
चन्द्रजी हुये २६ जोकि सब लोकके इष्टदेव चन्द्रमा के समान प्रिय-
दर्शन हुये हाथी घोड़े रथ पै चढ़ने में बड़े निपुण धनुर्विद्या में अतीव
कुशल पिता की सेवामें तत्पर हुये २७ बाल्यावस्थाही से लक्ष्मी के ब-
ढ़ाने वाले लक्ष्मणजी ज्येष्ठभाई रामचन्द्रजी के निरन्तर भक्त हुये २८
ये लक्ष्मीसम्पन्न लक्ष्मणजी रामचन्द्रजी के सब प्रिय करनेवाले व-
शरीर से भी अधिकप्रिय मानों दूसरे रामचन्द्रके प्राणहीहैं ऐसे हुये२९

पुरा था पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रभी लक्ष्मणबिना शयननहीं करतेनीकमीठ सुंदर अन्न बिना तिनके नहीं भोजनकरते ३० जब कभीघोड़े पै सवार हो रामचन्द्रजी शिकार खेलने जातेथे तो उनकेपीछे २धनुष बाण लिये पालना करते हुये लक्ष्मणजी जाते ३१ जैसे रामचन्द्र जीको लक्ष्मण जी सब तरह से परमप्यारे थे तैसेही उनके भाई शत्रुघ्नजी भरतजीके प्राण समान प्यारेहुये ३२ राजा दशरथमहाराज तिनचार अपने परमप्रियबड़े भाग्यशाली पुत्रों से परम प्रसन्न रहने लगे जैसे देवोंके साथ ब्रह्माजी परमानन्दित होते हैं ३३ जब ये चारो राजकुमार सकलगुणसम्पन्न सबगुणोंसे प्रसिद्ध लज्जावान् कीर्तिमान् सबकुछ जाननेवाले जिनको देख लोग बहुत देर तक देखाकरैं ३४ तिन लोगों का ऐसा प्रभाव व तेज देख महाराज दशरथ बहुत हर्षित हुये जैसे कि लोकके स्वामी ब्रह्माजी लोककी रचना देख हर्षित होते हैं ३५ ये श्रीरामादि राज कुमार भी वेद पढ़ने में तत्पर पिताकी सेवामें कुशल धनुर्विद्यामें पूरा बिश्वास रखनेवालेहुये ३६ जब महाराज दशरथजी वसिष्ठजी व और भाई बन्धुओं के साथ बिचारने लगे कि अब बालक बिवाह के योग्य हुये कहीं इनके समान रूप गुण अवस्था स्वभावादि वाली कन्याओं के सङ्ग बिवाह करना चाहिये ३७ मन्त्रियोंके साथ बैठेहुये महात्मादशरथजी यह चिन्तना करी रहे थे कि महातेजस्वी महामुनि विश्वामित्रजी आये ३८ व राजाके दर्शन को इच्छासे द्वारपालों से बोले हे द्वारपालो राजासे बहुतही शीघ्र जनाओ कि राजा गाधिके पुत्र विश्वामित्र आये हैं ३९ विश्वामित्रजी के वचन सुन देर होनेमें शापके डरसे डरेहुये द्वारपाल अति बेगसे व्याकुलचित्तहो राजाके मन्दिर में खबर जनाने गये क्योंकि मुनिने खूब जोरसे डाटके कहाही था कि अतिबेग खबर जनाओ ४० उन लोगोंने राजमन्दिरमें जाय महाराजसे विश्वामित्र ऋषिका आगमन कहा ४१ तिन द्वारपालों के वैसे वचन सुन वसिष्ठजी को साथ ले राजा मुनिसे मिलने आये जैसे कि ब्रह्माजी पर्ते सुन इन्द्र अगुवानी को जाते हैं ४२ देखातो तेजके मारे देदीप्यमान महातपस्वी अति तीक्ष्ण नियमधारी प्रसन्नमुख विश्वामित्रजी खड़े हैं राजाने वसिष्ठ जीसे अर्घ्य दिलाया ४३ मुनिराजने शास्त्रानुसार

अर्घ्य पाय राजासे कुशल व कुशल का अविनाश पूंछा ४४ कि राजन् आपके नगर खज़ाना देश भाई वन्धु इष्टमित्रादिकों में सबप्रकार कुशल मङ्गल तो है ४५ सब सामन्त लोग नम्रतो रहते शत्रुतो सब जीतलिये गये देवता मनुष्यों के कर्म्म यज्ञ करना अभ्यागतादि पूजनातो अच्छी तरह से चलाजाता है ४६ इसकेपीछे वसिष्ठजी के बनाय समीप जाय कुशल पूंछा फिर वामदेवादि जो ऋषि लोग खड़ेथे यथाक्रम उनसे कुशल पूंछा ४७ जब विश्वामित्र ऐसे महातेजस्वी तपस्वी ने बड़े आदर से प्रत्येक मुनिको पूंछा तो सबके सब प्रसन्न मन राजा की सभा को गये व यथायोग्य स्थान में बैठे ४८ विश्वामित्रजी व राजा भीजाय सभामें बैठे तबराजाने महामुनि विश्वामित्र से बड़े आदरपूर्वकप्रसन्नमनहो पूंछा ४९ कि हे महामुनि जैसे मनुष्य को अमृत मिलने से सुख होता जैसे पानी न बरसता हो व बरसैतो हर्ष होता जैसे अपने समान रूपगुण अवस्थावाली स्त्रियों में पुत्र होने से पुत्ररहित पुरुष को होता ५० जैसे भूली खोई वस्तु मिलने से वस्तु के स्वामीको सुख होता व जैसे पुत्रादिकों के बिवाह में सब लोगोंको आनन्द होता तैसेही हम आप के आगमन से सुख मानते हैं आप बहुत अच्छीभांति से तो आये ५१ कहिये इस हर्ष से आपका कौनपरम काम हमकरें हे ब्रह्मन् आप हमारे सबकुछ करने के योग्य हैं अहोभाग्य जो यहां कृपाकी ५२ आज हमारा जन्म सफल हुआ जीव सुजीव हुआ यह रात्रि सुन्दर प्रातःकाल वाली हुई जिससे कि आपके दर्शन हुये ५३ प्रथम आप राजर्षि रहे तभी बड़ी तपस्या से महातेजस्वी हुये थे फिर होते २ ऐसा हुआ कि ब्रह्मर्षि हुये इससे सबप्रकार हमारे पूजनीय हो ५४ ॥

दोहा ॥

तव पवित्र आगमन अति अद्भुत विप्र महान ।
तव दर्शन सों देहमम भयहु सुदेह बखान ॥ १ । ५५ ॥
कहियहेतु आगमनकरव्यहिलगि आयहुआप ।
तवसबहितपूरणकरन ममपन चहत सुलाप ॥ २ । ५६ ॥
जनि कीजै संशय कछू कार्य आपने माहिँ ।
जासों ममतुम दैवहो करब सकलसकनाहिँ ॥ ३ । ५७ ॥

ममसबशुभतवआगमन सोद्विजसकलसुधर्म्म ।
सब उत्तमबित्तम बनो नहिंकछु संशयकर्म्म ॥ ४ । ५८ ॥
हृदयसुखदश्रुतिसुखदसुनि मुनिनृपबचनविनीत ।
प्रथितयशोगुणगुणसहित हर्षित परमपुनीत ॥ ५ । ५६ ॥

इत्यार्षे रामायणे बाल्मीकीये बालकाण्डेऽष्टादशस्सर्गः ॥ १८ ॥

राजसिंह महाराज दशरथजी के अद्भुत बिस्तार सहित वचन सुन हर्षितहो महातेजस्वी बिस्वामित्रजी बोले १ हेराजशार्दूल राजाइक्ष्वाकु के वंशमें उत्पन्न वसिष्ठजी के उपदेश से चलनेवाले आपके योग्यही ये वचनहैं अन्य किसी के योग्य नहीं क्यों नहो २ जो वचन हमारे मनमेंहैं तिस कार्य्यकी निश्चय अवश्य कीजियेआप सत्यप्रतिज्ञ हूजिये ३ हम यज्ञकिया करते हैं तिसमें दो कामचारी राक्षस विघ्नकिया करतेहैं ४ जबहम बहुतदिनोंतक यज्ञ करते रहतेहैं और यज्ञ समाप्त होनेपर होता हैतो बड़ेपराक्रमी बड़े चतुर मारीच व सुबाहु दोनों राक्षस आय वेदीपर मांस व रुधिर की बर्षा करने लगते हैं जब हमारे यज्ञकी प्रतिज्ञा उनके ऐसा करने से भ्रष्ट होजातीहै तौ केवल श्रमही श्रमहमें होता उत्साह रहित हो तिसदेश से भाग खड़े होते हैं ६ हम उनको शापभी देदेते परन्तु क्या करें उस यज्ञमें कोप करना शापदेना आदि अनुचितहै इसीसे क्रोध करनेमें हमारी वुद्धिनहीं जाती न तिनको शापही देतेहैं ७ इसलिये हे राजशार्दूल सत्यपराक्रम व जुलुफ रखाये अपने जेठपुत्र रामचन्द्रको हमें दीजिये ८ क्योंकि यज्ञ के विनाशनेवाले राक्षसोंके मारडारने में भी ये समर्थ हैं फिर यज्ञकी रक्षा करने की कौन बातहै एकतो ये अपनेहीं तेजसे दुष्ट राक्षसों को मारसक्ते हैं दूसरे इनकी रक्षाहम भी करते रहेंगे ९ और इनको ऐसी कल्याण की बातें बतावेंगे जिनसे तीनों लोकोंमें इनकी ख्यातिहोगी १० वे राक्षस किसी रीतिसे रामचन्द्र के आगे नहीं खड़ेहोसक्ते न और कोई रामचन्द्र को छोड़ उनको मारसक्ताहै ११ यद्यपि वे दुष्ट मारेपराक्रम के अहंकारी होगयेहैं तथापि पापी होने के कारण कालही के बशहैं इससे रामचन्द्र के सामने कुछ भी नहीं करसक्ते १२ हे राजन् पुत्रका स्नेह न कीजिये १३ दशरात्रियों में

हमारे यज्ञके बैरी मारीच सुबाहु को रामचन्द्रमारडारेंगे १४ हमजानते हैं आप उन राक्षसों को मारेही समझिये १५ सत्य पराक्रमी रामचन्द्र को हम भलीभांति जानतेहैं व महातेजस्वी वसिष्ठजी जानते हैं ये सब तपस्वी मुनिलोगभी जानते हैं १६ जो आप पृथिवीमेंअपना धर्म्मलाभ व बड़ा यश बहुतदिनों तक चाहतेहों तो हे राजेन्द्र रामचन्द्रको हमेंदीजिये १७ फिर यहनहीं जो ये वसिष्ठादि तुम्हारे मन्त्रीलोगइसबिषयमें सलाहदेंतो रामचन्द्रको कहिये कि हमारेसंगचलें ८१ हमको यही इच्छा हैकि केवल दशरात्रितक यज्ञ की रक्षाकरनी है अब छोठे से बालक भी कमलनयन रामचन्द्र नहीं हैं क्योंकि १२ वर्ष के होचुके हैं इससे देही दीजिये १९ जिसमें हमारे यज्ञका समय न बीतजायऐसा कीजिये आपका कल्याण हो मनमें शोच न कीजिये २० इतना धर्म्मार्थ सहित वचन कहमहातेजस्वी धर्म्मात्मा महामति विश्वामित्रजी चुपरहे २१ ॥

॥ दोहा ॥

इमिसुनि मुनिवर शुभवचन भेसशोक महिपाल ॥
अतिमोहित कम्पनलगे समझि रामकहँबाल ॥ १ । २२ ॥
कछुक बेरमहँ नृपतिकी मूर्च्छाजगी सचेत ॥
उठिबैठे राक्षसनसुधि करिभे भीतिसमेत ॥ २ । २३ ॥
सहृदयमनोदारया वचन मुनिके सुनि अवनीश ॥
व्यथितचित्त गतवित्तसम शोचत मनहुँअनीश ॥ ३ । २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीये बालकाण्डेएकोनविंशतितमस्सर्ग्गः ॥१९॥

महाराजाधिराज चक्रवर्त्ती राजादशरथ विश्वामित्रजीके ऐसेवचन सुनि एक मुहूर्त्त मूर्च्छितहो फिर कुछचैतन्य हो ऐसाबोले १ कि हे मुनिराज अभीराजीवनयन सुखमा अयन हमारे राम सोरह वर्षमें एक चौथाई कमकहे बारह वर्षकेहैं इससे राक्षसोंके साथ युद्ध करने की योग्यता इनमें नहींदेखते वरन यही समझते हैं कि अभी हमारे कोरामेंहीं बैठने लायक हैं २ रहा यहकि वेराक्षस कैसे मारेजावें सो उसके लिये यह कई अक्षौहिणी की सेनाहै कि जिसके स्वामीहम सबकुछ करने में समर्थ हैं इसलिये इसके साथचल उन निशाचरोंसे युद्धकरेंगे ३ इसके

सिवाय ये हमारे नौकर चाकर सब शस्त्रास्त्र चलाने में चतुर महापराक्रमी शूरवीर राक्षसों के संगलड़नेके योग्यहैं आप रामको न लेजाइये ४ हमीं समरमें धनुष बाण हाथमें लिये यज्ञके रखवार बनेरहेंगे जबतक प्राण रहेंगे बराबर निशाचरोंसे लड़ाकरेंगे ५ हमतहां चलेंगे आपकीयज्ञक्रिया निर्व्विघ्न व सुरक्षित होगी रामचन्द्रको न लेजाइये ६ क्योंकि अभी बालकहैं धनुर्व्विद्यादि पढ़ी नहीं इसलिये बलाबल जानते नहीं अस्त्र शस्त्रका बलभी इनमें नहीं युद्धकरने में चतुर व निपुण भी नहीं व राक्षस लोग मायायुद्ध बहुतकरते इन सबबातों से साफ विदितहै कि ये राक्षसों के संग लड़ने लायक नहींहैं ७ इसके सिवाय हे मुनिराज रामचन्द्र के वियोग में हम मुहूर्त्तमात्रभी नहीं जी सक्ते इसलिये इनको न लेजाइये ८ नहीं जो आप रामचन्द्रही को ले जाया चाहतेहैं तो चतुरंगिनी सेनाके साथ हमभी चलें पीछे रामभी ६ हमारे जन्मको ६०००० वर्ष बीतेथे तब नानाप्रकार के व्रतयज्ञादिकों के दुःखभोग रामको पाया है इससे आप इन्हें न लेजाइये १० यद्यपि हमारे इनको छोड़ तीन पुत्र औरभी हैं पर सबमें ज्येष्ठ व धर्म्मप्रधान पितृक्रिया करनेके अधिकारी राम में हमारी परमप्रीतिहै इससे इनको न लेजाइये ११ भला यह तो बताइये कि उन राक्षसों के कितना बलहै व वे किसके पुत्र हैं उनका क्या२ नाम है फिर वे किस आकारके हैं उनमें रक्षा करनेवाला मालिक कौनहै १२ फिर तिनमायावी राक्षसोंका वध राम कैसेकरेंगे व हम हमारी सेना उनको कैसे मारेगी १३ हे भगवन् सब आप हमसे कहिये कि तिनदुष्ट भाववाले राक्षसोंके साथ रणमें हम कैसेलड़ेंगे क्योंकि राक्षसों में तो बड़ा पराक्रम होताहै १४ राजाके ऐसे वचन सुन विश्वामित्रजी बोले १५ कि पुलस्त्य मुनिके वंशमें एक रावण नाम राक्षस आजकलहै उसको ब्रह्माजीने वरदान दिया है इसलिये वह तीनोंलोकों को पीड़ित कररहाहै १६ सुनाहै किवह महाबलवान् महा सेनावान् बहुत राक्षसों के संग रहताहै व सब राक्षसोंका स्वामीहै १७ व साक्षात्कुबेर का भाई विश्रवामुनिका पुत्रहै जब वह अनादर के मारे कि छोटे२ यज्ञ में अपने वृते क्या बिगारूं यह विचारताहै तो १८ मारीच सुबाहु दोनों को भेजदेताहै कि वे यज्ञ में विघ्न करने लगतेहैं १६ जब मुनिने ऐसा कहा तो

राजा मुनिसे बोले कि हमतो तिस दुष्टात्मा रावण के संग समर करने को नहीं खड़े होसक्ते २० तिससे हमारे इस छोटे से बालक पै कृपा कीजिये हे धर्म्मज्ञ अल्प भाग्य जोमैं तिसके ऊपर भी दयाकीजिये क्योंकि आप हमारे गुरू व देवताहैं २१ जब कि देवता दानव गन्धर्व्व यक्ष पतंग सर्प्पादिकोई भी रावणका बल नहीं सह सक्ते तोहम मनुष्यों की क्या गणनाहै २२ क्योंकि संग्राम में वह रावण सामने आनेवाले योधा का बल खींचलेताहै इससे न हमीं उससे लड़ सक्तेहैं न हमारी सेनाही न हमारे पुत्रही न हम सेना पुत्र सबको संग लेहीकर उससे लड़ सक्ते हैं न हमारे पुत्रों को ले आपही रावण के सेवक मारीचादिकों से लड़ सक्ते हैं २३ फिर चाहे आप में लड़ने की सामर्थ्य हो हम किसी प्रकार से भी देवसमान रूप संग्राममें अचतुर वाल्यावस्था को प्राप्त छोटे से लड़के को राक्षसों से लड़ानेको नदेंगे चाहे जोहो २४ कहां वे काल समान सुन्दोपसुन्द नाम राक्षसों के पुत्र तुम्हारे यज्ञ के विघ्न करनेवाले मारीच सुवाहु राक्षस कहां हमारा किनका भरकाबालक हमतो न देंगे २५ ॥

दोहा ॥

राक्षस तनया में दनुज कुलज सुन्द उपसुन्द ।
सों मारीच सुवाहु भे अतिबल शिक्षि न कुन्द ॥ १ ॥ २६ ॥
तिनहिं छोड़िजासों कहहु लड़ब सहित परिवार ।
नहिं तो चलब मुनीश अनु पठउब राजकुमार ॥ २ ॥ २७ ॥
इमि नृपजल्पन सों मुनिहिं आयहु क्रोध अपार ।
जिमि पावकमहं घृत परत ज्वलितहोत न सँभार ॥ ३ ॥ २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीये बालकाण्डेविंशस्सर्गः ॥ २० ॥

अति स्नेहसाने राजाके ऐसे वचनसुन दशरथजीसे सहित कोप मुनिराज बोले १ हेराजन् प्रथम तो कह दिया कि जो मांगोगेदेंगे अब उस प्रतिज्ञाको छोड़ा चाहतेहो यह बात रघुवंशी राजाओं के लिये बनाय अयोग्यहै व ऐसे वचनोंसे इस वंशका नाशहोतो क्या आश्चर्य्यहै २ अच्छा जो तुम्हें यही अभीष्टहै तो हम ज्योंके त्योंहीं चलेजायँगे तुम अब अष्ट

प्रतिज्ञहोके सब इष्टमित्रोंके साथ सुखीहो ३ इतना कह महात्मा बुद्धिमा-
न विश्वामित्रजी ने ऐसा कोपकिया कि सब पृथिवी चलायमान होगई
व देवता लोगों तक भयपहुंची ४ कहांतक कहें जब महामुनि वसिष्ठजी
ने देखा कि सब संसार मुनिके कोपसे कम्पायमानहो रहाहै तो राजासे
बड़ी धीरताके साथबोले ५ हे राजन् आप इक्ष्वाकु वंशियोंमें उत्पन्न मानों
साक्षात् दूसरे धर्म्महीहैं सबप्रकारकी धारणा ईश्वरने तुमको दी हैं सब
आचरण ठीकहैं किसी बातकी कमतीनहीं सबशोभा विद्यमानहै इसलिये
धर्म्म छोड़नेके योग्य नहींहो ६ हे राघव आप तीनों लोकोंमें धर्म्मात्मा
करिके प्रसिद्ध हैं इससे अपने धर्म्मको प्राप्त हूजिये अधर्म्म न मूंड़ेपर
लीजिये ७ हे महाराज ऐसा करेंगे इसबातकी प्रतिज्ञाकर फिर जो नहीं
करता उसके जितने अश्वमेधादि यज्ञहोते व वापी कूपादि खोदाने की
पुण्यहोती सबनाश होजातीहै तिससे रामचन्द्र को मुनिके साथ पठाइये
८ चाहे रामचन्द्र अस्त्रविद्या पढ़ेहैं चाहेनहीं पढ़ेहैं पर विश्वामित्रजी इनके
रक्षकहैं कि जैसे कहीं अमृतकी रक्षा अग्निकरै तो कोई उसके निकट जाय
नहीं सक्ता इसीरीतिसे राक्षस रामचन्द्रका तेज न सहसकेंगे ९ फिरयह
नहीं कि ये रामचन्द्र केवल विश्वामित्रहीके तेजके भरोसेहों नहीं मानों
ये शरीर धारण कियेहुये धर्म्महीहैं व जितने महाप्रतापी हैं उनमें सबसे
श्रेष्ठ यहीहैं लोकमें सब विद्याओंमेंभी अधिक यहीहैं सबबातोंके बिचारने
में भी एकही हैं ये सबगुण विश्वामित्र में भी हैं १० फिर ये रामचन्द्र
चराचर तीनों लोकोंमें अस्त्र शस्त्र भी बिबिध प्रकार के जानते हैं इन
को न कोई पुरुष जोकि विद्यामें निपुण नहींहै जानताहै न कोई जानेंगे
११ देवता ऋषि राक्षस गन्धर्व यक्ष किन्नर बड़ेर सर्प्प कोई भी राम-
चन्द्र व विश्वामित्र के प्रभाव को नहीं जानसक्के १२ फिर विश्वामित्र
तो आप ऐसेहैं कि प्रजापतियों में जो एक भृशाश्व नाम प्रजापति हुये
हैं वे जब राज्य करनेलगे तो शिवजीने अति दुर्ज्जय अस्त्र शस्त्र रूप
पुत्रदिये वहीसब विश्वामित्रजी को मिले १३ वे भृशाश्वजी के पुत्र प्र-
जापतिकी कन्याओं के पुत्रहैं व अनेकप्रकार के हैं व महापराक्रमी तेजस्वी
सबको जीतनेमें समर्त्थहैं १४ वे जया व सुप्रभा दोकन्या दक्षप्रजापतिके
हुईं तिनदोनों ने सैकरों शस्त्र अस्त्र उत्पन्नकिये १५ उनमें जयाके ५००

शस्त्ररूप पुत्रहुये जोकि असुर सेनाके मारनेमें अति श्रेष्ठ जिनको कोईभी न रोंकसकै ऐसे अमित प्रभाव पुत्रहुये १६ सुप्रभाकेभी ५०० पुत्र शस्त्रास्त्ररूपही हुये जिनका संहार ऐसा नामहुआ जिनको कोई भी शत्रु नहीं सहसक्ते जलानेमें निष्फल कभी नहींहोते व महा बलवानहुये १७ तिन सब शस्त्रास्त्रोंको विश्वामित्रजी जानतेहैं उनकेसिवाय और नये २ अद्भुत शस्त्रास्त्र अपने तप प्रभावसे बनासक्तेहैं १८ तिससे हे राजन् इन धर्म्मात्मा महात्मा मुनियों में मुख्य विश्वामित्र जीको संसारमें ऐसाकोई पदार्थ भूत भविष्य वर्त्तमान में नहीं जिसे येजानते नहीं १६ हे राजन् जबकि विश्वामित्र जी ऐसे तेजस्वी व प्रतापीहैं तो इनकेसङ्ग रामचन्द्र के जानेमें आप संशय करनेके योग्य नहींहो २० ॥

दोहा ॥

सकल निशाचर वध करण शक्ति मुनीश्वर माहिं ।
जिन धनु धारण किय सुरप समर डरत सक नाहिं ॥ १ । २१ ॥
तवसुत हित तव निकट चलि मांगये तनय तुम्हार ।
नहिं तो मुनिवर करि सकत सबराक्षस संहार ॥ २ । २२ ॥
इमिमुनि वचसुनिमुदित नृप रघुवरगमन स्वहान ।
गाधितनय के संग सब क्है हैं सुख यह जान ॥ ३ । २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीये बालकाण्डेएकविंशस्सर्गः ॥ २१ ॥

जब बसिष्ठजी ने ऐसा कहा तो प्रसन्न मुख हो राजादशरथ अपने आप सहित लक्ष्मण रामचन्द्र को बुलालाये १ चलने के समय प्रथम तो कौसल्यादि मातों ने नानाभांति के स्वस्त्ययनादि किये फिर पिता दशरथजीने तदनन्तर कुलपूज्य वसिष्ठजीने सब मंगलाचरण किये २ तब महाराज परम धार्म्मिक दशरथजी ने राम लक्ष्मण दो भाइयों का मूड़ सूंघि प्रसन्नचित्त हो विश्वामित्रजी को देदिया ३ जब राजीवलोचन भय भय मोचन रामचन्द्रजी विश्वामित्रजी के संगचले तो धूलि रहित साफ सुखदायी पवन चलने लगी ४ व आकाशसे देवोंने दुन्दुभी बजाये २ गाय २ अतिहर्षाय फूलोंकी बर्षाकरी यहांभी शङ्ख नगारे आदि बाजने लगे ५ आगे २ विश्वामित्र मुनिचले तिसके पीछे महाराज कुमार पर-

मोदार रामचन्द्रजी जुलफें रखाये धनुर्व्वाण धारणकियेचले तिसके पीछे वैसेही लक्ष्मणजी चले ६ दोनोंभाई दो २ तरकस कांधेमें डारे हाथ में धनुर्व्वाण लिये दशो दिशोंको शोभित करतेहुये विश्वामित्रजीके पीछे २ चले ७ मानों पांच शिरके सर्प्प हैं जैसे कि ब्रह्माजी के साथ अश्विनी-कुमार चलके शोभित होतेहैं तिससमय विश्वामित्रके पीछे २ सब भूषण पहिरे धनुष हाथ में लिये ८ गोहके चर्म्मसे अंगुलि त्राण बनाये खड्ग धारण किये महा तेजस्वी राम लक्ष्मण दोनों भाई अति मनोहर रूप ९ चले जातेथे उस समय ऐसे शोभित होतेथे मानों महादेवजी के पीछे जातेहुये षडानन व बिशाखजी हैं १० जब अयोध्या से दोकोशपै सरयूके दक्षिण किनारेपै पहुंचेतो बिश्वामित्रजीरघुनन्दनसे मधुरबाणी बोले ११ हे वत्स आचमन कीजिये व स्नान करिये जिसमें जूनकुजून न होजाय १२ तिसके पीछे आवो तुमको वला अतिवला दो विद्या पढ़ावें जिनके पढ़नेसे न तुमको कुछ कार्य्य करनेमें कुछ श्रमहीं परेगा न कभी ज्वरादि रोगही होंगे न कभी रूपका बिवर्णतादिही होगी १३ व उन विद्याओं से रक्षित रहनेसे चाहे कभी किसी कारण चित्त को बिकलता भी होजाय पर राक्षसादि दुष्ट कुछभी न करसकेंगे व न तुम्हारी बाहोंके आगे तीनों-लोक में कोई अपना पराक्रमहीं देखा सकेगा १४ इन वला अतिवला दोनों के ग्रहण करनेसे तुम्हारे सदृश तीनोंलोकों में कोई न ठहरेगा १५ यह नहीं कि केवल संग्रामही करने में तुम्हारे समान तीनोंलोकों में न ठहरे नहीं न कोई सौम्य स्वभावहीमें तुम्हारे समान होगा न कुशल-तामें व ज्ञानमें व बुद्धिकी निश्चयतामें न उत्तर देनेमें १६ ये वला अति-वला दोनों विद्या सबज्ञानोंकी माताहैं इससे इनके पढ़नेसे कोई तुम्हारे समान न होगा १७ फिर हे राम इन दोनोंके पढ़नेसे गलीमें तुमको भूख प्यास भी न लगेगी १८ हे रघुनन्दन इन विद्याओंसे केवल तुम्हाराही प्रयोजन नहीं बरन सब लोगोंकी रक्षाके लिये इन्हें अंगीकार कीजिये इनके पढ़नेसे पृथिवीमें तुम्हारा यशभी होगा १९ क्योंकि ये ब्रह्माजीकी बनाई हुई हैं इससे उनकी कन्या कहातीहैं इसीसे उनमें विशेष तेज है सो हम तुमको देंगे क्योंकि इनके ग्रहण करने के योग्य तुम्हीं हो २० यद्यपि सौभाग्य सुशीलादि गुण तुममें प्रथमहीं से यथेष्ट हैं इसमें

सन्देह नहीं तथापि जो तुम तपस्याके साथ इनको ग्रहणकरोगे तो तुमसे बहुतलोग सीखेंगे इससे इनका बड़ा प्रचारहोगा व बहुतरूपहोजायँगे २१॥

दो० यह सुनि करि आचमन रघु नन्दन समुद पवित्र ॥
हुवे विद्या मुनिसों पढ़ी जो सब भांति विचित्र १।२२
विद्यालहि बहु विक्रमी शोभित भे रघुनाथ ॥
शरद पाय जिमि शोह रवि किरणसहस के साथ २।२३
पद सम्बाहन आदि गुरु क्रिया सकल करि राम ॥
सरयू तट मुनि अनुजयुत निशिकिय शयअभिराम ३।२४
कौशिकलालित तृण शयन दशरथ सुत कियबास ॥
यदपि उचित आसन नहीं तदपि निशा सुख रास ४।२५

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डे द्वाविंशस्सर्ग्गः ॥२२॥

जब रात्रि बीत गई प्रातःकालहुआ तो महामुनि विश्वामित्रजी पत्तों के बिस्तरा पै सोते हुये श्रीरामचंद्रजीसे बोले १ हे नरशार्दूल कौसल्या जी सुपुत्रवती हुईहैं अब प्रातःकाल की सन्ध्या आई उठिये प्रातस्मरणादि आह्निककर्म्म कीजिये २ तिसऋषिके परमउदार ऐसे वचन सुन राम लक्ष्मण दोनों भाई स्नान कर ऋषियों का तर्प्पण कर कराय परब्रह्म परमात्माको जपने लगे ३ तिसके पीछे सब सन्ध्यावन्दनादिकर मुनिराज तपोधन विश्वामित्रजी के प्रणाम कर प्रसन्नमनहो चलने के लिये सम्मुख खड़े हुये ४ व चले चलते २ वहां पहुंचे जहां गंगा सरयू का संगम है ५ तहां ऋषियों का आश्रम देखा जोकि हजारों बर्ष से परम तपस्या कर रहेथे ६ तिस पुण्यदायक आश्रम को देख परमप्रीति से महात्मा विश्वामित्रजी से बोले ७ हे भगवन् यह किसका पुण्यरूप आश्रम है व इसमें कौन पुरुष बसता है इसके सुनने की हम दोनों जनों की बड़ी इच्छा है ८ दोनों जनोंके ऐसे वचन सुन हँसके मुनिराज बोले हे राम जिसका यह प्रथम का आश्रम है बतातेहैं सुनिये ९ कन्दर्प्प जिसे पण्डितलोग काम ऐसा नाम कहते हैं वह आगे मूर्तिमान् था जैसे सब के हाथ पैर होते हैं उसके भी थे यहां नियमपूर्व्वक महादेवजी एक समय तपस्या करते थे १० जब कि उन्होंने अपना विवाह कियाथा व

सब देवों के साथ विवाह कियेहुये चलेजातेथे कि आय दुष्टकाम ने चाहा कि महादेवजीको भी सतावें पर वहां उसका बल कहांचल सक्ताहै उन्हों ने अपने नयनखोल हुम् यह शब्द करदिया ११ व उसकीओर क्रोधदृष्टि से निहारा कि उसके शरीरसे सब अंग अलग २ गिरके भस्मीभूत होगये १२ जब महादेवजी की कोपदृष्टि से काम के सर्वांग भस्म होगये तबसे वह बिना शरीर का होगया १३ व तभी से इसका अनङ्ग नाम पड़ा जब शिवजी के कोप से भयभीत हो काम भागा था व जाय उसके अङ्ग जहां शरीर से अलग हो गिरे वही अङ्गदेश कहाने लगा १४ सो यह तिसी महादेवजी का आश्रम है व ये सब मुनि भी आगेही से उनके शिष्य होते चले आये हैं इसीसे सबके सब धर्म्म में परायण हैं व किसी के पाप नहीं हैं १५ इससे इन दोनों पुण्यनदियों के बीच में इस स्थान पै आज रात्रिभर निवास करेंगे १६ चलो प्रथम स्नानादि कर पवित्र होलें तो इस पुण्य आश्रमपै चलें व सुखसे रात्रिभररहें क्योंकि इस अङ्गदेशमें हम लोगोंका बास अच्छाहोगा स्नानकरने के पीछे अपना नित्यनैमित्तिक होमादि भी करलेंगे मन्त्र भी जपेंगे १७ इन सब जनोंकी ऐसी बतकही सुनबड़ी तपस्याके प्रभावसे इनको जान मुनिलोग बड़ेप्रसन्न हुये १८ प्रथम अर्घ्य पाद्याचमनीयादि विश्वामित्रजी को दिया पीछे राम लक्ष्मण दोनों भाइयोंकी अतिथिक्रिया करी कराई १९ ॥

दो० मुनिहु कुशल पूंछी कही तिनहुं कथा बहु भाँति ॥
सब सन्ध्या गायत्रि जप करन लगे गुण पाँति १।२०
तहँ निवसतजो मुनिनिकर तेलाये निज धाम ॥
राम लषन कौशिकमुनिहु ससुख बसे थलकाम २।२१
कही कथा अभिराम बहु नृपति सुतनसों राति ॥
कौशिकमुनि जासों रमित रघुबर दुष्ट अराति ३।२४

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डे त्रयोविंशस्सर्गः ॥२३॥

इसरीतिसे जब प्रातःकाल हुआ तो विश्वामित्रजीको आगेकर दोनों भाई गंगाजीके किनारे पहुंचे वहां प्रातस्स्नानादिक क्रिया करीकराई १ व सब मुनिलोग एक बहुत उत्तम नाव लाय विश्वामित्र जीसे बोले २

कि आप राजकुमारों के साथ नाव पर चढ़िये जिसमें सुखपूर्व्वक मार्ग्ग चलिये बिलम्ब न कीजिये ३ विश्वामित्रजी तथा कह उन ऋषियोंको पूंछ पाँछ राम लक्ष्मणको संग ले गंगापार उतरे ४ जब बीच नदीमें नाव पहुंची तो सरयू व गंगाजीके जलके एक में अति बेगसे लगनेसे जो शब्द होरहाथा रामचन्द्रजीके मनमें आई कि इस शब्द के होनेका कारण पूंछें यह बिचार अपने छोटेभाई लक्ष्मणजीसे भी जनाया कि उनकोभी उसके जाननेकी इच्छा हुई ५ तब नदी के बीचहीमें रामचन्द्रजी ने विश्वामित्रजीसे पूंछा कि इन दोनों जलोंके एक में लगनेसे यह बड़ा शब्द क्यों होताहै ६ एक बड़ी रुचिके साथ रामचन्द्रके वचन सुन विश्वामित्रजी तिस शब्द होनेका कारण कहने लगे ७ हे राम कैलास पर्व्वतपै ब्रह्माजीने अपने मनसे एक ताल बनायाथा तिसीकारण उसका मानससर नाम है ८ तिस मानससर से सरयू नदी बहीहै जो कि अयोध्याके निकट हो चली आईहै व जिससे ब्रह्माजी के सरसे निकलीहै तिससे अतीव पुण्यदायक है ९ सो उसी सरयू नदी का यह जल बड़े बेगसे आय गंगाजीमें इस स्थान पै मिलताहै वही यह बड़ा कोलाहल शब्द होरहाहै आप इसस्थानपै चित्त लगाय दूनों नदियों के प्रणाम कीजिये १० इतना सुन दोनों भाइयोंने दोनों नदियोंके प्रणाम किया व नाव दक्षिण के किनारे पै पहुंची उससे उतर दोनों भाई बहुत शीघ्रताके साथ आगे चले ११ जाते २ एक अति भयानक बन देख पड़ा जिसमें पानीका कहीं सञ्चारभी नथा उसे देख श्रीरामचन्द्रने मुनि से पूंछा १२ कि यह बनतो बड़े दुःखसे जाने के योग्यहै क्योंकि ठौर ठौर झींगरोंका शब्द होरहाहै दुष्ट बनजीव सिंह व्याघ्रादि घूम रहे हैं बाज दारुण शब्द कर रहेहैं १३ अन्यभी नाना भांतिके पक्षी भयंकर शब्द करतेहैं सिंह व्याघ्र शूकर व हाथीभी इसमें भरेपड़ेहैं १४ फिर खैर असगन्ध कुम्भी वेल त्यँदुआ पाड़रि व बेर आदि नानाप्रकारके वृक्ष बड़ी गझिनता के साथ लगेहैं यह ऐसा दारुणबन कहांसे मिला व किसका है १५ विश्वामित्रजी बोले हे वत्स रघुनन्दन सुनिये बतातेहैं जिसका यह दारुण बनहै १६ यहां पर आगे सब धनधान्य सहित मलद व करुष देश बसतेथे जिनकी बसती देवलोक के समान सब रीतिसे भरीपुरी

रहती १७ आगे जब इन्द्रने वृत्रासुरको माराथा तो मारे मलके व भूंख प्याससे इन्द्र व्याकुल फिरतेथे कि ब्रह्महत्या उनके ऊपर आई १८तब देवता व ऋषिलोगोंने उनको गंगाजलसे स्नानकराय फिर मंत्रोंसे पवित्र कर कलशोंमें जल भर २ नहवाया जिससे कि उनका मल व कारूष जो क्षुधाहै सो सब छूटगई १९ इन्द्रजी इस देशमें अपना मल व कारूष छोड़के ब्राह्मण वृत्रासुरके मारनेकी हत्या मिटाय परमानन्दित हुये २० और देवतालोग भी इस कार्य्यसे अति हर्षित हुये २१ जब इन्द्रजी निर्म्मलहो सुवर्णके समान पवित्रहो झलकने लगे तो इसदेशके ऊपर प्रसन्नहो वरदान देनेलगे २२ कि ये दोनोंदेश सबधनधान्य सहित सदा बने रहें व हमारे अंगोंके मल व कारूष धारण करनेसे मलद व कारूष के नामसे प्रसिद्धहों २३ इनदेशोंकी इन्द्रकी करीहुई ऐसी पूजा देख सब देवगण इन्द्रसे अच्छा२ कहनेलगे २४ इसीसे ये दोनोंदेश मलद वकारूष बहुत दिनोंसे धनधान्यसहित चलेआतेहैं २५ कुछ समय बीतनेके पीछे एक यक्षिणी स्वेच्छाचारिणी यहां हुई जन्मतेही इसके हजार हांथियों का बलहुआ २६ नाम इसका ताटकाहै हे राम तुम्हारा कल्याण हो ऐसा कीजिये कि इस दुष्टा ताटकासे भय न हो यह सुन्दनाम दैत्यकी स्त्री है व इन्द्र समान पराक्रमी मारीचनाम राक्षस इसीका पुत्रहै इस राक्षस केबड़े२ बाहु बड़ाभारी मूंड़ अति भारीमुहँ व सब देहहै इससे महाभयानक रूप यह राक्षस नित्य२ प्रजाओं को व्याकुल किया करताहै २८ सो वह ताटका नामयक्षिणी जिसका पुत्र मारीच बताया हेराम इन मलद करूष दोनों देशोंको दुष्टा प्रतिदिन नाश करतीहै २९ सो इस गलीकोरोंके हुई यहांसे दोकोश पै परीहै इससे अवश्य ताटकावनको चलनाहै ३० ॥

दो० निज भुज बलसों रामत्यहि दुष्टताटकहि आजु ॥
मम निदेश सों हतहु सुखप्रदकरि देश निवाजु १ । ३१
जासों घोर असह्यसो बसत यक्षिणी राम ॥
नहिँ कोउजन यहि देशमहँ आयसकत युतकाम २ । ३२
जिमि यहबन दारुण सभय तुमसन कहा खलारि ॥
व्यथित ताडकासों रहत सुखित करहु त्यहि मारि ३ । ३३

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डे चतुर्विंशस्सर्गः ॥ २४ ॥

महात्मा अमितप्रभाव विश्वामित्रजीके ऐसेउत्तम बचनसुन पुरुषसिंह श्रीराम अति मनोहर बचन बोले १ हे मुनिराज यक्षिणी तो थोड़ेही बलकी सुनी जातीहै फिर यह स्त्री सहस्त्र गजोंका बल कैसे धारण करती है २ अमित पराक्रम श्रीराम के ऐसे बचन सुन मधुरबाणी से दोनों भाइयों को हर्षित कराते हुये ३ विश्वामित्रजी बोले कि जैसे वरदान पाय यह अबला ताटका बलवती हुई मारे बलके सब को कष्ट देतीहै सुनिये ४ पूर्व्वही एक महापराक्रमी सुकेतु नाम यक्ष हुआ यद्यपि बड़ा शुभाचारी था पर उसके कोई सन्तति नहीं थी इससे उसने बड़ी तपस्याकी ५ तबउस यक्षाधिराज के ऊपर ब्रह्माजी बहुत प्रसन्नहुये व ताटका नामकन्या रत्न वरदान दिया ६ उसकन्याको हजार हाथियों का बलभी दिया ब्रह्माजी महायशस्वी सर्व्वज्ञ तो हैंही हैं इस बिचारसे किजो ऐसा बलवान् पुत्रदेंगे तोवह देशके देश उजार देगा यह स्त्री कहां तक दुष्टता करेगी इसलिये पुत्र नहीं दिया ७ सुकेतु प्रसन्न हो अपने घरआये जब बाढ़ते२ कन्या रूपयौवनको पहुंची तो जम्भासुर के पुत्र सुन्दके साथ बिवाह करदिया ८ कुछ कालबीत उस यक्षकुमारी ताटकाने मारीचनाम पुत्र उत्पन्न किया जो कि शापसे राक्षस हुआ ६ जब इसके पिता व ताटकाके पति सुन्दको अगस्त्यजीने शापदे मारडारा तो अपने पुत्र मारीच के साथ ताटका अगस्त्यजीको दौरी १० जब अगस्त्यजीने देखा कि अति विकराल गर्ज्जती हुई ताटका हमको खानेके बिचारसे दौरी आतीहै ११ तो मारीचको तो यहशाप दिया कि तू जाय राक्षसता को प्राप्तहो बड़े क्रोधके साथ ताटका कोभी शापदिया १२ कि जा तेराभी यह सुन्दर स्वरूप न रहै किन्तु पुरुषोंके खानेवाली अति विकराल स्वरूपिणी होजाय १३ सो इस शापके कारण मारेक्रोध के ताटका इस देशको उजारे देतीहै क्योंकि अगस्त्यजी इसी देशमें तपस्या करतेथे १४ तिससे हे रामचन्द्र इस दुराचारिणी परमदारुण दुष्टपराक्रम दुष्टस्वभाव ताटका को गाय ब्राह्मणोंकी रक्षाके लिये मारिये १५ क्योंकि आपको छोड़ तीनोंलोकोंमें अगस्त्यजी के शापसे भरी हुई इस दुष्टाको कोई पुरुषनहीं मारसक्ता १६ हे रघुनन्दन देखना यह न बिचारना कि स्त्री बधकरनेसे महापाप होताहै हम इसको क्या

मारें नहीं चारो वर्णों की रक्षाके लिये राजकुमार को चाहिये कि जो स्त्री के कारण किसीको दुःख पहुंचताहो तो स्त्री कोभी बधकरै दोषनहींहै १७ चाहै क्रूरस्वभाव कोईहो वा सौम्य स्वभावहो चाहै उसके मारनेमें बहुत पापहों वा उससे कोई बड़ा अपवादहो पर जो सज्जनोंकी रक्षाकर रहाहै उसे चाहिये कि प्रजाकी रक्षाके हेतु अपकारी को मारही डारे १८ यह जिनके ऊपर राज्यका भारलदाहै उनका सनातन धर्म्महै इससे इस धर्म्महीन ताटका को मारिये इसके रक्षक भी धर्म्म नहींहै १९ जो ऐसीदुष्ट स्त्रियोंके मारने में प्रजापालकों कोभी दोषहोता तो सुनतेहैं कि आगे बिरोचन दैत्यराजकी कन्या जिसका मन्थरानाम था वह पृथिवी भरको नाशना चाहतीथी इन्द्रने उसे मारडारा काहेको मारते २० इसके सिवाय भृगुमुनि की पतिव्रता स्त्री शुक्राचार्य्य की माता जो इन्द्र-रहित लोक चाहती थीं उन्हें श्रीविष्णुजी ने मार डारा इसकी ऐसी कथा है कि एक समय देवगणों के शिषाने के लिये शुक्राचार्य्य महादेवजी के पास तपस्या करनेगये उन दिनों में देवोंने दैत्योंको बहुत तंग किया तो दैत्यलोग शुक्र की माता के शरणागत हुये उन्हों ने चाहा कि हम सब देवों को मार डारें यह जान इन्द्र ने श्रीविष्णु की बड़ी प्रार्थनाकी कि उन्होंने आय शुक्र की माता को मारडारा २१ ॥

दो० इन्हें आदि बहु राजसुत रहे महात्मा लोग ॥
जिन अधर्म्म रत नारिगण मारे लहे न शोग १ । २२
तासों छोड़ दया महिप मम निदेशसों याहि ॥
बध करिये धरिये न अब आन बात मन माहि २ । २३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेपञ्चविंशस्सर्गः ॥ २५ ॥

विश्वामित्रजीके ऐसे ढीठ वचन सुन महाराजकुमार श्रीरामचन्द्र हाथ जोर बोले १ कि हमारे पिताकी आज्ञा है कि कौशिकमुनिके वचन निस्सं-देह करना सो पिताके वचनके गौरवसे २ हम आपके वचनका अनादर कभी न करेंगे यह आज्ञा जब आप के सङ्ग हम को भेजने को थे तब अयोध्याजी में वसिष्ठ बामदेवादि मुनियों के सामने महात्मा पितादशरथ जीने दीथी ३ सो हम पिता के वचन सुन व वेदवादी महात्मा आपकी

आज्ञा से ताटका बध अवश्य करेंगे ४ गाय ब्राह्मणों के हित के लिये व देश के हित के अर्थ व आप महात्मा की आज्ञा से अब हम इसका बध करते हैं ५ यह कह श्रीरामचन्द्रजी ने धनुष की प्रत्यञ्चा को ऐसा टङ्कारकिया कि उसके शब्दसे सबदिशा शब्दायमान होगईं ६ व तिसी शब्द से सब ताटका वनके बासी भयभीत हुये ताटका भी तिस शब्द से मोहित हो अतिक्रुद्ध हुई ७ उस शब्दको सुन मारे क्रोध के मूर्च्छित हो जाय वहीं पहुंची जहां कि शब्द हुआथा ८ तिसको अति क्रुद्ध महाविकराल रूप अति विकराल मुख बड़ी लम्बी चौड़ी देह धारण किये देख आनन्दकन्द रघुनन्दन लक्ष्मणजीसे बोले ९ हे लक्ष्मण इस यक्षिणी का भयङ्कर व विकराल शरीर देखो तो जिसके देखनेही से कातरोंके हृदय फटजातेहैं १० इस माया बलसहित बड़े कष्ट से नगिचाने वाली दुष्टा को देखो तो इसको अभी कान नाक काट लौटारे देतेहैं ११ क्योंकि आखिर तो स्त्रीही है और स्त्री की रक्षाही करनी ठीक है इससे इसे बनाय मारतो नहीं सक्ते पर हाँ इसका पराक्रम व गति अवश्य मिटा दें कि अब किसी के ऊपर दौरने की शक्ति न रहे यह हमारा बिचार है १२ रामचन्द्रजी लक्ष्मण से ऐसा कहतेही थे कि मारे क्रोध के मूर्च्छित ताटका हाथ उठाये गर्ज्जती हुई रामचन्द्रही के सामने दौरी १३ तैसेही ब्रह्मर्षिविश्वामित्रजी ने हुम् ऐसा शब्दकर उसे फटकारा व यद्यपि रामचन्द्र के अमितप्रभाव को जानतेभी थे तथापि बालक जान आशीर्वाद देने लगे कि दोनों भाई राजकुमारों की जयहो व कल्याण हो १४ यद्यपि मुनिराज ने बहुत कुछ फटकारा पर वह कब मानने वाली थी दोनों भाई राजकुमारों के ऊपर उसने ऐसी धूलि उड़ाई कि मारे अन्धकार से दो घड़ी तक मोहित होगये १५ फिर उतने समय तक अन्तर्द्धान हो पत्थरों की बर्षा करती रही तबतो श्रीरामचन्द्रजी ने क्रोध किया १६ वह जो पत्थर बरसाती थी उन्हें तो रघुनाथ जी ने बाण बरसाय २ काटडारा जब देखा कि अब फिर प्रत्यक्ष में दौरी आती है तो बाणों सेही दोनों हाथ भी उसके काट डारे १७ तबभी लक्ष्मणजी ने देखा कि अब इसके भुजा भी नहीं व थकभी गई है तथापि गर्ज्जती हुई सामने दौरतीही चली आती है इसलिये मारेक्रोध

के कान व नाक सब काट डारे १८ परन्तु वह यक्षिणी तो थीही जैसा चाहे वैसा रूप तो करही सक्ती थी इससे उसने अनेकरूप धारण किये फिर अपनी माया से मोहित करती हुई अन्तर्द्धान होगई फिर आकाश से पत्थर बरसाती हुई बिचरने लगी १६ जब विश्वामित्रजी ने देखा कि अब इन दोनों भाइयोंके चारोंओर पत्थरही पत्थर बरसरहे हैं इससे यह कहने लगे २० कि हे राम इसके ऊपर दया करने का कुछ भी प्रयोजन नहीं यह दुष्टचारिणी महापापिनी है व यज्ञकर्म्मों में विघ्न किया करती है अब माया से यह और बढ़ने चहती है २१ क्योंकि सन्ध्या होने चाहती है जिसमें कि राक्षस बड़े प्रबल होजाते हैं इसलिये सन्ध्या होने के प्रथमही मार डारिये २२ इतनाकह पत्थर बरसाती हुई ताटका को मुनिने उसके शब्द को सुन रामचन्द्रजी को देखादिया कि उन्होंने बाणावरी कर चारो ओर से एकही स्थानपै उसे रोंकदिया २३ जब बाणजाल से रघुनन्दन ने उसे रूँधा तो मायाविनी तो थीही अपनी माया के बल से अन्तर्द्धानता को छोड़ प्रत्यक्ष में हल्ला करती हुई रामचन्द्रके व लक्ष्मणके सम्मुख दौरी २४ जब श्रीराम ने देखा कि बड़े बेगसे बज्जूके समान दौरीही चलीआतीहै तो एक बाण छातीमें ऐसामारा कि अरराय भूमिपर गिरपरी व मरगई २५ इन्द्रजीने आय महाभयावनी सूरतवाली को मरी देख साधु २ किया व देवतालोगों ने भी बड़ी बड़ाई की २६ व परम प्रसन्नचित्तहो इन्द्र तथा परमानन्दित हो सब देवगण आय विश्वामित्रजी से बोले २७ हे मुनिराज आपका कल्याणहो इस कर्म्म से सहित इंद्र सब देवतालोग सन्तुष्ट हुये अब रामचन्द्रजी को कुछ विशेष स्नेह देखाइये २८ अर्थात् भृशाश्व प्रजापति के सत्यपराक्रम जो अस्त्र शस्त्र रूप पुत्र हैं जिन्हें आपने तपोबल से पूर्ण किया है वे सब राघव को दीजिये २६ क्योंकि ये इसके दानके योग्य हैं आपकी सेवा भी निश्चयके साथ करते हैं व देवों के सब बड़े २ कार्य करेंगे ३० इसरीति से विश्वामित्र जी की बड़ाई कर व ऐसा कह सब देवगण तो अपने २ लोकको चलेगये इतने में संध्या हुई ३१ तब परम प्रीति से ताटका के बधसे सन्तुष्ट मुनिदेव रामचन्द्र का शिर सूंघ यह बचन बोले ३२ हे राम यहां आज रात्रिभर निवास करेंगे फिर जब

प्रातःकाल होगा तो अपने स्थान पैं चलेंगे ३३ विश्वामित्र के वचन सुन सकलगुणधाम श्रीराम प्रसन्न हो रात्रिभर सुखपूर्व्वक उसी ताटका बनमें रहे ३४ ॥

दो० जादिन श्री रघुवर हनी खल ताटका तहाहिँ ॥
शापहीनबन भयहु त्यहि वासरसो सुखदाहिँ १
चम्पाशोक सुमल्लिका फूल उठे पुन्नाग ॥
अतिशोभितभोसकल बन सकलसराहतभाग २ । ३५
चूत पनस अरु पूगबन नारिकेल मुखशाखि ॥
शोभित बापी कूपसर सब सुखमातहँ राखि ३ । ३६
हेमकूट मण्डप विटप अरु मल्लिका सुहाहिँ ॥
मनहुं चैत्ररथ बन सुभग राजत रमणयहाहिँ ४ । ३७
वधि ताटकहिसुसिद्ध मुनिजनन प्रशंसितराम ॥
शयन कीन मुनिअनुजयुत भोर जगे गुणधाम ५ । ३८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये वालकाण्डेषड्विंशस्सर्ग्गः ॥ २६ ॥

तिस रात्रिको तहां निवासकर महायशस्वी विश्वामित्र मंद २ हँस श्री रामचन्द्रजीसे मधुर वचन बोले १ हे राजकुमार महा यशस्वी श्रीराम हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्नहुये परम प्रीति से सब प्रकार के अस्त्र तुमको देंगे २ जिनसे सब देवता दैत्य गन्धर्व्व नागादिकों को समर में अपने वश कर जीतोगे ३ सो सब दिव्य अस्त्र वा महादिव्य दण्डचक्र तुमको देते हैं ४ फिर धर्म्मचक्र कालचक्र विष्णुचक्र इन्द्रचक्र ५ बज्रास्त्र शिवशूल ब्रह्मशिरोऽस्त्र ऐषीकास्त्र ६ सर्व्वोत्तम ब्रह्मास्त्र कौमोदकी व शिखरी दो गदा ७ अति देदीप्यमान धर्म्मपाश व कालपाश ८ बरुणपाश बरुणास्त्र सुष्क व आर्द्र नामक दो बज्र ९ महादेवास्त्र नारायणास्त्र शिखर नाम आग्नेयास्त्र १० मथननाम वायव्यास्त्र हयशिरोनाम अस्त्र क्रौंचास्त्र ११ विष्णुशक्ति शिवशक्ति असुरों के धारण करनेलायक कङ्काल नाम कठोर मुशलकापाल नाम कङ्कण १२ जो २ राक्षसोंके मारनेके योग्यास्त्र हैं १३ नन्दन नामविद्याधरास्त्र खड्ग रत्न जिससे सबखड्ग उत्पन्न होते हैं १४ गन्धर्व्वास्त्र मानवास्त्र

प्रस्वापन कि जिसके चलानेसे शत्रु सोने लगतेहैं प्रशमनास्त्र १५ वर्षण शोषण सन्तापन बिलापन कन्दर्प्पदेवताका मदनास्त्र १६ पिशाचास्त्र मोहनास्त्र १७ तामस सौमन साम्वर्त्ता मुशलास्त्र १८ सत्यास्त्र मायाधरास्त्र परारे तेजको खींचनेवाला सूर्यका तेज जिसका प्रभानाम है १६ शिशिर नाम सोमास्त्र सुदामन नाम त्वाष्ट्रास्त्र भगदेवताका दारुणास्त्र मानवनाम शीतास्त्र २० हे राम हे महाबाहु स्वेच्छाचारी महाबल परम उदार इतने अस्त्र बहुत ही शीघ्र ग्रहण कीजिये २१ यह कहपवित्रता के साथ पूर्व्वकी ओर मुखकर मुनिराजने प्रसन्नता सहितसबमन्त्रसमूह रामचन्द्रजी को दिये २२ तिन सब अस्त्रोंका ग्रहण करना देवताओं को भी दुर्लभ है पर विश्वामित्रजी ने रामचन्द्रजी को सब मन्त्रास्त्र दिये २३ जैसेही सब मन्त्रास्त्रोंको विश्वामित्रजी स्मरण करनेलगे तैसे ही सबके सब अपना २ रूप धारण कर श्री रामचन्द्रजी के आगे खड़े हुये २४ व सबके सब हाथ जोर २ बोले हे राम परमोदार हम सब आपके सेवक हैं २५ जो २ आप इच्छा करेंगे हम सब करेंगे यह सुन श्रीरामचन्द्रजी परम प्रसन्नहुये २६ व सबको ग्रहण कर एक २ को अपनेकरकमल से स्पर्श किया व कहा कि हे अस्त्रो तुमहमारे मानसीहो जावो जबहम चाहें तब प्रकट होजायाकरो फिर मनमें टिके रहौ २७॥

दो० ह्वै प्रसन्न रघुनाथ तब कौशिकसों करजोरि ॥
करिप्रणाम कह चलनहित वचन मुनीश निहोरि १।२८

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे सप्तविंशस्सर्ग्गः॥ २७॥

सब अस्त्र ग्रहण कर प्रसन्न मुख हो चलने के बिचार से विश्वामित्रजी से श्री रघुनन्दन बोले १ हे भगवन् आपकी कृपासे सब अस्त्र तो हमने ग्रहण किये पर हम चाहते हैं कि इनका संहार भी बतादीजिये जिसमें किसीके ऊपर चलावें काम होजाने पर फिर अपने पास मन्त्रों के बलसे मँगालेवें २ जब श्रीरामभद्र जी ने ऐसा कहा तो महातपस्वी विश्वामित्रजी ने अस्त्र संहार करने की युक्तिबताई ३ व प्रसन्नहो अन्य मन्त्रास्त्र जो प्रथम कहनेको रहगयेथे वे भी श्रीरामचन्द्रजी को बतानेलगेजैसेकि सत्यवान् सत्यकीर्त्तिधृष्ट रभसप्रातिहारतर परांमुख

अवांमुख४ लक्ष्य अलक्ष्य दृढ़नाम सुनामदशाक्षशतमुख दशशीर्षशतोदर५ पद्मनाभ महानाभ दुन्दुभिनाभ सुनाभ ज्योतिष शकुन नैराश्य विमल ६ योगन्धर विनिन्द्रदैत्य प्रमथन शुचिबाहु महाबाहु निष्कलि विरुच ७ सार्च्चिमाली धृतिमाली वृत्तिमान रुचिरचन्द्र सौमनस विधूत मकर करवीर रति धनधान्य८ जृम्भकसर्व्वनाभ सन्धान बरुण ६ इनसब भृशाश्वप्रजा-पतिके अस्त्ररूप पुत्रोंको हमसे ग्रहणकरो क्योंकि आपही इनके ग्रहणके योग्यहैं१० श्रीरामचन्द्रजीने कहा बहुत अच्छा इनको ग्रहण करतेहैं तब प्रसन्नचित्तहो दिव्यस्वरूप देदीप्यमान मूर्त्तिमान् स्वेच्छाचारी११उनमें कोईतो अंगार समान कोई धूमाकार कोई चन्द्र सूर्य्य सदृश कोई माथ झुकाये हाथजोरे थे १२ सबके सब हाथजोर श्रीरामचन्द्रजी से मधुर वचन बोले हे राम हम सब आपके सेवकहैं कृपाकरके आज्ञा हो आप का कौनकाम करें १३ यहसुन रामचन्द्रजी ने कहा अपने २ स्थानपै चलेजाव जबहम किसी कार्य्यकेलिये स्मरण करेंतो आय सहाय करना यह सुन वे सब रामचन्द्रजीसे पूंछकर व प्रदक्षिणा कर अच्छा ऐसाही करेंगे यह भी कह चलेगये १५ वे सबतो अपने अपने स्थान को चलेगये श्रीरामचन्द्र चलते चलते कुछदूरपर विश्वामित्रजी से बोले १६ हे मुनिराज पर्व्वतके निकट यह जो वृक्षोंका समूह देखपरता है वह क्या है यहां कोई बनहै व किसीका स्थान यहांपरहै १७ क्योंकि अति दर्श-नीय नानाभाँति के बन्य पशु बिराजमान अतीव मनोहर मधुरबाणी बोलनेवाले नानाप्रकार के पक्षी बोलरहेहैं १८ तथापि ऐसा भयानक है कि देख रोम खड़े होते हैं पर उस स्थानके रहनेवालों को सुखदेनेके लिये अवश्य देखने चलेंगे १६ सब हमसे कहिये यहतो जानों किसी का स्थान बिदित होताहै खैर जो होय यह तो बताइये वहकौन स्थानहै जहां आप यज्ञ करते थे जहां कि वे दुष्ट पापी दुराचारी ब्राह्मण मारने वाले राक्षसआय जाया करतेहें तुम्हारी यज्ञ बिनाशतेहैं २० । २१ आप बताइये हम यज्ञकी रक्षाकरेंगे व उन दुष्टराक्षसों को मारेंगे २२ ॥

इत्यार्षेरामायणे बाल्मीकीये बालकाण्डेऽष्टाविंशस्सर्ग्गः ॥ २८ ॥

महाप्रतापी अमित प्रभाव परमोदार दशरथ राजकुमार के वचन

अनुसार विश्वामित्रजी से बोले १ हे भगवन् जिस समय में वे निशाचर आय यज्ञनाशतेहों वह समय बताइये कि रक्षाकीजाय जिसमेंवह व्यर्थ न बीते २ जब सब मुनियोंने देखा कि ये दोनों राजकुमार ऐसा कहते हैं व इनके युद्ध करनेकी इच्छाहै तो सबके सब बड़ाई करते हुयेबोले ३ हे राम लक्ष्मण आजसे ६ दिन पर्य्यन्त आप यज्ञकीरक्षाकीजिये अब मुनि कुछ भी उत्तर न देंगे क्योंकि ६ रात्रि तक यज्ञदीक्षा में प्राप्त होने के कारण मौनरहेंगे ४ महायशस्वी दोनों भाई मुनियों के ऐसे वचन सुन ६ दिन रात्रि बराबर बिनाशयन किये उस तपोबन की रक्षा करते रहे ५ व सबधनुर्व्वाण धारणकिये विश्वामित्र और उनके यज्ञकी रक्षा बनाय करतेरहे ६ इस रीतिसे पांच दिन राततो निर्व्विघ्नता से बीते बिताये जबछठां दिन आया तो रामचन्द्र महाराज लक्ष्मणजीसे बोले भाई अब अच्छीतरह स्वस्थचित्तहो लड़नेको तैयार रहिये ७ जब युद्धकरने की इ-च्छासे श्रीरामचन्द्रजीने ऐसा कहाकि अकस्मात् वेदी बरउठी ब्रह्मा पुरो-हित आदि घबड़ा उठे ८ कुशयज्ञपात्र श्रुव होमका ईंधन फूल विश्वामित्र ऋत्विज इन सबोंके साथ वेदी बरउठी इस भयानक के होने से सबको विदित होगया कि दुष्टनिशाचर आनेही चाहते हैं ९ यद्यपि मुनिराज की यज्ञक्रिया सब विधि विधानहीं से होतीथी कोई बिघ्न न होनाचाहिये था तथापि एकाएकी आकाश में से अति भयानक शब्द हुआ १० पीछे जैसे आकाश को मूंद बर्षाकाल में बादर देख पड़ते वैसेही माया करते हुये राक्षस दौड़े ११ उनमें मारीच सुबाहु व उनके अनुचर सबथे कि जो आतेही के साथ वेदीके ऊपर रुधिर बरसाने लगे १२ जैसेही राम-चन्द्रजीने देखा कि वेदी सब रुधिर के मारे डूबगई है तैसेही एकाएकी दौरे कि अन्तरिक्ष में मारीचादि देखपरे १३ कमलनयन श्रीरामने जब देखा कि सामने दौरतेही चले आतेहैं तो लक्ष्मण से बोले १४ अय लक्ष्मण देखिये तो मांसाशी दुराचारी राक्षस कैसे दौरे चले आतेहैं इनको अपने अस्त्रों से ऐसा उड़ाते हैं जैसे पवन बादरों को उड़ाता है १५ सो इसमें कुछभी सन्देह नहीं क्योंकि ऐसे अल्प वीर्य्यों को हम क्या समझतेहैं इतनाकह धनुषपै बाण चढ़ाया १६ वहपरम श्रेष्ठ देदीप्यमान मानवास्त्र था ऐसी युक्तिसे मारा कि मारीच की छातीमें लगा १७ जिससे

मारीच वहांसे ४०० कोस पै समुद्र था जाय बीच सागर में गिरा १७ तब चैतन्यरहित घूमि २ गिरते हुये मानवास्त्रसे पीड़ित मारीच कोदेख श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे बोले १६ लक्ष्मण देखिये इसमानव अस्त्र को कि कैसे मारीच को मोहितकर उड़ाय लेगया प्राण नहीं निकाले २० अब इन निर्दयी दुराचारी पापी यज्ञनाशनेवाले रुधिरपीनेवाले राक्षसों कोभी मारेंगे २१ लक्ष्मणसे ऐसाकह बड़ीशीघ्रताके साथ आग्नेय अस्त्र लिया २२ व सुबाहुकी छातीमें मारा जिसके लागतेही वह भूतलमेंप्राण रहित होगिरा जो बाकीरहे उनको वायव्यास्त्र से मारा २३ जब सबके मारजानेपै अच्छी रीति से यज्ञक्रिया समाप्तहुई तब परमानन्दित हो महामुनि विश्वामित्रजी श्रीरघुनाथजीसे बोले २४ हे महाबाहु हम कृतार्थहुये तुमने गुरूके वचन खूबमाने इसकाजो सिद्धाश्रम नामहै सो भी तुमने सार्थक किया २५ ॥

दो० यहि बिधिराम प्रशंसिमुनि लैद्वौराज कुमार ॥
गयेकरन सन्ध्या मुदित अवन रह्यहु कछुभार १ । २६ ॥

इत्यार्षे रामायणे बाल्मीकीये बालकाण्डे त्रिंशस्सर्गः ॥ ३० ॥

सन्ध्या करनेके पीछे दोनोंभाई राम लक्ष्मण प्रसन्न मनहो रात्रिभर वहांरहे १ जबप्रातःकाल हुआ तो शौच क्रियाकर विश्वामित्र व और मुनि लोगोंके प्रणाम करनेके लियेगये २ व अग्निसमान देदीप्यमान मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्र जीके प्रणामकर मधुर व उदारबाणी से बोले क्योंकि सदा मधुरभाषी तोथेही ३ हे मुनिश्रेष्ठ हमदोनों को अपना किङ्कर समुझिये अब और जो कुछकरनाहो आज्ञादीजिये क्याकरें कहिये ४ जबदोनों भाइयोंने ऐसे वचनकहे तोसब महर्षिलोग विश्वामित्रजी को आगेकर श्रीरामचन्द्र जीसेबोले ५ हेनरश्रेष्ठ मिथिलापुरी के राजा जनकके यहां यज्ञहोनेवाली है तहांहम सबलोग जायँगे ६ हे नरशार्दूल आपभी हम लोगोंके साथचलिये वहांएक अद्भुत धनुषहै उसेदेखिये ७ वह धनुष उस बंशमें एक देवरात जनक हुयेहैं उनके समयमें जब दक्षयज्ञ विध्वंस करने के पीछे शिवजी प्रसन्न हुये हैं तोउन्होंने सबदेवों के साथजनक पुरमें स्थापितकियाहै तबसेवहीं धराहै उसका प्रभाव किसीके जाननेके मानका

नहीं ८ देवता गन्धर्व असुर राक्षस कोईभी उसकी रोदानहीं चढ़ासकते फिर मनुष्यतोकोई किसीभी रीतिसे नहींचढ़ासकता ९ तिसधनुषका वीर्य्य जाननेकेलिये बड़े २ बलवान् राजा जनकपुरमें आये पर कोई उसकी रोदानहीं चढ़ासका १० हे रघुनन्दन वहां चलनेपर महात्मा राजा जनकका वह धनुषभी आपदेखेंगे व उनके यहां अद्भुतयज्ञहैसोभीदेखेंगे११ राजा जनकने एकसमय यज्ञकिया था तबशिवादि सब देवगण प्रसन्न हुये तो यज्ञके फलके स्थानमें सबशत्रु नाशनेके निमित्त देवताओं से माँगलियाथा १२ हे राघव सोधनुष राजाजनकके यहांपूजाके स्थानमें धरा रहताहै इससे धूपदीपादिसे सदाउसकी पूजाहोती १३ यह कह विश्वामित्रजी सब मुनिलोग व रामलक्ष्मण दोनोंभाइयों के साथ बन देवताओं की सलाहसे जनकपुरीकोचले १४ चलनेके समय बनदेवों से कहा तुमलोगों का कल्याण हो अबहमारी यज्ञक्रिया सिद्धहोगई इसलिये इस सिद्धाश्रम से गङ्गा के उत्तर तीरपै जो हिमालय पर्व्वत के नीचे २ जनकपुरीका मार्ग्गहै उसी जनक पुरीकोजाते हैं १५ यहकह उत्तम सिद्धाश्रमके प्रदक्षिणाकर उत्तर दिशाको प्रस्थानकिया १६ जब विश्वामित्रजी चले तो उनकेपीछे और ब्रह्मवादी मुनिलोगोंकी यज्ञसामग्री लदी हुई सैकरों गाड़ियां चलीं १७ व सिद्धाश्रम के निवासी पशुपक्षियों के झुण्ड के झुण्ड महातपस्वी महात्मा विश्वामित्र के पीछे २ चले १८ विश्वामित्रजीने मृग पक्षियों को व कुछ ऋषिलोगों को तो लौटादिया और समाज दूर तक चली गई कि इतने में दिन थोड़ा रहगया सूर्य्य अस्त होने लगे १९ तब मुनिलोगों ने शोणानाम नदीके किनारे निवास किया २० जब सूर्य्यनारायण अस्त होगये तो सब मुनि स्नानकर अग्निहोत्रादि कर कराय विश्वामित्र को आगे कर बैठे २१ रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी भी सब मुनियों की पूजा करकराय विश्वामित्रजीके आगे बैठे २२ कुछ घड़ी के पीछे महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रने तपोनिधि विश्वामित्र जीसे बड़ी खुशीके साथ पूछा २३ ॥

दो० हे मुनिवर धन धान्य युत कौन देश यह आय ॥
सुना चहत तब होयशुभ कहहु मोहिं समुझाय १ । २४
राम वचन प्रेरित कहन लागे श्री मुनिराय ॥

देश तासुकी सब कथा ऋषिन मध्य हरषाय २ । २५

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीयेबालकाण्डे एकत्रिंशस्सर्ग्गः॥ ३१ ॥

हे रामचन्द्र सज्जनोंकेपूजक उत्तमव्रत व धर्म्म जाननेवालेमहातपस्वी ब्रह्माके पुत्र एक कुश नाम राजा यहां हुये १ उनका बिदर्भ देशकीराजा की कन्याके साथ बिवाह हुआ जो कि महा कुलीनथी उसमें अपने समान चार पुत्र उन्होंने उत्पन्न किये २ उनके नाम येथे १ कुशाम्ब २ कुशनाभ ३ आधूर्त्तरज ४ वसु ये सब क्षत्रियों के धर्म्मकी इच्छा से बड़े तेजस्वी बड़े बीर हुये ३ राजा कुश तिन धर्म्मिष्ठ व सत्यवादी पुत्रोंसे बोले हे पुत्रो प्रजापालन करो बड़ा धर्म्म पावोगे ४ कुशके वचन सुन उन चारो मनुष्य श्रेष्ठ महा पराक्रमी राजकुमारों ने अपने २ नामसे एक २ नगर बसाया ५ उनमें महा तेजस्वी कुशाम्बजी ने कौशाम्वी नाम पुरी बसाई धर्म्मात्मा कुशनाभ ने महोदय नाम नगर बसाया ६ आधूर्त्तरज नाम राजकुमार ने धर्म्मारण्य नाम पुर बसाया व वसु नामक राजकुमार ने गिरिव्रज नाम अति मनोहर नगर बसाया ७ इसी गिरिव्रज का बसुमती भी नाम हुआ सो यह उन्हीं महात्मा राजा वसुकी बसुमती नाम पुरी है इसके चारो ओर से पांच पर्व्वतहैं जो कि इसे प्रकाशित करतेहैं ८ व मगध देशमें बहती हुई यह शोणानाम नदी जिसे मागधी भी कहते हैं पांचो पर्व्वतों के बीच में माला के समान शोभित बहती है ९ सो यह महात्मा बसुजीकी मागधी नदी पूर्व्व दिशा को देखिये बहती है व इसके दोनों किनारों पै अच्छे २ खेत पातहैं १० हे रघुनन्दन और राजर्षि कुशनाभजी के १०० अति मनोहर कन्या घृताची नाम अप्सरा में उत्पन्न हुईं ११ वे सब कन्या युवावस्था को पहुंची सबकीसब अति रूपवतीथीं व सब नानाप्रकारके वस्त्र भूषण पहिने ओढ़े फुलवारीमेंपहुंचीं जैसे वर्षाकालमें सैकरों नदियां इधर उधर से समुद्र में एकत्र होतीहैं १२ वहां पुष्पबाटिकामें सबकी सब गाने बजाने नाचने लगीं व सब भूषण भूषितहो परमानन्द को पहुंचीं १३ उन सई के सब अङ्ग अति रमणीक थे उनके समान रूपवती उस समयमें कोव स्त्री भूतलमें न थी इसलिये वे सब उस उद्यानमें आय ऐसा शोभितहुईं

कि मानों वादरों के बीच २ नक्षत्रगण शोभित होतेहैं १४ तिन सबको सब रूप गुण सम्पन्नदेख सबमें टिकनेवाला वायु तिनसे बोला १५ हे स्त्रियो हम तुम सबको चाहते हैं कि हमारी स्त्रियां होवो व मानुष्यभाव को छोड़ो जिसमें बड़ी आयुर्व्वल बढ़े १६ देखो यह योवन समय सदा चलाय मानहै तिसमें भी मनुष्य की युवावस्था का तो कुछ ठीकहीनहीं इससे तुम सब अजर अमर होजावो १७ वायुके ऐसे वचन सुन सब कन्या उनके वचनको हँस बोलीं १८ हे भगवन् तुमतो सब प्राणियों के अन्तः करण में टिके रहतेहो व सबका प्रभाव जानते हो व हम लोगभी तुम्हारा प्रभाव जानतीहैं तुमक्यों हम लोगोंका अपमान करतेहो १९ हम सब राजा कुशनाभ की कन्याहैं अपनी तपस्या-के बलसे शाप देके तुमको वायुलोक से गिराय सकती हैं पर शाप देनेसे तपस्या क्षीणहो जातीहै इसलिये तुमको शाप नहीं देतीं २० हे दुर्व्वुद्धि जिसकाल में हम लोग अपने सत्यवादी पिताका अपमान करके अपने मनमाना पति करलेवें ऐसा समय ईश्वर कभी न देखावे २१ हम लोगोंके मालिक व परम देवरूप हमारे पिताजीही हैं इसलिये जिसे वे हमें देयंगे वही हमारा पति होगा २२ तिन सबों के ऐसे वचनसुन परम कोपकर सबके अंग २ में प्रवेश करके वायुने सबोंको कुबरी करडारा २३ वे सब कन्या जब वायुके करने से कुबरी होगईं तो रोती धोती लज्जित कम्पितगात्र अपने पिताके घरको आईं २४ राजा परम प्यारी परम सुन्दरी अपनी कन्याओं को दुःखित व कुबरी देख उनसे बोले २५ कि

चौ० ॥ कहहु सुता सब यहका भयऊ। कोतुव धर्म्म कर्म्म अपनयऊ॥
किन कुबरी तुमकहँ करि दीना। जानत कहतन किमि परवीना १। २६॥
इमि राजा करि बहुत गलानी । दैकै ध्यान बात सब जानी ॥ शोचन लग्यहु महीपति ज्ञानी। पवन देवका कीन अजानी २। २७॥

इत्यार्षेरामायणे वाल्मीकीयेबालकाण्डेद्वात्रिंशस्सर्ग्गः॥ ३२ ॥

बुद्धिमान राजाकुशनाभके ऐसे वचनसुन अपना २ शिर पिताके चरण में नवाय सबकीसब कन्याबोलीं १ हेराजन् यद्यपि पवनदेव सबके आत्मा में टिकेहैं उनको सब बिचार सहितही करना चाहिये तथापि अधर्म्म

मार्गमें टिक वे हमलोगोंका धर्म्म लिया चाहते थे धर्म्मकी ओर उन्होंने कुछभी दृष्टि नहींकी २ हमलोगोंने उनसे कहा कि हमारे पिताजी विद्यमानहैं कुछ हमलोग स्वेच्छाचारिणी नहींहैं आप हमारे पितासे कहिये जो वे तुम्हें हम लोगोंको देडारें तो होसकताहै नहीं तोनहीं ३ इस हम लोगों के वचन को उस पापी पवन ने अंगीकार न किया हमलोग ऐसा कहतीही थीं कि उसने सब अंगोंमें पैठ तूरफार कुबरी करदिया ४ तिन सबके वचनसुन परम धार्म्मिक राजा अपनी सब कन्याओं से बोले ५ हेपुत्रियो क्षमावाले पुरुषों को यही चाहिये कि क्षमाकरें सो तुमलोगोंने पवन के ऊपर क्षमाकी बहुत अच्छा कामकिया व एक मतहो हमारे कुल की ओर भी दृष्टिकी यहभी अच्छा किया ६ सोभी स्त्रियोंको तो क्षमा करनाहीं अलंकारहै पुरुषोंको तोकुछ ऐसानहीं तुमलोगोंने देवोंके ऊपर क्षमाकी यह अति दुष्कर कर्म्म क्यों न हो ७ जैसी क्षमा तुम लोगोंमें है ऐसी हमारे कुलवाली सब कन्याओं मेंहो क्योंकि हेपुत्रियो क्षमाही दानहै क्षमाही सत्यहै क्षमाही यज्ञ ८ क्षमाही यश क्षमाधर्म्म व क्षमामें हीं संसार टिकाहै यह कह राज कन्याओं से तो कहा तुम अपने घरमें बैठो आप देव समान पराक्रमीतो थेही ९ सब मंत्रियोंको बुलाय सलाह करनेलगे कि इन कन्याओं का दान अच्छे देश अच्छे समय इनके समान पतिको करना चाहिये १० उन्हीं दिनोंमें एक बड़े तेजस्वी चूलीनाम ऊर्द्धरेता शुभाचारी ब्रह्ममें प्राप्त होने के लिये तपस्या करते थे ११ कि ऊर्म्मिलाकीकन्या सोमदानामगन्धर्व्वी उनकी उपासना करनेलगी १२ बहुत दिनों तक उन मुनिराज की शुश्रूषा बड़ी नम्रता से करती रही कि चूलीमुनिराज उसके ऊपर प्रसन्न हुये १३ व काल के संयोग से बोले कि हम तुम्हारे ऊपर संतुष्टहुये कहो तुम्हारा कौन प्यारकरें १४ उस गंधर्व्वी ने जाना कि मुनिराज मेरे ऊपर प्रसन्न हैं इसलिये बात कहने में बड़ी पण्डिता वह परमज्ञानी मुनिसे बोली १५ हेमहाराज में ब्रह्मकी लक्ष्मी सहित ब्रह्मरूप महातपस्वी ब्रह्मकी तपस्या करनेवाला बड़ा धार्म्मिक पुत्र चाहतीहूं १६ परंतु मेरे पति नहींहै आपका कल्याण हो व न किसीकी भार्य्याहोना चाहतीहूं क्योंकि मैं ब्रह्मचारिणीहूं इसलिये जैसे सनकादि ब्रह्माजीके मानसीपुत्र हुयेहैं वैसेही मुझेभी मानसी

पुत्र दीजिये १७ यह सुन तिसके ऊपर चूलीजी प्रसन्न हुये व उन्हों ने ब्रह्मदत्तनाम उत्तम मानसीपुत्र उस गंधर्व्व कुमारी को दिया १८ वे ब्रह्मदत्त गंधर्व्वराज की कन्यामें होनेसे काम्पिलनाम नगरी के राजा हुये वहां की राजलक्ष्मी से ऐसे शोभित होतेथे जैसे स्वर्ग में इन्द्र विराजमान होतेहैं १९ सो राजा कुशनाभ ने बिचार किया कि ये सब कन्या राजा ब्रह्मदत्तको देदें २० यह शोच महातेजस्वीराजा कुशनाभ ने ब्रह्मदत्त को बुलाय प्रसन्न मन हो अपनी १०० कन्या देदीं २१ हे रघुनन्दन राजा ब्रह्मदत्त ने यथा क्रम सबका बिवाह अपने साथ करलिया क्योंकि विभवमें ब्रह्मदत्त इन्द्रके समान थे फिर १०० स्त्रियों का बिवाह करना कौन आश्चर्य्य है २२ जैसेही ब्रह्मदत्त ने उन सबों का हाथ पकरा कि वैसेही सबोंका अति मनोहर रूप होगया कुबरापन जाता रहा सब प्रकार की उनकी शोभाहुई २३ ॥

चौ० ॥ वायुरोग बिनदेखि कुमारी । महाराज कुशनाभ बिचारी ॥ भयहु परम मङ्गल युत आपू । बार बार हर्षित गत दापू १ । २४ ॥ करि बिवाह सब बधुन समेता । ब्रह्मदत्त निज गये निकेता ॥ सकलधान्यधन दायज पाई । प्रमुदित चलेपरम हरषाई २ । २५ ॥ सहस्रदेखि सुत दार क्रियाहीं । भैसोमदा मुदित मन माहीं ॥ बार बार बर बधूनि हारी । नृष कुश नाभ प्रशंसत भारी ३ । २६ ॥

इत्यार्षे रामायणे बालमीकीये बालकाण्डे त्रयस्त्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३३ ॥

जब ब्रह्मदत्त बिवाह करके चलेगये तो राजा कुशनाभ के पुत्र न था इसलिये वे पुत्र होने के लिये पुत्रेष्टि नाम यज्ञ करने लगे १ जब पुत्रेष्टि होनेलगी तो राजा कुशनाभ के पिता कुशजी अपने पुत्र राजा कुशनाभ से बोले २ हे पुत्र अपने समान पुत्र तुम पावोगे व उसका गाधि नाम होगा जिससे कि तुम्हारी निरन्तर बहुत दिनों तक कीर्ति होगी ३ कुशनाभ राजा से ऐसाकह कुशजी आकाश मार्ग हो सनातन ब्रह्मलोक को चलेगये ४ कुछ काल पीछे बुद्धिमान राजाकुशनाभ के परम धर्म्मिष्ठ गाधिनाम पुत्रहुआ ५ हेरघुनन्दन वही परमधार्म्मिक गाधिजी हमारे पिता हैं व कुशके वंश में उत्पन्न होने से हमारा

कौशिक भी नामहै ६ हमारी एकबड़ी बहिन थी उसका सत्यवती नाम था जोकि ऋचीक मुनि को ब्याही गई ७ वह सत्यवती सहित शरीर अपने पतिके मरने के पीछे स्वर्गको चलीगई व वही परम उदार कौशि-की नाम नदी हो बही ८ जिसमें कि अति दिव्य पुण्य जल भरा है व हिमवान् पर्व्वत से बहती है यह हमारी भगिनी लोकके हित के लिये नदी हो बही है ९ तिसीसे हम अपनी भगिनी के स्नेह से प्रथम हि-मवान् पर्व्वत के समीप कौशिकी नदी केही किनारे पर रहते थे १० व वह सत्यवती नाम सत्य धर्म में टिकी महा पतिव्रता नदियों में श्रेष्ठ कौशिकी नाम नदीहै ११ हेराम यह करने के लिये कौशिकी काकिनारा छोड़ सिद्धाश्रमको चलेआये वहां तुम्हारे तेजसे यज्ञकरके सिद्ध हुये १२ हमने अपने बंशकी व इस देशकी उत्पत्ति आपसे विस्तार पूर्व्वक कही जोकि आपने हमसे पूंछाथा १३ हेरघुनन्दन कथा कहते२ आधीरातहुई अबजाय शयन कीजिये जिसमें कल गली चलने में मारे औंघाई केविघ्न न हो १४ देखिये अब किसी वृक्षकी पत्ती नहीं डोलती पशुपक्षी सब ठौर२ चुपहो सोतेहैं रात्रिकी अँधियारी सब दिशोंमें व्याप्त होगईहै १५ धीरे २ डेढ़ पहर रात्रि बीते तक जो सन्ध्या बन्दनादि का काल रहता बीतगया नक्षत्र तारागणों से अति देदीप्यमान आकाश सुशोभित हो रहा है १६ लोक की अँधियारी दूर करनेवाला चन्द्रमा उदय हो रहा है अधिक रात्रि बीतने से उसकी किरण और शीतल होगई हैं व अ-पनी किरणों की दीप्ति से प्राणियों के मन आनन्दित करता है १७ यक्ष राक्षसादि रात्रि के चलनेवाले जीव ठौर २ घूमते हैं ये लोग बड़े भयानक व मांस भक्षी होते हैं १८ इतना कह विश्वामित्र जी चुपाय रहे सब मुनिलोग साधु साधु कर उनकी बड़ाई करनेलगे १९ कि यह कुशिका बंश बहुत दिनोंसे धर्म्मात्मा चला आताहै इसमें जो२ मनुष्य हुये सब ब्रह्मर्षियोंके तुल्यहुये २० हे विश्वामित्रजी विशेषकर आप व नदियों में श्रेष्ठ कौशिकीनदीने तो इसकुलको प्रकाशितही करदिया २१ इसरीतिसे मुनि लोगोंने विश्वामित्रजी की प्रशंसा की तब मुनिराज श-यन कररहे जैसे कि सूर्य्य अस्त होजाते हैं २२ रामचन्द्रजी भी लक्ष्मण जी के साथ कुछ विस्मित हो मुनिकी प्रशंसा करशयन करनेलगे २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीये बालकाण्डेचतुस्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३४ ॥

इस रीतिसे जो रात्रि बाकी रहीथी बीती जब प्रातःकाल होनेलगा तो विश्वामित्रजी बोले १ हे राम प्रातःकाल हुआ उठिये प्रातःकाल की सन्ध्या कर कराय चलनेकी तैयारी कीजिये २ मुनिराज के ऐसे वचन सुन शौचस्नान सन्ध्या वन्दनादि पूर्वाह्नकी सब क्रिया कर कराय चलने की तयारी की व बोले भी ३ कि यह शोणतोथाह पूरा है इसी से बालू बहुत है बताइये कौने सामने चलना होगा ४ जब रामचन्द्रजी ने ऐसा कहा तो विश्वामित्र जी बोले कि यही मार्ग है जिससे सब महर्षिलोग जाते हैं ५ यहसुन सब समाज चली चलते २ मध्याह्न हुआ कि नदियों मे श्रेष्ठ श्री गङ्गाजी देखपरीं ६ तिस पुण्य जल सहित हंस सारसादि सेवित गङ्गाजी को देख सब मुनिलोग व राम लक्ष्मण दोनोंभाई परमानन्दित हुये ७ व तिसीके किनारेपै यथायोग्य सब लोगों ने निवास किया कुछ काल सुस्ताय स्नान सन्ध्या तर्प्पणादिकर ८ अग्निहोत्रादि सबक्रियाकर यज्ञसे बचीबचाई खीर भोजन कर प्रसन्न चित्त हो सब गंगाजी के तटपै अपने २ आसनपै बैठे ९ बीच में विश्वामित्रजी थे और सब किनारे किनारे थे रामचन्द्र व लक्ष्मणजी आगे बैठे थे १० उस समय प्रसन्न मन हो श्रीरामचन्द्रजी ने विश्वामित्रजी से पूंछा हे भगवन् त्रिपथगा गङ्गाजी के यहां आनेके समाचार सुना चाहते हैं ११ कि तीनोंलोकों को नांघती हुई कैसे महासागर में जाय मिलीं १२ जब श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसा पूंछा तो महामुनि विश्वामित्रजी गङ्गाजी की वृद्धि व जन्म कहने लगे १३ हे राम सुवर्णादि धातुओं का स्थान जो हिमालय पर्व्वत है अति रूपवती तिसके दो कन्या भईं १४ इन दोनों कन्याओं की माता का मेना नाम है जोकि किसी पर्व्वत की कन्या हैं व हिमालय की स्त्री हैं १५ इसमें हिमवान् से गङ्गा नाम ज्येष्ठ कन्या हुई व उमानामकनिष्ठा १६ उनमें जेठी कन्या गङ्गाजी को तो देव कार्य्य सिद्ध करने के लिये देवगण हिमवान् से मांग ले गये १७ हिमवान्ने भी लोक पावनी अपनी स्वर्ग लोक पाताललोक मृत्युलोक में चलनेवाली स्वेच्छाचारिणी कन्या को देवों को देदिया १८ वे सब त्रिलोक के हित करनेवाली गङ्गाजी को

ले कृतार्त्थता को प्राप्त चलेगये १६ व जो दूसरी उमानाम कन्या थी उसके तपस्याही धन था इसलिये उसने अत्युग्र व्रत धारण कर महादेवजी के लिये तपस्या की २० उस तपस्या से उमाके योग्य महादेव जी को बिचार हिमवान् ने शिवजी को बुलाय विवाह करदिया २१ हे राम नदियों में श्रेष्ठ गङ्गा व पार्व्वतीजी यही दोनों हिमवान् की कन्या हैं २२ यह तुमसे हमने बताया जिस रीतिसे गङ्गाजी स्वर्ग्गकोगई २३॥

दो० सोई यह हिमगिरि सुता गङ्गा परम पवित्र ।
पाप रहित सुरलोक को गई नहीं कछु चित्र १ । २४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेपञ्चत्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३५ ॥

जब विश्वामित्रजी ने ऐसा कहा तो श्रीराम लक्ष्मण दोनों वीर विश्वामित्रजी की बड़ाई कर बोले १ हे ब्रह्मन् आपने पर्व्वतराज की जेठी कन्या गङ्गाजी के जन्म की कथा परम धर्म्म युक्त कही २ अब विस्तार सहित सुनाइये कि त्रिलोक के पावन करनेवाली गङ्गा स्वर्ग्ग मर्त्य पाताल तीनलोकों में क्यों गई ३ व नदियोंमें उत्तम गङ्गा किन २ कर्म्मों से त्रिपथगामिनी कहाई ४ जब श्रीरामचन्द्र ने ऐसा पूंछा तो तपोधन विश्वामित्रजी ऋषियों के मध्य में सम्पूर्ण कथा कहने लगे ५ हे राम यह आगे की बात है कि जब महातपस्वी महादेवजी का विवाह पार्व्वती जीके सङ्ग हुआ तो देवी को देख मैथुन करने की इच्छा से क्रीडा करने लगे ६ तिन धीमान् महादेवजी के क्रीडा करते २ देवताओं के १०० वर्ष व्यतीत हुये ७ इस रीतिसे कामकला करते रहे वरन मदन से एक प्रकार का युद्ध होता रहा परन्तु महादेव पार्व्वतीजी में किसीकी पराजय न हुई व न इतने दिनों के विहार में भी कोई सन्तान नहीं हुई ८ तब ब्रह्मादिदेव बिचारने लगे कि इनदोनों महापराक्रमियों के सम्भोग से जो जीव उत्पन्न होगा उसको कौन सहसकेगा इसलिये सब व्याकुल होगये ९ देव देव महादेवजी के चरण शरण में जाय प्रणामकर बोले हे महादेव देवगणों के प्रणाम से प्रसन्न हूजिये व इसलोक की रक्षा कीजिये १० व आप का तेज किसी लोक में कोई न धारण कर सकेगा इसलिये ब्रह्मकी तपस्यासे युक्त पार्व्वतीके साथ तपस्या कीजि-

ये ११ व तीनोंलोकों की रक्षा के लिये अपना तेज अपने शरीरही में धारण किये रहिये कि इन तीनोंलोकों की रक्षा बनी रहै इनको नाश न कीजिये १२ देवताओं के ऐसे वचन सुन सकल लोकों के ईश्वर महादेवजी बहुत अच्छा यह कह फिर देवों से बोले १३ हे देवो हम पार्व्वतीके साथ अपना तेज निज शरीरहीमें धारण किये रहेंगे पृथिव्या-दि सबलोक निर्भयरहैं यह न डरें कि इनकावीर्य्य कौन धारणकरैगा १४ हां यह तुम लोग बिचारो कि जो हमारा तेज चलायमान होगा तो भूतल में कौन आड़ेगा १५ यह सुन देवगण बोले किजो तेज आपका चलायमान होगा उसे धरणी धारण करैगी १६ जब देवोंने ऐसा कहा तो महादेवजी नें भूतल में अपना वीर्य्य छोड़ा जिस तेज से सहित प-र्व्वत सहित बन पृथिवी पूर्ण होगई १७ जब सब पृथिवी न सह सकी तो देवों ने अग्नि से कहा कि वायु के साथ तुमभी इस तेज को धारण करो १८ तब अग्नि ने वायु के साथ वही महादेव का तेज धारणकिया धारण करते ही एक स्थान पर श्वेत पर्व्वताकार वह तेज होगया फिर अति दिव्य सरपत का बन होगया उसी सरपत के बन से अग्निके स-मान कार्तिकेयजी उत्पन्न भये १९ इसके पीछे पार्व्वती व महादेव जी की पूजा सब देवता व ऋषियों ने अति प्रसन्न मन से की २० तब पा-र्व्वतीजी परमक्रोधकर देवताओंसे बोलीं व सहितक्रोध शापदेनेलगीं२१ हे देवो जिससे कि तुम लोगों ने हम को रोंक दिया कि पुत्र न उत्पन्न करो तिससे जावो तुम लोगों की स्त्रियों में तुमसे भी पुत्र न उत्पन्न होंगे २२ आज से तुम्हारी स्त्रियां पुत्र पुत्रादि हीन होंगी तुम्हें छोड़ किसी अन्यके संय्योगसे भी वे पुत्रादि न उत्पन्न करा सकेंगी २३ पार्व्वतीजी ने देवताओं से ऐसा कह पृथिवीको भी शापदिया कि धरणि तुमभी एक प्रकारकी सर्व्वत्र न रहोगी किन्तु कहीं ऊषरादि भी होजा-यँगे व एक राजा भी पृथिवी मण्डल भर का कोई न होगा इससे तुम्हारे बहुत से पति होंगे २४ व हे दुर्व्बुद्धे हमारे कोपसे पीडित पुत्रकी कीहुईप्री-तिकोभी न पावोगी क्योंकि तुमने भी हमारे पुत्र की इच्छा नहीं की २५॥

दो० लज्जित लखि सब देवगण प्रिया शाप अनिवार ।
मन गुनि शिव गमने वरुण दिशहि न आन बिचार ११ । २६

जाय प्रिया सँग शम्भु हिमगिरि उत्तर तप हेत ॥
करन लगे तप नियम सब सकल लोक सुख देत २ । २७
रघुवर यह हिमगिरि सुता चरित कहा तुम पाहिँ ॥
लषन सहित सुरसरि कथा सुनहु गुनहु मन माहिँ ३ । २८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेषटत्रिंशस्सर्ग्गः ॥३६॥

जब महादेवजी पार्व्वतीजीके साथ तपस्या करनेलगे तो इन्द्रादिदेव अग्निको आगे कर सेनापतिकी इच्छासे ब्रह्माजीके निकट गये १ व सब ऋषिगणों के साथ सबके सब भगवान् ब्रह्माजी के प्रणाम कर बोले २ हेभगवन् जिसको हमें आपने सेनापति बनानेके लिये दियाथा सो हमारे वैरियों के नाश करनेवाला सेनापति अभी नहीं उत्पन्न हुआ ३ तिस सेनापतिकेपिता शिवजी पार्व्वतीजीके साथ हिमाचलके कँगूरापै तपस्या करतेहैं ४ इस विषय में जो कार्य्य करने के योग्यहो वह लोकों के हित की कामना से कीजिये क्योंकि हम लोगों की पहुँच आपही तक है ५ ब्रह्माजी देवताओंके ऐसेवचन सुन मधुरवाणी से समझातेहुये सुरसमूहों से बोले६ हेदेवो पार्व्वती जीने जो शाप दियाहै सो ठीकहै तुम लोगों की स्त्रियों में तुम से पुत्र न होंगे क्योंकि तिसके वचन झूंठे नहीं हैं बरन सत्यही हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ७ हां अब यह उपाय होसक्ता है कि यह जो आकाशगंगा है इसमें अग्नि एक पुत्र उत्पन्न करेंगे वही तुम लोगों का सेनापति होगा ८ उस पुत्र को हिमवान् की जेठी कन्या गंगा अपनी छोटी बहिन पार्व्वती का पुत्र होने के कारण अपना तनय मानेगी व पार्व्वती जी के रजोरूपसे व महादेवजीके कन्दर्प्प के संय्योग सेहोने के हेतु पार्व्वतीजी उसे बहुतही मानेंगी ९ हे रघुनन्दन ब्रह्माजी के ऐसे वचन सुन सब देवता लोग कृतार्त्थ हो प्रणाम कर ब्रह्मा जी की बड़ाई करने लगे १० फिर सब के सब नानाप्रकार के धातुओं से शोभित कैलास पर्व्वत पैजाय पुत्रकेलिये अग्नि को प्रेरणा करने लगे ११ हे हुताशन देवताओं का यह कार्य्य कीजिये कि हिमवान् की कन्या गंगा जी में अपना तेज धारण करो १२ देवताओं का कार्य्य समुझ गंगा के समीप जाय अग्नि जी बोले हे देवि देवताओं को यह कार्य्य प्रिय है तुम हमसे गर्भ धारण करो १३ यह सुन गंगाजीने दिव्य स्त्री रूप

धारण किया तिसकी महिमा देख अग्निने अपने सब अंगों से वीर्य्य चुआया १४ जिससे गंगा जीकी सब नाड़ी २ पूर्ण होगई कोई अंग बाकी न रहा १५ तब गंगा जी अग्निसे बोलीं हे देव तुम से उत्पन्न यह तेज हम नहीं धारण कर सक्तीहैं उसके तेज की आगिसे जरी जाती हैं सब अंगों में व्यथा होती है १६ यह सुन अग्निजीने गंगा जीसे कहा कि इस हिमवान् पर्व्वत के निकट इस गर्भ को छोड़दो १७ अग्नि के ऐसे वचन सुन तिस देदीप्यमान गर्भ को अपने सर्व्वांगों से गंगाजी ने छोड़ दिया १८ जिससे कि गंगाजी सुमेरु पर्व्वत की भी कन्या हैं तिससे इन के अंग से जो तेजोरूप गर्भ निकला उसके स्पर्श से जाम्बूनद नाम सुवर्ण होगया वही सब सोना है जो धरणी में विद्यमान है जहां यह सुवर्ण हुआ उसके निकट भूमि में जितने पदार्त्थ थे सब चांदी होगये १९ जहां २ उस की तीक्ष्णता पहुंची तामा व लोहा होगया उस के मैल से रांग व सीसा हुआ २० वही सब पृथिवी को प्राप्तहो नानाप्रकार के धातु हो बढ़े २१ जैसेही गंगाजी ने गर्भ छोड़ा पर्व्वत के निकट जो सरपत का बनथा सुवर्णमय होगया २२ तहां ब्रह्मा जी ने आय कहा कि जिससे यह जातरूप है इससे जातरूप भी इस सोने का नामहो २३ हे राघव तब से सब सोने का एक जातरूप भी नाम हुआ पर यह पक्के सोने का नाम है कच्चे का नहीं उस बनमें तबसे जितने वृक्ष बल्यादि थे सबके सब सोने के होगये २४ तिसके पीछे कुमार जी का जन्म हुआ कोई दुग्धपान करानेवाली तो थीही नहीं क्योंकि उसी सरपत के बन से इनका जन्म हुआ था इसलिये सहित इन्द्र देवगणों ने दुग्ध पिलाने के लिये कृत्तिकाओं को पठाया २५ उन्हों ने कहा कि हम इनको दुग्ध पान तो करावेंगी परन्तु पुत्र भी ये हमारेही कहावें यह करारकर सबों ने कुमार जी को दूध पिलाया २६ तब सब देवताओं ने कहा अच्छा ये तुम्हारे भी पुत्र कहावेंगे व तीनों लोकों में कार्त्तिकेय इनका नाम होगा २७ देवताओं के ऐसे वचन सुन महादेव पार्व्वती के वीर्य्य के चूने से उत्पन्न उस कुमार को सबोंने स्नान कराया कि अग्नि के समान रूप झलकने लगा २८ इसीसे उन्हीं कार्त्तिकेय जी का एक स्कन्ध भी नाम हुवा २९ जबकृत्तिकाओं के दुग्ध उत्पन्न

हुआ तो कार्त्तिकेय जीने ३० छः मुख धारण किये क्योंकि कृत्तिका ६ थीं इसलिये एक २ मुखसे सबों का दूध पिआ व एकही दिन में कुमार अवस्था को प्राप्त हो दैत्यों की सेना को पराजित किया ३१ तब अग्नि आदि देवताओं ने आय देवसैन्य के सेनापति इनको बनाय अभिषेक किया ३२ हे रामचन्द्र यह गंगाजी का व कुमारजी का जन्म बिस्तार सहित तुम से कहा यह कथा अति धन्य व पुण्यदायक है ३३ ॥

दो० ॥ अरु रघु बर जो होइहैं भुविकुमार के दास ॥
सुत पौत्रादि समेतते बसिहैं तिन के पास १ । ३४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेसप्तत्रिंशस्सर्गः ॥ ३७ ॥

अति मधुर बाणी से गंगाजी व कुमारजी के जन्म की कथा रामचन्द्र जी को सुनाय विश्वामित्र जी और कुछ कहते हुये फिर श्रीरघुनाथ से बोले १ हे वीर पूर्व्वही एक अयोध्यापुरी के स्वामी सगर नाम राजा हुये उनके कोई सन्तान न थी इसलिये उन्होंने पुत्रादि होने की कामना की २ राजा सगर के दो रानियांथीं एक विदर्भ देश के राजा की कन्या बड़ी धर्म्मिष्ठ, सत्यबादिनी केशिनी नाम जेठी रानी ३ व दूसरी अरिष्टनेमि की कन्या कि जिसके रूपके समान रूपवती उन दिनों में भूमण्डल में कोई स्त्री न थी सुमति नाम थी ४ तिन दोनों रानियों के साथ हिमालय पर्व्वत के नीचेके गिरिपै जहां कि भृगुमुनि तपस्या करते थे महाराज सगर तपस्या करनेलगे ५ करते २ जब १०० बर्ष पूर्ण हुये तो महासत्यबादी भृगुजी ने प्रसन्न हो राजा को वरदान दिया ६ हे पुरुषश्रेष्ठ तुमको पुत्र लाभ होंगे व लोकमें अतुलकीर्त्ति भी पावोगे ७ इनमें एक रानी के तो एकही पुत्र होगा जिससे आपका बंश चलेगा व दूसरी के साठिहजार पुत्र होंगे ८ जब भृगुजीने ऐसा कहा तो दोनों रानियां मुनि के प्रणामकर हाथ जोर बोलीं ९ हे ब्रह्मन् इन हम दोनों में से किसके एक पुत्र होगा व किसके ६०००० होंगे यह हम लोगों के सुनने की इच्छा है आप के वचन सिद्धहों १० तिन दोनों रानियों के ऐसे वचन सुन परमधार्म्मिक भृगुमुनि परम मधुरबाणी बोले कि इस विषय में मनमानी बात है किसी के लिये कुछ नियम नहीं है ११ उन

मेंएक पुत्र तो बंश करनेवाला होगा व ६०००० महा बलवान् कोर्त्तिमान् महाबीर होंगे तुम दोनों बतावो कि कौनरानी एकपुत्रलेगी कौन ६०००० १२ मुनिराजके वचन सुन केशिनी ने तो बंश करनेवाला एक पुत्र लिया १३ व गरुडजी की भगिनी सुमतिनाम ने महाबीर महायशस्वी ६०००० पुत्र लिये १४ तिसके पीछे मुनिके प्रदक्षिणाकर रानियों समेत राजा अपनी राजधानी अयोध्याको आये १५ यहां जब पुत्र होनेका समय आया तो राजाकी बड़ी रानी केशिनीके असमंजस नाम पुत्र हुआ १६ व दूसरी सुमति नाम रानीके एक तोंबी उत्पन्न भई जिसके फोरने से साठि सहस्र पुत्र हुये १७ तिनसब को घृत से पूर्ण कुम्भों में बैठाय२ बहुतदिनों में धाइयों ने बढ़ाया जब समय आया तो वे युवावस्था को पहुंचे १८ बहुत दिनों में महाराज सगर के ये ६०००० पुत्र रूप यौवनशाली हुये १९ व ज्येष्ठ रानी के पुत्र जो असमंजस नामीथे वे खेलने के समय पुरबासियों के बालकों को सरयू में बहाय देतेथे जब वे बूड़ जाते तो हँसने लगते २० इसके सिवाय अन्य भी बड़े२ उपद्रव करतेथे सब पापही के आचरण थे सज्जनों के पूरे बैरी व पुरवासियोंके अनभल करनेमें निपुण ऐसे दुराचार देख राजासगरने पुत्रकोघरसे निकाल दिया २१ परंतु असमंजस का बिवाह होगया था एक अंशुमान् नाम पुत्र भी हुआथा जो कि सब लोगों की सम्मति के अनुसार चलता व सबसे प्यारे वचन बोलता २२ बहुत दिनोंके पीछे राजा सगरके मन में आया कि हम अश्वमेधयज्ञ करें २३ इस बातकी बनाय निश्चय कर ऋत्विज लोगोंको बुलाय वेदविधिसे यज्ञ करने लगे २४ ॥

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डेऽष्टत्रिंशस्सर्गः ॥ ३८ ॥

विश्वामित्रजीके वचनसुन कथाके अन्तमें श्री रामचन्द्रजी परमप्रीति से अग्निसमान देदीप्यमान मुनिराज से बोले १ हे मुनिराज आपका कल्याण होवे इस कथाको हमविस्तारसहित सुनाचाहतेहैं हमारे पूर्व्वज महाराज सगरजी ने कैसे यज्ञकिया २ तिनके ऐसे वचन सुन बड़े हर्षकेसाथ विश्वामित्रजी हँसतेहुये श्रीरामचन्द्रसे बोले हे राम महात्मा सगर के चरित विस्तार सहित सुनिये ३ श्रीशङ्करजी के श्वशुर हिंमवान्

वविन्ध्याचल नाम पर्व्वत ये दोनों परस्पर निहारतेहैं अर्थात् इनके बीच में और कोई बड़ा पर्व्वत नहीं जो इनकी दृष्टिका अवरोधक हो ४ इन्हीं दोनों पर्व्वतोंके मध्यवर्त्ती देशको आर्यावर्त्त नाम है इसीमें राजा सगर यज्ञ करनेलगे क्योंकि यह देश यज्ञकर्म्म करनेमें अत्युत्तमहै ५ तिस यज्ञमें जो घोड़ा छोड़ागया राजा सगरकी आज्ञासे अंशुमान् जी उसके रक्षक नियत हुये ६ एकदिन इन्द्रजी चलेआये राक्षसीदेह धारणकर यज्ञका घोड़ा चोरालेगये ७ जब घोड़ाले इन्द्र चले तो सब उसके रक्षक व ब्राह्मणोंने आय राजासे कहा ८ हे महाराज यज्ञका घोड़ाकोई बड़े बेगसे हरे लिये जाताहै इसलिये उसके चोर को मारिये व तुरङ्ग यज्ञ में लाइये ९ क्योंकि जो यह यज्ञ में विघ्न हुआ तो हम सबोंका अमङ्गल होगा इससे ऐसा कीजिये कि विघ्नरहित यज्ञ होजाय १० तुरंग रक्षकों व ऋत्विजों के ऐसे वचन सुन अपने साठिहजार पुत्रोंकोराजाने आज्ञा दी ११ हे पुत्रो यद्यपि यह यज्ञ महामन्त्रों से पवित्र मुनिलोगों से कराया जाताहै चाहिये कि कोई विघ्न नहो तथापि ये दुष्ट राक्षस यज्ञाश्व चोराने वाले नहीं देख परते कि किधर घोड़ा लेगये इससे तुम लोगोंको चाहिये कि बहुत शीघ्र जाय पता लगावो १२ तुम्हाराकल्याणहो समुद्र के बीच में जितनी पृथिवीहै सब ढूंढ़ना कहीं बाकी न रहने पावे १३ प्रथम तो एक२योजन ढूंढ़ना फिर आगे को बढ़ना १४ उस घोड़ेके चोर को ढूंढ़ते हुये हमारी आज्ञासे तब तक भूमि खोदना जबतक यज्ञका तुरङ्ग न देख परे १५ तुमलोग चलेजावो हम जानो यज्ञका आरम्भ कर चुके विदेश जाने के अधिकारी न ठहरे व पौत्र अंशुमान् अभी बालकहैं इसलिये हमलोग तब तक यहीं बैठेहैं जबतक कि घोड़ा न देखेंगे १६ हे राम वे सब महाबलवान् राजकुमार अपने पिताके वचनसे प्रसन्नमनहो महीतल भर ढूंढ़ने चले १७ प्रथम पृथिवीमण्डल भर रत्ती २ ढूंढ़ डाला जब घोड़ेका पता कहीं न मिला तो एक २ राजकुमार अपने भुजोंसे योजन २ पृथिवी खोदनेलगा क्योंकि उन सबके भुज बज्रके समान पुष्टथे १८ भुजोंके सिवाय बज्रसमान त्रिशूल व अतिदारुण हलोंसे भी खोदते चले जातेथे यहां तक कि सब पृथिवी में हाहाकार मचगया १९ सैकरों तो हाथी सर्प्प दैत्य राक्षस मारेगये जिनका हाहा-

कार उठाथा २० कहांतक कहैं साठिहजार योजन पृथिवी उन्होंने खोद डारी फिर खोदते २ पाताल तक जाय पहुंचे २१ इसप्रकार धीरे २ जितना जम्बूद्वीपथा सबका सब उन राजकुमारोंने खोद बहाया २२ ॥

दो० यह लषि देवासुर उरग किन्नर अरु गन्धर्व्व ॥
भये पितामह शरण कहँ भूमितचित्त ये सर्व्व १ । २३
विधिहिप्रसादि विषणमुख सकललोग एकसंग ॥
अतिब्याकुलह्वै सब कह्यउ नृपसुतकीनप्रसङ्ग २ । २४
महाराज सब धरणिसब सगरसुतन खनिडारि ॥
जलचर भूचर बहुतजन सुजनबधे तिनझारि ३ । २५
ज्यहिदेखतत्यहिं कहतयह ममसख नाशकआय ।
लीन तुरग याने यही कहि मारतहैं धाय ४ । २६

इत्यार्षेरामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डे एकोनचत्वारिंशस्सर्ग्गः॥ ३९॥

देवताओं के वचन सुन भगवान् ब्रह्माजी सगर सुतोंके बलसे मोहित व तिनके भयसे भीत देवोंसे बोले १ हे देवो जिस वासुदेव भगवान् बुद्धिमान् की यह सब भूमिस्त्री है सोई सब कुछ करनेमें समर्थ माधव २ कपिल देवका रूप धारण कर इस पृथिवी को निरन्तर धारण किये रहते हैं तिनके कोपकी अग्नि से राजा सगर के पुत्र भस्महोजायँगे ३ यह पृथिवी सनातन से चली आतीहै यह नहींहै कि जो जब चाहे इसे मिटायदे इससे अबभी बनी रहेगी व सगर के पुत्रों का विनाशभी होहीगा क्योंकि वे अजर अमरनहींहैं तुमलोग क्यों डरते हौ ४ ब्रह्माजी के ऐसे वचन सुन ८ वसु ११ रुद्र १२ आदित्य २ अश्विनीकुमार ये सब ३३ देवता परमानन्दित हो अपने २ स्थानको चलेगये ५ यहां सगरके पुत्रोंके पृथिवी खोदने का महाकोलाहल वज्रपात के शब्द के समान हुआ ६ सबके सब सगरतनय सब भूमि खोद खन व प्रदक्षिणा कर आय अपने पिता से बोले ७ हमलोगोंने सब पृथिवी ढूंढ़ी व खोदीखनी देवता दानव राक्षस पिशाच सर्प्पादि जो २ बलवान् रहे तिन्हें भी मारापीटा ८ परन्तु न यज्ञका घोड़ाही कहीं देखा न घोड़े के हरनेवालेहीको इस विषयमें हमलोग क्या करें आप बिचारांशकीजिये ९

हे रघुनन्दन तिन पुत्रोंके ऐसे वचन सुन राजों में श्रेष्ठ राजा सगर सहित कोप बोले १० हे पुत्रो तुम लोगोंका कल्याण हो फिर पृथिवी तलखोदो जब घोड़े का चोरमिले तभी कृतार्त्थ हो लौटो ११ महात्मा सगर अपने पिता के ऐसे वचन सुन साठोहजार पुत्र रसातल को दौरे १२ साठहजार योजन पृथिवीतो जानों पहिलेही खोदचुकेथे अब बाकी खोदने लगे खोदते २ जाय देखातो विरूपाक्ष नाम दिग्गज पर्व्वताकार रूप धारण किये भूमण्डलको धारण कियेहैं १३ हेराम सहित पर्व्वत बन तिस दिशाकी सम्पूर्ण पृथिवी वह विरूपाक्ष नाम महागज अपने शिरपै धारण कियेही रहताहै १४ जिस समय कभी मारे भारके थक जाताहै व सुस्तानेके लिये शिर इधर उधर हटाता है तभी भूमिकम्प होताहै १५ तिस दिशापालक महागजके प्रदक्षिणाकर व उसकी पूजा कर रसातल खोदतेहुये फिर आगे को बढ़े १६ पूर्व्वदिशा इस रीति से खोद दक्षिण दिशाकी पृथिवी खोदने लगे उस दिशामेंभी महादिग्गज देखपरा १७ इस हाथीका महापद्मनाम है यहभी पर्व्वताकारही है व शिरपै पृथिवी लादे रहता है इसे देख बड़े विस्मितहुये १८ इसके भी महात्मा सगरके पुत्र प्रदक्षिणाकर पश्चिमदिशा की धरणी खोदनेलगे १९ पश्चिमकी दिशामेंभी पर्व्वताकार सौमनसनाम महादिग्गज देख परा २० तिसके भी प्रदक्षिणाकर कुशलपूंछ खनते खोदते उत्तरदिशा को चले २१ उत्तरदिशा में पालाके समान श्वेतभद्रनाम दिग्गज देख परा वहभी पृथिवीको धारण कियेथा २२ उसेभी देख सब राजकुमारों ने प्रदक्षिणाकी वे साठोहजार वसुधातल खोदते हुये आगेको बढ़े २३ तिसके पीछे उत्तर पूर्व्वके कोनेपै पहुंचे व मारे कोपके भूमि खोदने लगे २४ खोदते २ महाबलवान् महावेगवान् सगरनन्दनों ने सनातन वासुदेव कपिलदेवजीको देखा २५ व उन्हींके समीपही अपने यज्ञके घोड़े कोभी चरते देखा देखतेही सबके सब अतिहर्षित हुये २६ तिनलोगोंने तिन कपिल देवजीको घोड़ेका चोर जान बड़ा क्रोधकर मारने के लिये हल कुदार आदि जोखोदनेकेलिये लियेथे व नानाप्रकारके वृक्ष पत्थर आदि उठाये २७ व क्रोधकर खड़ेहो खड़ेहो ऐसा कहते दौरे व कहने लगे कि हमारे यज्ञका घोड़ा तुम्हींने हराहै २८ व ॥

दो० हेदुर्म्मति जानसि हमें सगरतनयगे आय ॥
सुनि तिन वचन महीपमणि कपिल देव अकुलाय १ । २६
महारोषयुत कीन हुङ्कार शब्द तिनदेखि ॥
अप्रमेय बल कपिलको कहहु सकैको पेखि २ । ३०
तुरत किये सब सगरसुत भस्मभई नहिं देर ॥
सुजन अनादर फलसदा ऐसहिहै श्रुति टेर ३ । ३१

इत्यार्षेरामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डे चत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४० ॥

महाराज सगरने अपने पुत्रोंको बहुत दिन गयेहुये जान अपने तेज से दीप्यमान नाती अंशुमान्‌से कहा १ हे वत्स तुम शूरवीर सब विद्यापढ़े लिखे अपने पिता पितृव्यादिके समानहौ इससे अपने पितृव्योंको ढूंढ़ो तोकहांहैं व घोड़ेके हरनेवालेकोभी ढूंढ़ना २ इस पृथिवी में बड़े२ पराक्रमी शूरवीर प्राणी भरेहैं तिनको हरानेके लिये खड्ग व धनुर्ब्बाण धारण किये रहौ ३ जो कोई बन्दना करने के योग्यहों उनके प्रणाम करना जो विघ्नकारीहों उन्हें मारना इस रीतिसे सब कामकर लौटना जिससे हमारी यज्ञके पारगन्ता होजावो ४ इसभांति जब महात्मा सगरजी ने कहा तो तरवार धनुर्ब्बाणले अंशुमान् चले ५ जाते २ उसी मार्ग्ग में पहुंचे जोउनके पितृव्योंने पृथिवी खोद २ बनायाथा ६ मार्ग्गमें ठौर २ देवता दानव राक्षस पिशाच पक्षी सर्प्पादिजो मिलते सब इनकी पूजा करते जाते२ एक दिग्गज देखा ७ देखतेही प्रदक्षिणाकर कुशलपूंछ अपने पितृव्योंको पूंछा व घोड़ा चोराने वालेकोभी ८ दिग्गज अंशुमान् के वचन सुन बोला हे असमंजसके पुत्र आपका कार्य्य सिद्धहोचुका घोड़ाले शीघ्रही अपने पुरमें पहुंचोगे ९ तिसके ऐसे वचन सुन यथाक्रम यथायोग्य सब दिग्गजोंसे पूंछनेलगे १० सब परमचतुर दिग्गजोंने पूजा कर यहीकहा कि घोड़ा लेकर शीघ्र लौटोगे ११ तिन सबके वचन सुनते सुनाते अति वेगसे जाय वहां पहुंचे जहां उनके चचालोग भस्महोगये थे १२ जबदेखा कि हमारे पितृव्यलोग भस्मीभूत परेहैं अतिदुःखितहो रोदन करनेलगे १३ देखा तो यज्ञ का घोड़ाभी उसी स्थानपैचरता है उसे देख औरभी दुःखितहुये १४ चाहाकि अपने पितृव्यों को तिलांजलि

आदि दें पर इधर उधर देखा कोई कूप तडाग नदी आदि जलाशय वहां न देखपरा १५ तबदृष्टि फैलाकर देखा पक्षियोंके राजा इनके पितृव्योंके मामागरुडजी पर्व्वताकार कुछ दूर पै बैठेथे १६ अंशुमान्‌को बड़े दुःखीदेख गरुडजी बोले हे पुरुषव्याघ्र शोच न कीजिये इनलोगों का वध संसारकी सम्मतसे हुआहै सबको इनसे बड़ी पीडाहुईथी १७ येसब अप्रमेय कपिलजीके कोपसे भस्महुयेहैं इनको लौकिकजल न दीजिये १८ किन्तु हिमवान् पर्व्वतकी बड़ीकन्या गङ्गाजीहैं तिन्हींके जलसे इनकी जलक्रिया करनी चाहिये आपउसका यत्नकीजिये १९ सोयहनहीं कि वहांजाय आप तर्प्पणादिकर आवें नहीं गङ्गाजीको यहांलाइये कि इन भस्मीभूतसबोंकी राखके ऊपर उनकाजल परे जिसके परनेसेये ६००००राजासगरकेपुत्रस्वर्ग्गकोजायँगे२०इसलिये तुम्हारा कल्याण हो जोसमर्त्थहो तोदेवलोकसे महीतलको गङ्गाजीको लावो उनकाउहांसे आनाबड़ा कठिनहै समर्त्थहीका कामहै २१ अब हाल सालतो यह घोड़ालेजाइये अपने पितामहका यज्ञपूर्णकराइये फिरदेखा जायगा२२॥

दो० सुनि सुपर्णके वरवचन अंशुमान बलवान ॥
यज्ञतुरगलै त्वरितपुनि आयगये स्वस्थान १ । २४
दीक्षित नृपसन सबकह्यउ भैतिनमृति ज्यहिभांति ॥
पुनिवरणयो जिमितरणिबिधि भाष्योउरग अराति २ । २४
अंशुमानके घोरअति सुनिनृप वचन दुखारि ॥
वेदविहित विधिसों कियो यज्ञकर्म्म चितधारि ३ । २५
मखकरि आयेनिज पुरहि गंगानयन उपाय ॥
सगरमहीप विचारनहिं आयहु कछुन पोसाय ४ । २६
बहुतकाल बीतानृपति लह्यहुन निश्चयकोय ।
त्रयतिस साहस बर्षकरि राज्यस्वर्ग्गगे सोय ५ । २७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये वालकाण्डे एकचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥४१॥

जबराजासगर स्वर्ग्गवासी हुये तो मन्त्रीलोगों ने उचितजान अंशुमानजी को राज्यसिंहासनपै सुशोभितकराया १ राजा अंशुमान्‌ने बहुत अच्छा राज्यकिया इनकेपुत्र महाप्रतापी दिलीपजीहुये २ दिलीप को राज्यदे राजाअंशुमान् हिमालयपर्व्वतके कंगूरापै तपस्या करने चलेगये ३

वहां गंगाजीके लानेके लिये ३२००० वर्षतक तपस्या करतेरहे अन्तमें स्वर्गीहुये गंगाजीनहीं आई ४यहांदिलीपजीभी अपने पितामहोंका बध सुन मारेदुःखके पीडितरहे परगंगालानेका कुछनिश्चय न हुआ ५ प्रतिदिन यही विचारतेरहे किकैसे गंगाजी आवें कैसेतिनकी जलक्रिया कीजावे इनको हमकैसेतारें इसीचिन्तामें लगेरहे ६ महाधर्म्मात्मा राजा दिलीप ऐसा विचारतेहीरहे कि परमधार्म्मिक भगीरथनाम पुत्र उनके हुआ ७ राजादिलीपने बहुत अश्वमेधादि यज्ञकिये व बड़ेन्यायके साथ ३३००० वर्षतक राज्यकिया ८ पररात्रिदिन पितरोंके तरनेही का उपाय बिचारतेरहे होते२ मारेखुटकाके ऐसारोगहुआ कि मृतक होगयेगंगा लानेकी कोईयुक्ति मनमें न आई परआनही आगे भगीरथ अपने पुत्रको राजाकरचुकेथे अपनेपुण्यके प्रभावसे इन्द्रलोक को पहुंचे १० उनकपीछे महाराज भगीरथ बड़े धार्म्मिक राजर्षि हुये इनके कोई सन्तति नहीं हुई चाहते थे कि सन्तान होजाय तो गङ्गाजीके लानेका उपाय करें ११ जब ऐसा न हुआ तो मन्त्रियों को राज सौंपकर आप गङ्गाजी के लाने के लिये बहुत दिनों तक गोकर्ण तीर्थमें तपस्या करतेरहे १२ जैसेकि पञ्चाग्नि तापते ऊपर को बाहुउठाये रहते महीना २ पर एकदिन भोजन करते जितेन्द्रिय रहते इसप्रकार की घोर तपस्या करते कराते हजारों बर्ष बीते १३ तो प्रजाओं के स्वामी सब कुछ करने में समर्थ ब्रह्माजी महात्मा राजाके ऊपर प्रसन्न हुये १४ व सब देवताओं को सङ्गले तपस्या करते हुये राजा भगीरथ के निकट आय बोले १५ हे महाराज भगीरथ तुमने बड़ी तपस्या की हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं वरदान माँगिये १६ यहसुन महाप्रतापी राजा भगीरथ हाथ जोर सब लोक के पितामह ब्रह्माजी से बोले १७ हे भगवन् जो हमारेऊपर प्रसन्न हुये हो व हमारी तपस्या का कुछ फलहो तो महाराज सगर के सब पुत्र गङ्गाजी का जल पावें १८ क्योंकि जब उन सब महात्मों की राख गङ्गाजल से भीजेगी तभी वे हमारे पितामहादि स्वर्गको जायँगे अन्य कोई उपाय उनके तरने का नहीं १९ व दूसरा वर यह माँगते हैं कि इक्ष्वाकुबंशियों में कोई अपुत्र नहीं हुआ पर मेरे पुत्र नहीं हैं इससे कृपाकर पुत्र भी दीजिये कि इस वंश का नाश न हो २०

जब राजा ने ऐसा कहा तो ब्रह्माजी अति शुभ मधुरबाणी बोले २१ ॥

दो० भूप मनोरथ तोरबड़ होय पूर सब भाँति ॥
यह इक्ष्वाकु महीप कुल नाश रहित गुण भाँति १ ।२२
ज्येष्ठसुता हिम गिरिपकी गङ्गा अस शुभ नाम ॥
ताधारण हित शिवहि की करु प्रार्थना ललाम २ । २३
भूप पतन सुर सरित कर सहिहि न धराकदापि ॥
शिव बिनत्यहिधारणकरणलषत न कहतअलापि ३ । २४
इमि कहि भूपतिसों बहुरि गङ्गासों कहि आप ॥
सकल देव सँग विधिगयहु स्वर्गलोक गतदाप ४ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्गः॥४२॥

जब देवदेव ब्रह्माजी अपने धामको चलेगये तब वर्षदिन तक पृथिवी पै पैरके एक अँगूठा के बल खड़ेहो तपस्या करतेरहे १ फिरऊपर कोहाथ उठाये निरालम्ब पवनहीपान करतेहुये बिना आड़ वृक्षकेसमान अचलहो रात्रिदिन शिवकी उपासना करनेलगे २ इसरीतिसे जबवर्षभर तक तपस्या करतेरहे तो श्रीमहादेवजी प्रसन्नहो राजा भगीरथसे बोले३ हे राजन् हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहुये तुम्हाराप्रिय करेंगे पर्व्वतराज की कन्या गंगाका शिरपर धारण करेंगे ४ तबसब लोकके नमस्कार करने के योग्य हिमवान् की बड़ी कन्या गंगाजीबड़ा सुन्दर रूप बनाय अति बेगसे आकाशसे पतितहो शिव केशिरपैआईं ५ व बिचार करनेलगीं कि अब हम शिव जीके शिर से निकल पातालको चली जायँ ६ तिनका ऐसा घमण्ड जान महादेवजी ने बड़ाक्रोध कर चाहाकि ऐसाकरें जिस में ये हमारी जटाही में भुलाय जायँ ७ गंगाजी जब अति पुण्यदायक हिमवान् के समान शिवजी के जटाजूटमें आईं ८ बहुत कुछ चाहा कि निकल भूतल को चलीजायँ पर जटामण्डल में ऐसी भूलीं कि किसी युक्ति से बाहर न निकलसकीं ९ जब बहुत बरसों तक उसी जटा में बार २ घूमती रहीं राजाने जाना कि अब न आवेंगी तो फिर शिवजीकी तपस्या करनेलगे १० महादेवजी राजाकी तपस्या से बहुत प्रसन्न हुये हिमालय पर्व्वत पै जो ब्रह्माका बनाया हुआ विन्दु सरनाम तडाग है गंगाजी को उसमें छोड़दिया ११ जब इस रीतिसे गंगाजी वहां

छोड़ी गई तो उनकी सातधारा होगईं उनमें ह्लादिनी पावनी व नलिनी १२ ये तीन धारातो विन्दुसर से पूर्व्वदिशाको वहीं व सुचक्षु सीता सिन्धु ये तीन महानदियां १३ पश्चिम दिशाको बहीं व सातईं धारा राजा भगीरथ के पीछे २ चली १४ महाराज भगीरथभी दिव्यरथ पै चढ़ आगे २ चलते थे पीछे २ गंगाजीभी चलीआतीं १५ प्रथम आकाश से शिवजी के शिरपै आईं फिरधरणीतलमें पहुंचीं भूतलमें पहुंचते २ बड़ा जलका कोलाहल शब्दहुआ १६ सब मछली कछुआ आदि जन्तुभी बढ़ते चलेजाते थे जिधर२गंगाजी जातीथीं पृथिवी शोभित होती थी १७ आकाश से भूतल को जाने के समय देवता ऋषि गन्धर्व्व यक्ष सिद्ध चारणादि देखतेथे १८ ये सब देवादि कई २ बिमानों पर चढ़ेहुये कोई २ घोड़े हाथियों पै चढ़ेहुये जैसे २ गंगाजीकी धारा आगेको बढ़ती थी ये लोग भी देखते हुये संग २ चलेजाते थे १९ जानों इसलोक में गंगाजीका आना अद्भुतही था जिसके देखने के लिये अमितपराक्रमी देवगण प्राप्तहुये थे २० देवतालोग देखनेको बड़े बेगसे आकाश से उतरते थे उससमय उनके भूषणोंसे बिना बादरका आकाश ऐसाशोभित होता मानों सैकरों सूर्य्य उदय हैं २१ उस आकाश से उतरती हुई धारामें जो शिंशुमारसर्प अति चंचल मछलियां उछरती थीं मानों उनकी चमक से बिजुली चमक रहीथी २२ व अतिबेगसे चलने के कारण जो जलमें अतिश्वेत फेना उठतेथे उनसे आकाश ऐसा शोभित होताथा जैसा कि शरदकालके बादरों व हंसोंसे शोभित होताहै २३ सो वह गंगाजीकी धारा जहा ऊँचेसे नीचेको गिरती अतिबेगसे जाती कहीं जहां पर्व्वतादि पड़ते वहां टेढ़ी चलती जहां कहीं समान भूमि होती बड़ा फाट होजाता जहां कहीं नरम मिट्टी मिलती काटती २ बहुत नीचे चलीजाती वहां छोटी धारा होजाती जहां कहीं पत्थर आदिकड़े पदार्थों केऊपर हो बहती वहां उछलती हुई देखाई देती जहां कहीं ऊँची भूमिको काटती हुई चलती वहां धीरे२जातीं २४ कहीं २ जलका टक्कर जलसे लगता वहांभी ऊपरको उछलती फिर पृथिवीमें गिरती २५ सो धारा प्रथम शिवजी के शिरसे गिरी फिर भूतल में आई स्नानपानादि करनेवालोंके पापोंको धोतीहुई अतिशोभित हुई २६ भूतलवेवासीऋषि

गन्धर्व्वादि महादेवके शिरसे बहनेके कारण पवित्र जानि मार्ज्जनस्नाना-दिकरते कराते२७ जोलोग किसीके शापसे आकाश सेभूतल को आयेथे व गङ्गाजी में स्नान कर पापहीनहो २८ व शापसे छूट फिर आकाशमें पहुंच स्वर्गलोक को पहुंचे ऐसा गङ्गाजीके जलका प्रभावहै २९ इसके सिवाय जिस २ देशमें गङ्गाजी गईं वहांके जिन २ लोगोंने दर्शन स्पर्श मार्ज्जन स्नानादि किया सब स्वच्छ शरीर हो परमानन्दित हुये ३० राजर्षि महाराज भगीरथजी दिव्यरथ पै चढ़ आगे २ चलते थे तिसके पीछे २ गङ्गाजी चलीजातीं ३१ व देवता ऋषि दैत्य दानव राक्षस ग-न्धर्व्व यक्ष किन्नर नाग ३२ सब अप्सरा सब जलचरजीव भी भगीरथ व गङ्गाजी के पीछे चले जाते ३३ जैसी २ भगीरथ राजाजाते तैसी २ सब पापनाशिनी महायशस्विनी नदियों में श्रेष्ठ गङ्गाजी चलीजातीं३४ जाते २ महात्मा राजा जह्नु जहां यज्ञ करते थे जाय गङ्गाजी वहां प-हुँचीं ३५ जह्नुजी ने देखा कि इनको अपने अति बेगसे चलनेका बड़ा अभिमान है इसलिये उन्हों ने सब गङ्गाजल पान करलिया ३६ यह दशा देख देवता गन्धर्व्व ऋषि मुनिलोग जो साथे २ चलेआते थे पुरु-षों में उत्तम जह्नुजी की बड़ाई करनेलगे ३७ व सबोंने कहा कि आज से गङ्गा तुम्हारी कन्याकहावेंगी अब इनकाजल छोड़दीजिये राजाजह्नु यह सुन बहुत सन्तुष्ट हो अपने कानों की राहसे फिर जल निकाल दिया ३८ गङ्गाको इसरीतिसे छोड़ा जाना कि राजा भगीरथ गङ्गा-सागरको लिये जातेहैं इसलिये उनकी बड़ाईकर अपने यज्ञस्थान को आये ३९ जबसे राजा जह्नुने गङ्गाजी को पानकिया व फिर छोड़दिया व सब देवोंने उनकी कन्या बनाया तबसे गङ्गाजीका एक जाह्नवीऐसा नामहुआ फिर वहांसे गङ्गा भगीरथके पीछे २ चलीं ४० जातेर समुद्र के किनारे पर पहुंचीं वहीं पहुँचतेही राजा भगीरथ का कर्म्म सिद्धहुआ ४१ क्योंकि राजा भगीरथ भी गङ्गाजी को मनसे ले वहां पहुंचे जहां उनके पितामहों की राख परीथी ॥

दो० सकल भस्मकी राशि पर परेउ देव धुनि वारि ॥
पाप रहित ह्वै सगरसुत गये स्वर्ग्ग कहँ झारि १ । ४३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः॥४३॥

इस सर्ग के अन्त में संक्षेप रीतिसे राजा सगर के पुत्रोंका वरना कहागया अब विस्तार पूर्वक कहते हैं महाराज भगीरथ समुद्रके किनारेपै जहां सगरसुतोंकी भस्मपरीथी पहुंचीं गङ्गाजीभी उनकेपीछे पहुंचीं १ जब भस्मके ऊपर गङ्गाजल परा तो सबलोकोंके स्वामी ब्रह्माजी आय राजा भगीरथसे बोले २ हे नरशार्दूल आपने राजा सगर के ६०००० पुत्र तारदिये सबदेवोंके समान स्वर्गकोगये ३ जबतक सागरका जल लोकमें रहेगा तबतक राज सगर के पुत्र स्वर्ग में देवोंके समान निवास करेंगे ४ व ये गङ्गाजी तुम्हारी जेष्ठ कन्याहोंगी तुम्हारे नामसे लोक में प्रसिद्धहो टिकेंगी ५ इनके गङ्गा त्रिपथगा दिव्या भागीरथी ऐसे नामहोंगे जिससे स्वर्ग मर्त्य पाताल तीनलोकोंके मार्गमें हो गङ्गाजी बहीं इससे त्रिपथगा इनका नामहुआ ६ हे राजेन्द्र अब आप अपने सब पितामहों के लिये गङ्गाजल दान कीजिये व जो प्रतिज्ञा गङ्गाजलसे सगरसुतों के तारनेके लियेकी थी उनसे छुट्टी लीजिये ७ धर्म्मात्मों में श्रेष्ठमहायशस्वी आप के पुरुषा राजा सगरने यह मनोरथ नहीं पूरा करपाया ८ तैसेही महातेजस्वी राजा अंशुमान् भी जोकि गङ्गलाने के लिये प्रार्थनाही करतेरहे पर अपनी प्रतिज्ञा को नहीं पूर्णकरसके ९ फिर गुणवान् महर्षियों के समान तेजस्वी हमारे समान तपस्या करनेवाले क्षत्रियधर्म्म प्रतिपालक राजर्षि तुम्हारे पिता दिलीपजी भी गङ्गाजी को प्रार्थना करते ही रहे पर इसलोक में न ले आसके ११ सो इन सबोंकी प्रतिज्ञा आपने पूरीकी व लोकमें सर्वलोक सम्मत परमयश पाया १२ हे राजन् कहां लोकहै गङ्गाजीको तुम्हींने इसलोकमें उतारा इस कर्म्मसे धर्म्मके परमस्थान को पहुंचगये १३ अब इस परमपावन पापनाशक मनोभावन गङ्गाजलमें आपभी स्नान कीजिये अन्यनदियों का जल श्रावण भादों में दूषित होजाता पर इनका जल सदास्नान पान करने के योग्य है इससे स्नानकर पवित्र हो पुण्यफल लीजिये १४ व अपने पितामहोंकी जलक्रिया कीजिये तुम्हारा कल्याण हो अब हम अपनेलोकको जाते हैं आपभी अपनी राजधानी को जाइये १५ यह कह देवोंके ईश सबलोकों के पितामह महायशस्वी ब्रह्माजी अपने लोक को गये १६ फिर राजर्षि भगीरथभी सगरसुतोंकी जलदानक्रिया यथा-

क्रम यथान्यायकर १७ पवित्रहो अपनीराजधानी अयोध्याको आये यहां सब पदार्थ भोगते अपना राज्य करनेलगे १८ महाराज भगीरथ को राजापाय सबलोग शोकरहित धनधान्य सहित चिन्ताहीन होगये १९ हे रामचन्द्र यह गङ्गाजीका चरित विस्तार सहित तुमसे कहा तुम्हारा कल्याण हो आनन्दित हूजिये अब सन्ध्याका समय आयगयाहै उठिये सन्ध्यादि कीजिये २० ॥

दो०। यह गङ्गाकर चरितयश धन आयुष दातार ॥
विप्रक्षत्रि वैश्यादि कहँ जोइ सुनाव उदार १। २१
पितर देव सन्तुष्टता ऊपरहोत सदैव ॥
गङ्गावतरण चरित्त शुभ आयुष देतमुदैव २। २२
रघुबर जो सुनिहैं चरित पैहैं ते सब काम ॥
पापनाश ह्वैहैं बढ़िहि आयुष कीर्ति ललाम ३। २३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डे चतुश्चत्वारिंशस्सर्गः ॥४४॥

विश्वामित्रजीके ऐसे वचनसुन श्रीरामलक्ष्मण महाराजकुमार परम विस्मय को प्राप्तहो मुनिराज कौशिक से बोले १ हे ब्रह्मन् यहगङ्गाजी का उतरना परम अद्भुत आपने कहा व गङ्गाजल से समुद्र का पूरण होजाना भी कहा २ इस आप की कथा की चिन्तना करते २ यह रात्रि मानों हमलोगों को एक क्षणमात्रही की जानपरी ३ हेविश्वामित्रजी रात्रि में हमलोगों ने और कुछनहीं किया केवल उसीकी चिन्तना में लगेरहे ४ यह कहतेही बनाय प्रातःकाल होगया रामचन्द्रजी स्नानसन्ध्यादि आह्निक कर्म्मकर विश्वामित्रजी से बोले ५ रात्रि बीतगई परम सुन्दर गङ्गाचरितसुना अब चलिये नदियों में श्रेष्ठ गङ्गाजीको उतरें ६ आप को आयेहुये जान पुण्यात्मा ऋषियोंकी यह अच्छी सजी सजाई नाव आईहै ७ महात्मा राघवके ऐसे वचन सुन विश्वामित्रजी तयार हुये व मल्लाहोंको बुलायसब ऋषियों समेत रामचन्द्रजी सबको उतारनेलगे ८ जाते २ नाव उत्तर के किनारे पर पहुँची उतरतेही गङ्गातट निवासी जो ऋषिलोग बैठेथे श्रीरामभद्रने उनकी पूजा की व सबजन गंगाकूल पै बैठगये उसीस्थान पै विशालानाम पुरी बसीथी उसे भी देखा ९ रामलक्ष्मण के साथ विश्वामित्रजी विशाला

नगरी में गये उसनगरी की शोभा इन्द्रपुरीही के समान रमणीकथी १०
तब श्रीरामचन्द्रजी ने हाथजोर महामुनि विश्वामित्रजी से बिशाला
पुरी के समाचार पूंछे ११ व यह भी कि इस बिशालापुरी में किस
वंश का राजा राज्यभोगता है हमारे सुननेकी बड़ी इच्छा है आपका
कल्याण हो सुनाइये १२ रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन विश्वामित्रजी
विशाला पुरी के पुराने वृत्तांत कहनेलगे १३ हे राम हम इन्द्रकी कथा
जो इस देशमें हुईहै कहते हैं सुनिये १४ पूर्व्वही सत्ययुग में दिति
के पुत्र महाबलीहुये और अदितिके पुत्र बड़े भाग्यशाली महापराक्रमी
बड़े धार्म्मिक हुये १५ तिन महात्मों को यहबुद्धिहुई कि ऐसाकौन उ-
पाय है जिससे हमलोग अमर अजर ज्वरहीन रोगरहित होजायँ १६
यह चिन्तना करते २ सब देवता दैत्योंके बिचार में ठहरा कि लावो
समुद्रमथें उसमें से अमृत निकलै उसे पानकरने से अमर अजरादि हो-
जायंगे १७ बनाय इस बातकी निश्चयकर नागराज बासुकि को म-
थानी खींचने का न्वैढ़ा बनाय व मन्दराचल को मथानी सब महापरा-
क्रमी देवासुर समुद्र मथने लग १८ सहस्रवर्ष पर्य्यंत बराबर मथते रहे
होते २ बासुकि के शिरों से बिष निकलनेलगा व अपने मुंहों से वे
मन्दराचल की शिला चबाने लगे १९ उनके शिला चबाने से ऐसा
हालाहल महाविष अग्निसमान निकला जिससे देवासुर मनुष्यादि
सहित सब संसार जरने लगा २० तब सब देवगण श्रीमहादेव देवदेव
शङ्करजी के शरणागत हो रक्षा कीजिये २ ऐसा कह स्तुति करनेलगे
२१ जब देवोंने शङ्करजीकी ऐसी स्तुतिकी तो देवदेव महादेवजी आय
प्रकट हुये व शङ्ख चक्र धारण किये श्रीहरि भी तहांही प्रकट हुये २२
व त्रिशूलधारी परमोपकारी दीनभयहारी महादेवजी से हँसकर बोले
हे महादेव देवताओं के मथनेसे जो सबसे प्रथम पदार्त्थ निकलाहै २३
वह तुम्हारा भाग है क्योंकि तुम सुरों में सब से ज्येष्ठ ठहरे इससे प्र-
थमभाग भी तुम्हीं को चाहिये अब अग्रपूजा में यह बिष लीजिये २४
इतना कह श्रीहरि तो उसी स्थान पै अन्तर्द्धान होगये व महादेवजी
देवगणों की भयदेख व श्रीविष्णुके वचन सुन २५ हालाहल महाघोर
बिष अमृतसमान मान पान करगये व देवों को बिदाकर आप अपने

स्थान को चलेगये २६ तब देवता दानव सब मिल फिर समुद्र मथने लगे परन्तु जो मन्दराचल मथानी बनाया गयाथा वह धीरे २ पाताल को चला २७ तब देवता गन्धर्व्वादिकों ने श्रीभगवान् विष्णु की स्तुति की हे भगवन् तुम सब प्राणियों के स्वामी हो बिशेष करके देवताओंके तो तुम्हीं सबकुछ हो २८ इससे हम सबदेवों की पालना कीजिये व यह मन्दराचल नीचे को चलाही जाता है इसे ऊपर को उठाइये यह सुन भगवान्विष्णु ने कच्छपका अवतारलिया २६ जलके भीतरजाय मन्दराचल को अपनी पीठपर धारणकर हाथोंसे पर्व्वत के किनारे आड़े क्योंकि जब वे लोकके स्वामी ठहरे तो पर्व्वतका धारणकरना कौनसी कठिन बात थी ३० एकरूप तो जल के भीतररहा दूसरे रूपसे सब देवताओं के मध्य में स्थित हो श्रीहरि भी मथनेलगे मथते २ फिर हजारवर्ष बीते तो आयुर्व्वेदके आचार्य्य ३१ धन्वन्तरिजी दण्ड कमण्डल ले समुद्रसे निकले ३२ व सब अप्सरालोग निकलीं इनका नामभी अप्सरा इसीसे हुआ जिससे अप जो जल तिससे सर कहे निकलीं इन सबों का रूप भी विलक्षणही होताहै इसीसे इनका अप्सरा नाम हुआ ३३ इनमें ६०००० तो मुख्य अप्सरा हुईं जिनकी दीप्तिके समान दूसरे की दीप्ति नहीं और इनकी दासियाँ तो असंख्यहैं कहांतक गणना करें ३४ तिनको न सब देवताओंने ही ग्रहणकिया न दैत्यों ने इससे वे किसी एककी स्त्रियां न हुईं बरन साधारण स्त्रियां हुईं चाहे देवासुर मनुष्यादिकों में जो उनको अंगीकार करै ३५ तिसके पीछे वरुण वारुणी नाम कन्या मदिरारूप प्रकटहुई वह भी अपना को अंगीकार करनेवाले को ढूंढ़ने लगी ३६ परन्तु दैत्यों ने उसे न ग्रहणकिया देवताओं ने अनन्दित जान ग्रहणकरलिया ३७ इसीसे सुरा जो मदिरा तिसके न ग्रहण करनेसे असुर कहाये व सुरा के ग्रहणकरने से सुर नाम हुआ वारुणी मदिरा को ग्रहणकर देवतालोग बड़े आनन्दित हुये ३८ तिसके पीछे उच्चैश्श्रवा नाम तुरङ्ग श्रेष्ठ निकला फिर कौस्तुभमणि तदनन्तर अमृत निकला ३६ जिसके लिये देवदानव दोनों कुलों की बड़ी क्षय हुई क्योंकि अदितिके पुत्रोंने दितिपुत्रोंके साथ बड़ा युद्धकिया ४० इस युद्ध में देवता राक्षस सब एक होगये इससे त्रैलोक्य मोहन

करनेवाला युद्धहुआ ४१ जबसब नाशहोनेलगे तो भगवान् विष्णुने मोहनीरूप धारणकर अमृत छीनलिया ४२ अक्षय अविनाशी विष्णु से जो विमुख हुये तिनको युद्ध में महाप्रतापी श्रीहरि ने पीटपाट डारा ४३ ॥

दो० अदितिसुतन दितिसुतनको छिन्नभिन्नकरिदीन ॥
महाघोर संग्राम यह देवासुरक प्रवीन १ । ४४
दिति पुत्रन हति शक्र सब राज्य पाय हरषाय ॥
ऋषिमुनिसुरचारणसहित पाल्यहुलोकबनाय २ । ४५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेपञ्चचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४५ ॥

जब दितिके सब पुत्र मारडाले गये तो परम दुःखितहो दितिजी अपने पति कश्यपजी से बोलीं १ हे भगवन् तुम्हारे महात्मा पुत्रोंने हमारे पुत्रों को मारडाला इससे बड़ी तपस्या से चाहे पुत्र मिले पर इन्द्र को मारनेवाला हो ऐसापुत्र चाहती हैं २ सो हम तपस्या करेंगी आप आज्ञा दीजिये कि इन्द्रके मारनेवाला गर्बभ मेरे रहै ३ तिसके ऐसे वचन सुन परमदुःखित दितिजी से कश्यपजी बोले ४ इसी प्रकार का कल्याण तुम्हारा हो बहुतअच्छा तुम पवित्र होकर तपस्या करो संग्राममें इन्द्र के मारनेवाला पुत्र उत्पन्न होगा ५ जो एक हजार वर्ष तक पवित्रतासे रहोगी तो त्रिलोकी के पति इन्द्रको बध करनेवाला हमसे पुत्र उत्पन्न करोगी ६ महा तेजस्वी कश्यप मुनि ऐसाकह अपने हाथोंसे दितिको सुहराय संगले अपने घरको आये ७ जब मुनि घरमें पहुंचगये तो परम हर्षितहो दिति बिशाला पुरी की पूर्व्वओर जो कुशप्लव नाम तपोवनहै वहां जाय अति दारुण तपकरने लगीं ८ जब दिति तप करनेलगीं तो इन्द्र जी आय बड़ी सेवा के साथ उनकी टहल करने लगे ९ अग्नि कुश ईंधन जल फल मूलादि जिसकी इच्छा दिति करती थीं सब इन्द्र आन देते थे १० तपकरने से जो अंग पिराने लगते थे श्रममिटाने के लिये इन्द्रमींज देतेथे सोकुछ किसीकाल का नियम नहींथा जबकभी उनके अंग पिराने लगते तुरंत मींजने लगते ११ इस रीतिसे तपस्या करतेकरते ९९० वर्ष बीते केवल १० वर्ष बाकी रहे तब परमहर्षित हो दिति पुरन्दरसे बोलीं १२ हेबीर महापराक्रमियों में श्रेष्ठ हमको तपस्या

करने में अब केवल १० वर्ष और बाकी रहे तुम्हारा कल्याणहो तिसके पीछे तुम्हारे भाई होगा देखोगे १३ तिसपुत्रको यद्यपि हमतुम्हारे मारने के लिये उत्पन्न किया चाहती हैं तथापि उसके साथ तुम तीनों लोकोंकी विजय करोगे व सब सुख भोगोगे कुछ संदेह नहीं १४ हेसुर श्रेष्ठ जब हमने बड़ी यांचाकीथी तब महात्मा तुम्हारे पिताजीने हमको वरदान दियाथा कि १००० वर्षके पीछे तुम्हारे वांछादायक पुत्रहोगा १५ ऐसा कह दितिजी एकदिन ठीक दुपहरी में ऐसी औंघानी कि शिरहानेकी ओर पाय करके बिस्तरा पै सोयगईं देखो व्रतमें उन्हों ने यह बड़ी अपवित्रता की क्योंकि एकतो सदा दिनमें शयन करने का निषेध है फिर दिनमें शयनकरने से व्रत तो भंगही होजाता है इसके सिवाय शिरहाने की ओर पैर करके सोना भी व्रतभंग कारक है और यही इन्द्र निहारते भी थे कि जैसेही कोई विघ्न इनकी तपस्या में हो तुरंत हम गर्भच्छेदन करडारेंगे काहे को हमारे मारनेवाला पुत्र इनके होगा १६ सो जैसेही इन्द्रने देखा कि दिति आज दिनको शिरहाने की ओर चरण व पैरों की ओर शिरकिये सोय रहीहैं बस अपवित्र होचुकीं इससे बहुत हँसे व हर्षित हुये १७ हेराम तिसके शरीर में किसी छिद्र के मार्गहो अति लघुरूप धारणकर प्रवेश करगये व वहां जाय गर्भ के ७ खंड करडाले १८ जब वज्रसे गर्भको इन्द्रने काटा तो गर्भ रोने लगा व दितिजागीं १९ व इन्द्र गर्भसे कहनेलगे नरोदनकरो नरोदनकरो यह कहने परभी जब उन गर्भके खण्डोंने रोदन न बन्दकिया तो उन सबको फिर मारनेलगे २० तब दितिजीने भी कहा इन्द्र अब न मारो अब न मारो यह सुन माता के बचन की गुरुता से इन्द्र दिति के उदर से निकलआये २१ और ॥

चौ० ॥ जोरि पाणियुग सुरपतिबोले। दितिसों मधुर वचन मुखखोले॥ शिरतन पदकरि सोयहुदेवी। अशुचि भइहु न रहिहुव्रतसेवी १।२२ सो अन्तरलखि सुरपति हन्ता। तुम्हरे सुतहि कीन हम अन्ता॥ सात खण्ड करि क्षमु अपराधा। कीन न न्याय कार्य्य निज साधा २।२३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्गः॥ ४६॥

जब इन्द्रने गर्भके खण्ड करडाले तो परमदुःखित हो दिति न्याय-पूर्व्वक महाप्रतापी पुरन्दरसे बोलीं १ हे इन्द्र हमारेही अपराधसे गर्भ के खण्ड होगये इस विषय में तुम्हारा कुछ अपराध नहीं २ अब हम अपने गर्भके नाश होने परभी अपना व तुम्हारा प्रिय किया चाहती हैं सो यह उपायहै कि ये सातोखण्ड सातो पवनों के स्थानपालक हों ३ व जो संसार में बात स्कन्ध करके प्रसिद्ध पवनहैं तिन्हींमें ये हमारे सातों दिव्यरूप पुत्रभी मारुत के नामसे प्रसिद्ध ह्वै बिचरैं ४ इनमें एक मारुत ब्रह्मलोक में बिचरै दूसरा इन्द्रलोक में तीसरा दिव्यवायु के नाम से प्रसिद्धहो अंतरिक्ष में बिचरै ५ बाकीरहे चार सो तुम्हारी आज्ञासे चारों दिशोंमें एक २ घूमतारहै ये सब हमारेपुत्र देवरूप विचरेंगे सबके सब तुम्हारेही किये हुये नामसे प्रसिद्ध होंगे जोकि तुमने कहाथा न रोदन करो न रोदन करो इसीसे इनका मारुत नामहोगा ६ तिसके ऐसे वचन सुन इन्द्रजी हाथजोड़ दितिसे बोले ७ हेदेवि जो २ तुमने कहाहै सब होगा कुछ सन्देह नहीं देव रूपहो तुम्हारे पुत्र विचरैंगे तुम्हारा कल्याण हो ८ इसरीति से दिति इन्द्र दोनों तपोबन में सम्मतकर कृतार्थ ह्वै स्वर्ग्गको चलेगये यह हमने सुनाहै ९ हेराम सो यह वही स्थानहै जहां दितिने पूर्व्वहो तप कियाथा १० और जो राजाइक्ष्वाकु के अलम्बुसा नाम स्त्रीमें विशालनामक परमधार्म्मिक पुत्र हुआथा उसीने इस स्थानपै विशालानाम पुरी बसाई १२ राजाविशाल के पुत्रका हेमचन्द्र नामहुआ यहभी महाबलवान् राजा हुआहै हेमचन्द्र के पीछे सुचन्द्रनाम राजा हुआ १३ सुचन्द्र के पुत्र धूम्राश्व नामकहुये धूम्राश्वके पुत्र सृंजयनामी उत्पन्न हुये १४ सृंजय के महाप्रतापी धनवान् सहदेव हुये सहदेव के परमधार्म्मिक कुशाश्व पुत्र हुये १५ कुशाश्व के महातेजस्वी व प्रतापी सोमदत्त सोमदत्त के काकुत्स्थ नामक हुये १६ तिसके महाप्रतापी देव-समान रूप महातेजस्वी सुमतिनाम पुत्र हुये जो आजकल इसपुरी के राजाहैं १७ राजा इक्ष्वाकु के प्रसाद से इस विशालापुरी के निवासी सब राजा बहुत दिनों तक जीनेवाले महात्मा पराक्रमी व सुधार्म्मिक होते चले आयेहैं १८ इससे आज यहाँ एक रात्रि सुखसे शयन करेंगे प्रातःकाल चलके राजाजनक को देखेंगे १९ ॥

दो० महायशी नरवर महा तेजस्वी वर भूप ॥
विश्वामित्रागमन सुनि आयहु सुमति अनूप १ । २०
पूजाकरि बहुभांति सब परिजन बन्धु समेत ॥
हाथजोरि पूंछी कुशल पुनि बोल्यहु शुभहेत २ । २१
धन्य २ मैं तव कृपा पात्र राज्य महँ जासु ॥
आयहुतुम मुनिराजज्यहि दर्शन सकलसुपासु ३ । २२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेसप्तचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४७ ॥

इसरीति से विश्वामित्र व सुमति दोनोंजन परस्पर कुशल प्रश्नकर चुके तब राजासुमति मुनिराज से बोले १ कि ये दोकुमार देवतुल्य पराक्रमी महावीर गज सिंह शार्दूल व वृषभ के समान चलनेवाले २ कमलपत्र से भी विशालनयन खड्ग धनुर्व्वाण धारणकिये अश्विनीकुमार समान रूपधारी युवावस्था को प्राप्त हुआही चाहते हैं ३ जानों अपनी इच्छाही से कोई देवता हैं जो देवलोक से भूतलमें अवतरे हैं पैदर यहां कैसे व किसलिये आये व किसके पुत्र हैं ४ इस देशको ऐसा भूषितकिया है जैसे चन्द्रमा सूर्य्य आकाश को भूषित करते हैं सब प्रकार दोनोंजन एकही स्वभाव प्रभाव के देख परते हैं ५ ये नर श्रेष्ठ ऐसे दुर्ग्गम मार्ग्ग में कैसे आये सब श्रेष्ठआयुध धारण किये किस महाराजाधिराजके पुत्र हैं बताइये हमारे सुननेकी बड़ीइच्छाहै ६ तिसके वचनसुन विश्वामित्रजीने सब बताया कि ये महाराजाधिराज अयोध्याधिपति चक्रवर्ती दशरथजीके पुत्रहैं हम इनको यज्ञकी रक्षाकेलिये माँग लायेहैं ताटका मारीच सुबाहु आदिको मार हमारेयज्ञकी रक्षाकर अब हमारे सङ्ग जनकपुरी देखनेजाते हैं यहसुन राजासुमति परम विस्मित हुये ७ व महाराज दशरथ के पुत्र जान परम पवित्र अतिथिमान विधि पूर्व्वक बड़ी पूजा की ८ तहां राजासुमति से परम सत्कार पाय रात्रि भर रह प्रातःकाल राम लक्ष्मण दोनों भाई मुनिके साथ जनकपुरी को चले ९ जाते जाते मिथिलापुरी में पहुंचे जो मुनिलोग विश्वामित्र जी के सङ्ग थे जनकपुरी देख वाह २ करनेलगे १० मिथिलापुरी के उपबन में एक आश्रम पुराना अतिरमणीक देख रामचन्द्रजी ने विश्वा-

मित्रजी से पूंछा ११ कि यह आश्रम तो परमशोभन है पर इसमें मुनि
कोई नहीं है इसलिये हे भगवन् हमारे सुनने की इच्छा है कहिये यह
पहिले का किसका आश्रम है १२ श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन
महामुनि विश्वामित्र जी बोले १३ हे राघव हम तुमसे बताते हैं जि-
सका यह आश्रम है व जैसे इसको मुनिने शापदियाहै १४ यहस्थान
पहिले का गौतमजीका है देवतालोग भी इसकी प्रथमपूजा करते थे
१५ यहाँ गौतमऋषि अपनी स्त्री अहल्याके साथ हजारों वर्ष तक त-
पस्या करते रहे १६ एकदिन मुनिकहीं अपने आश्रम से दूर चलेगये
थे सूना आश्रम जान गौतमका वेष बनाय इन्द्रजीआये १७ व अहल्या
से यह बोले १८ हे प्रिये कामार्थीलोग ऋतुकाल को नहीं निहा-
रते कि अभी रजोदर्शनहुये रात्रि बीतगईहै अब फिर बिना रजोदर्शनहुये
स्त्रीके पास न जायं इससे हमभी आज कामार्थीहैं तुम्हारे सङ्गभोग किया
चाहतेहैं १९ अहल्याने जाना कि ये मुनिका वेष धारणकिये हुये इन्द्र हैं
गौतमनहींहैं क्योंकि ऋषि ऐसाकभी न कहते कि हम ऋतुकालको न ब-
नायँगे तथापि उसदुष्टा अहल्याकी भी बहुत दिनोंसे इन्द्रके सङ्ग बिहार
करने की इच्छा थी बड़ी खुशीके साथ मुनिवेष धारी पुरन्दर के साथ
बिहरी २० व बिहार के पीछे अपनाको कृतार्थ मान इन्द्रसे बोली २१
हे सुरश्रेष्ठ हम आपके भोगसे कृतार्थ हुई अब शीघ्र इस स्थान से
चलेजाइये हमको व अपना को सदा गौतमसे रक्षा करते रहियेगा २२
यहसुन इंद्र हँसतेहुये अहल्यासे बोले हे सुश्रोणि हम तुम्हारेसंग भोग
करनेसे बहुत संतुष्ट हुये अब सुखपूर्व्वक चले जायंगे २३ अहल्या से
ऐसाकह मुनि की कुटीसे इधर उधर निहारते हुयेनिकले कि कहीं गौतम
तो न आतेहों यह बिचारतेहुये जल्दी जल्दी भागे चलेजातेथे २४ कि देखा
तो महा तेजस्वी गौतम मुनि जिनकातेज देवता दानव कोई भी नहीं
सहसक्ते थे बाहर से कुटीको चलेआतेहैं २५ तीर्थके जलमें स्नानकिये
हुये अग्नि के समान देदीप्यमान कुश पाता जल पूर्ण कलश लिये हैं
२६ इन्द्रने ऐसे मुनिको देख भयभीतहो नीचे मुख करलिया २७ मुनि
ने भी देखा कि यह हमारारूप धारणकिये दुष्ट इन्द्रहै असत्कर्म्म किये
चलाजाता है बड़े कोपसे बोले २८ हे दुष्ट मति पुरन्दर जिससे कि

हमारे रूपमें टिकके तुमने यह अनुचित कर्म्म किया है जाव नपुंसक होजावोगे २९ महात्मा गौतमजीने मारे कोपके जैसेही ऐसा कहाहै कि इन्द्रके अण्डकोश पृथिवी में गिरपरे ३० इन्द्रको शाप दे मुनिराज त्रिकालदर्शी तो थेही अपनी स्त्री की भी दुष्टताजान उसेभी शाप दिया कि इस स्थान पै तू सहस्रों वर्षतक बसेगी ३१ ऐसा होगा कि केवल पवनही भोजन करने को मिलेगी और कुछ भी आहार न मिलेगा शापसे भस्महो शिलारूप इसी स्थानपै परी रहगी कोई जीव तुझे न देखेगा ३२ यह बन आजसे निर्ज्जन होजायगा जब महाराज कुमार रामचन्द्रजी यहाँ आवेंगे तो उनके चरणारविन्द की धूलि परने से पवित्रहोजायगी ३३ हे दुष्टे यद्यपि तू इसके योग्य नहीं तथापि रामचन्द्रके चरणकमल की धूलिका ऐसाही माहात्म्य है कि उसके छूतेही तेरा जैसा अब रूप है वैसाही होजायगा वरन लोभ मोह जो अभी तुझ में भरा है वह फिर न रहेगा हमारेसङ्ग फिर भोगबिलास करेगी ३४ ॥

दो० दुराचारिणी नारिसों महा तेज मुनिराज ॥
इमिकहियहआश्रमतज्यो हिमगिरिगयहुसुसाज १
मुनिचारणसिधिगण जहाँ बसत सदा तप हेत ॥
जाय तहाँ लागेकरन अतितपपरम सचेत २ । ३५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेऽष्टचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४८ ॥

जब इस रीति से गौतम मुनि के शापसे इन्द्र नपुंसक होगये तो भयभीत हो अग्नि आदि देवों व सिद्ध चरण गन्धर्व्वादिकोंसे बोले १ देखो गौतम मुनि तपस्या करते थे तिस महात्मा की तपस्यामें विघ्न डालने के लिये हमने उनको क्रोधयुक्त किया तिससे देवताओं का कार्य हुआ नहीं तो तपस्याकर इन्द्रलोक लेही लेते सो मुनिने कोपसे हमको नपुंसक करदिया व अपनी स्त्री को भी निरादर करदिया इस रीति से बड़ाशाप देनेके हेतुसे हमने उनकी तपस्या हरली जो शाप न देते तो काहेको उनका तपोबल कम परता ३ तिससे हे सब देवो व सिद्ध चारण ऋषि गन्धर्बो तुम लोगों का कार्य्यही करने में हमारी यह दशा हुई है अब हमको फिर किसी युक्ति से अच्छे करो ४ इन्द्रजी के ऐसे

वचनसुन अग्न्यादि देवता सब सिद्ध चारण गन्धर्वादिकों को सङ्गले पितरों के देवता कव्यवाहनादिकों के निकट जाय अग्निके मुखसे बोले ५ कि यह भेड़ाजो तुम लोगोंके लिये षीरके स्थानमें नियतहै इसके तो अण्डकोश हैं और इन्द्र बिना अण्डकोशके होगयेहैं सो भेड़ाके अण्डकोश ले इन्द्रके बहुत जल्द लगादीजिये कि पुरन्दर की नपुंसकता जातीरहै ६ आजसे अब जो कोई बधियाभेड़ा तुमको यज्ञमें बलिप्रदान करेंगे उनको आप लोग अक्षय बहुतसा फलदेंगे ७ अग्निके ऐसे वचनसुन कव्यवाहनादि पितृदेवों ने आय भेड़ा के अण्डकोश ले इन्द्रके लगादिया ८ हे राम तबसे पितरों के देवता नपुंसकभेड़े यज्ञमें लेनेलगे क्योंकि भेड़ोंके अण्ड तो ले इन्द्रके लगादियाथा अब सिवाय नपुंसक और भेड़े उनको कैसे मिलें ६ और तभी से इन्द्रके भेड़के अण्डकोश लगेहैं यह महात्मा गौतमकी तपस्याका प्रभावहै १० तिससे हे रामचन्द्र पुण्यात्मा गौतम मुनिके इस स्थानपै चलिये व इस शिलारूप अहल्या को तारिये कि फिर देव समान रूपिणी होजाय ११ विश्वामित्रजीके ऐसे वचन सुन श्रीराम लक्ष्मण कौशिक मुनि को आगेकर गौतमजी के आश्रम में पैठे १२ देखातो वहां अहल्या शिलारूपसे तपस्या कर रहीहै सुरासुर मनुष्य पशु पक्षी मारे तेजके कोई सामने नहीं आयसक्ता १३ मानो ब्रह्माजीने अपने हाथसे ऐसी माया रूपिणी को बनाया है जैसे धुआंके बीच में भी बरती हुई अग्निकी शिखा देख परती है वैसेही अहल्या यद्यपि भस्मके बीचमें परीथी पर ऐसा तेजथा कि कोई निकट नहीं जाय सकता था १४ फिर मानों पाला सहित बादर में छिपी हुई चन्द्रमाकी प्रभा है मानों पानीके बीचमें अतिदुर्द्धर्ष सूर्य्यकी प्रभाहै १५ अहल्याको लोग इसलिये नहीं देख सकतेथे कि गौतम मुनिने शापके समय में यहभी कहदियाथा कि जबतक रामचन्द्रजीके दर्शन तुझको न होंगे त्रिलोकी में कोई ऐसानहीं जो तुझे निहार सकै इसीसे कोई नहींदेख सकताथा १६ जैसेही श्रीरामचन्द्र वहां पहुंचे व उसने दर्शनकिया रामचन्द्रजी के चरणारविन्द की रज उसके ऊपर परी कि वह शापसे छूट दिव्यरूप होगई १७ राम लक्ष्मण दोनों भाइयों ने मुनिकी स्त्रीजान अहल्या के चरण छुये अहल्याकोभी गौतमजीके वचन की सुधि आई कि वह दोनों

भाइयों के चरणों पर गिरी १८ व अर्घ्य पाद्याचमनीयादि दे बड़ी पूजा करनेलगी रामचन्द्रजीने विधि पूर्व्वक पूजादेख प्रसन्नतासे अङ्गीकारकिया १९ उस समय गन्धर्व्व अप्सरा सिद्ध चारणादिकों ने श्रीरामचन्द्र व अहल्याके ऊपर फूल बरसाये देवताओंने नगारे बजाये २० व सब देवगण वाह २ कर अहल्या की पूजा करनेलगे देखो अपने तपोबलसे रामचन्द्रके चरणकमलकी विमलधूरिपाय फिर गौतमकी गति को प्राप्त हुई २१ गौतमजीभी अपने तपोबल से श्रीरामचन्द्र जी का आगमन जान अति शीघ्र तपस्या छोड़ अपने आश्रमपै पहुंचे यहां पूर्व्वकाल के समान रूपिणी अहल्याको पाय परम सुखी हुये रामचन्द्रजी की विधिवत् पूजाकर अपने फिर दोनों प्राणी तपस्या करनेलगे २२ ॥

दो० मुनिवर गौतम कृतलही पूजा श्रीरघुनाथ ॥
कौशिक लक्ष्मण मुनिसहित मिथिलाकीन सनाथ १ । २३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेएकोनपञ्चाशस्सर्गः ४९ ॥

जनकपुरीमें विश्वामित्र लक्ष्मण व सब मुनियोंके सङ्ग श्रीराम पहुंच ईशानकोण में जो जनकजीकी यज्ञ सभाथी वहां पहुंचे १ व विश्वामित्र जीसे बोले हे मुनिराज राजा जनक के यज्ञ की सामग्री तो बहुत उत्तम है २ देखिये वेदाध्ययन शाली नानादेश निवासी सहस्रों ब्राह्मण इस यज्ञ भूमिमेंहैं ३ ऋषियों के यज्ञकी सामग्री सैकरों छकड़ों पर लदी है ठौर २ मुनिलोग उतरे हैं इससे आपभी कोई अच्छा स्थान बिचारिये जहां सब जनोंके रहनेका सुपासहो ४ रामचन्द्रके वचन सुन महामुनि विश्वामित्रजी जहां अच्छा फैल स्थान सुन्दर जलाशय सहित था जाय वहां उतरे ५ विश्वामित्रजी का आगमन सुन राजाजनकजी अपने पुरोहित शतानन्दजी को आगेकर ६ सब ऋत्विजों के साथ मुनिके लिये अर्घ्यादि सामग्रीलिये नियम के साथ आनपहुंचे ७ व धर्म्मशास्त्र के अनुसार जो ब्राह्मणकेलिये भेंट चाहिये सब कुछले विश्वामित्रजी के आगे निवेदनकिया ८ महात्मा राजाजनककी दीहुई पूजाले राजा से पूंछनेलगे राजन् यज्ञमें तो सब प्रकारसे कुशलहै ९ राजा से पूंछ पांछे शतानन्दादि जो ऋषिलोग राजाके सङ्ग आयेथे उनसे भी कुशलप्रश्न

किया कराया व सबके सङ्ग मिले भेंटे १० तब राजा हाथ जोड़ विश्वामित्रजीसे बोले मुनिराज आप अपने सङ्गी सब मुनियोंके सङ्ग इन आसनों पै निवास कीजिये ११ राजाके वचन सुन विश्वामित्रजी अपनी समाजके सङ्ग बैठे किनारेकिनारेराजा व उनके पुरोहितऋत्विज आदिसब उचित उचित स्थानों पै बैठै १२ सबको यथोचित स्थानपै बैठेहुये देखमहाराज जनक विश्वामित्रजीसे बोले १३ आपके दर्शनसे आज मेरे यज्ञकी बढ़ती देवताओं ने की व आज यज्ञका फल मैंने पाया १४ मैं धन्यहूं आपने बड़ी अनुग्रहकी जो मेरे यज्ञ में सब मुनियों के साथ कृपाकर आये १५ ऋत्विजलोग कहतेहैं कि अब केवल १२ दिन और यज्ञपूर्ण होने के रहेहैं तिसके पीछे यज्ञभाग लेनेके लिये देवतालोग आवेंगे आप उनको देखेंगे १६ मुनि से ऐसाकह प्रसन्न मुख हो हाथजोड़ राजा फिर बोले १७ हे मुनिराज आपका कल्याण हो यह तो बताइये कि ये दो कुमार विष्णु के तुल्य पराक्रमी महाबीर हाथी सिंह शार्दूल व वृषभ के समान समय समय पर चलने वाले १८ कमलदल समान विशाल नयन खड्ग तरकस धनुष बाण धारण किये अश्विनीकुमार के समान रूपवान् युवावस्था को जानों पहुँचनेहीं चाहते हैं १९ जानों अपनेहीं मनसे देवलोकसे कोई देवता हैं भूतल में आय गये हैं दोनों कमलदल समान विशाल नयन श्रेष्ठ आयुध धारणकिये २० अंगुलियों की रक्षा के लिये गोहकी खाल बांधे तरवार लिये महा तेजस्वी सो ये पैदर कैसे यहां आये व किसके अर्थ व किसके बालक हैं २१ श्रेष्ठ आयुध धारणकिये किसी राजा के पुत्र तो नहीं हैं इस देश को ऐसा भूषित कररहे हैं जैसे चन्द्रमा व सूर्य्य आकाश को भूषित करते हैं २२ प्रमाण व चाल ढालसे आपस में दोनों समानहैं जुल्फैं रखाये महाबीर मानों विशाख व कार्त्तिकेय हैं २३ रूप उदारतादि सब गुणोंसे पुरुषोंकी दृष्टि व चित्त को हरे लेते हैं मानों हमारे कुलको प्रकाशित कर हमको उद्धार करनेको यहां आयेहैं २४ राजा जनक के ऐसे वचन सुन मुनिराज विश्वामित्रजीने कहा कि ये महाराजाधिराज चक्रवर्त्ती दशरथजीके पुत्रहैं २५ इनको हम यज्ञकी रक्षाके लिये राजासे मांग लाये हैं सोइन्होंने सिद्धाश्रमपै आय मारीचादि राक्षसों को मारा यद्यपि कोई बाहन इनके संग नहीं न

कोई सेना रक्षा के लियेहैं तथापि ये निर्भय राक्षसादि सेवित मार्ग्ग में चलेआतेहैं गलीमें विशालापुरी आदिभी देख देखाय २६ यहां तुम्हारे उपवनमें अपने चरणोंकी धूलिसे अहल्याको तारा गौतमजी से भी भेंटहुई अब धनुर्य्यज्ञ देखनेकी इच्छासे तुम्हारेयहां आयेहैं २७ ॥

दो० इमि सब जनक महीपसों कहि मुनि कौशिक नाथ ॥
राम लषणके चरित गुण ज्यहिसुनि जनक सनाथ १।२८

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डे पञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५० ॥

परम बुद्धिमान विश्वामित्रजीके वचन सुन प्रहृष्टरोम महा तेजस्वी महातपस्वी १ अपने तपोबलसे प्रकाशित गौतम मुनिके ज्येष्ठ पुत्र शतानन्दजी रामचन्द्रजीके दर्शनसे परम विस्मितहो २ इन दोनों राजकुमारोंको सुखपूर्व्वक बैठे देख विश्वामित्रजीसे हाथजोड़बोले ३ हेमुनि शार्दूल भलाहमारी यशस्विनी माता बहुत दिनोंसे तपस्या करतीथा महाराज कुमार रामचन्द्रजीको आपने देखायाथा ४ भला हमारी परम यशस्विनी माताने सब प्राणियोंसे पूजित श्रीरामचन्द्रजीकी पूजा बनके फूल फलादिकोंसे की वा नहीं ५ भला पूर्व्वहीका वह वृत्तान्त जो कि दुष्ट इन्द्रने हमारी माताके सङ्ग दुराचारकियाथा सो रामचन्द्रसे कहाथा वा नहीं ६ भला हेकौशिक रामचन्द्रके दर्शनसे हमारी माता हमारे पिता को प्राप्तहुई वा नहीं ७ भला हे कौशिक हमारे पिताजीने रामभद्र की पूजाकीथी यहां महात्मा गौतमकी पूजा पायकर आयेहैं वा नहीं ८ भला हमारी मातासे पूजा पायेहुये श्रीरामने जब गौतमजी अपने आश्रमपै आये तो उनसे अभिवादन कियाथा वा हमारी माताके कुछ दोष बिचार तिरस्कार तो नहींकिया ९ ऐसे वचन सुन महामुनि विश्वामित्रजी परम चतुर शतानन्दजीसे बड़ी चतुरता व सावधानीके साथ बोले १०हे मुनिश्रेष्ठ जोकुछ हमारे कहने सुनने करने धरने को था सबकुछ कहा सुना कियाकराया कोई कर्त्तव्य बाकी नहीं रही जैसे जमदग्निजी ने रेणुकाको शापदिया व पीछेसे अनुग्रहकर अङ्गीकार किया वैसेही आप के पिता नेभी तुम्हारी माताके ऊपर कृपाकी व ग्रहण करलिया ११ विश्वामित्रजीके ऐसे वचनसुन शतानन्दजी श्रीरामचन्द्र महाराज से

बोले १२ हे नरश्रेष्ठ बड़ेभाग्यकी बातहै जोआप विश्वामित्रके साथ हमारे पिताके स्थानपै आये किआपकी कृपासे हमारी माता तरी इन महर्षि विश्वामित्रकी कहांतक बड़ाई करें कि सैकरों ऋषिलोग पूजा किया करतेहैं १३ इनके सब कर्म्म अचिन्त्यहैं देखो तपोबलसे ब्रह्मर्षिहो गये फिर ब्रह्मर्षियोंमें भी ऐसे वैसेनहीं अमित प्रभाव इनको आपभी जानतेहोंगे कि जैसा प्रभावहै हमारे तुम्हारे दोनोंके ऊपर परम कृपालु हैं १४ आपसे धन्य और कोई भूतलमें नहीं जिसके रक्षक महातपस्वी विश्वामित्रजीहैं १५ हे राम अब सुनिये विश्वामित्रजीका जैसा बल व जैसानिश्चयहै सब तुमसे कहते हैं१६एक बड़े धर्म्मात्मा शत्रु नाशनकारी धर्म्मज्ञ सब विद्या पढ़े हुये प्रजापालनमें तत्पर १७ प्रजापतिके पुत्र कुशनाम राजाहुये कुशके पुत्र कुशनाभ नाम बड़े बलवान् व धर्म्मात्माराजा हुये १८ राजा कुशनाभ के गाधिनामपुत्र महाप्रतापी हुये उन्हीं गाधि के ये महाप्रतापी विश्वामित्रमुनि हुये १९ विश्वामित्रजी राजाहो बड़े धर्म्म व न्यायसे पृथिवी व प्रजाको पालनेलगे इसरीति से सहस्रों वर्षतक राज्य करते रहे २० एक समय राजाविश्वामित्रजी बड़ी भारी कई अक्षोहिणी सेना इकट्ठाकर पृथिवीमें घूमने लगे २१ बहुतसे नगर राज्यनदी महापर्व्वत नानाप्रकारके मुनियोंके आश्रम घूमते२ वसिष्ठ जीके आश्रमपै आये २२ जो आश्रम नानाप्रकारके पक्षी व लतावोंसे भरा पुरा नानाप्रकारके वन्यजीवोंसे शोभायमान सिद्ध चारणोंसे सेवित २३ देव दानव किन्नर गन्धर्व्वादिसे उपशोभित प्रशान्तचित्त हरिणोंसे भरा ब्राह्मणोंके झुण्डके झुण्ड बैठे २४ ब्रह्मर्षियोंके गणोंसे सेवित देवर्षि गणोंसेभी सेवित जितने ब्राह्मण वहां बैठेहैं सबके सब मारेतपस्याके अग्निहींके समान देदीप्यमानहैं २५ जितने महात्मा वहांबसते सब वेद-रूप कहीं बैठनेकी जगह नहीं सब मुनिहींमुनि देख परें उनमें कोई२तो जलही पान करके रहते कोई२ वायुपीकर रहते कोई२सूखे पत्ताखाय२ रहते २६ कोई २ अन्य फलमूलखाते सबके सब इन्द्रियोंको दमनकिये कोई २ बिलकुल जितेन्द्रिय ऐसे ऋषि लोग व बालखिल्य सहस्रों भरे कोई मुनि ऐसानहींजो जपहोम सन्ध्या तर्प्पणकरनेमेंपरायण नहो २७॥

दो० वैखानसमुनि सिद्धि गण विचरिरहे चहुंपास ॥

अस वसिष्ठ आश्रम अपर ब्रह्मलोक समवास १ । २८
नृपति शिरोमणि दीखतब विश्वामित्रविशाल ॥
देखतही निज बलसहित सबजन भयहु निहाल २ । २६

इत्यार्षे रामायणे बाल्मीकीये वालकाण्डे एकपंचाशत्तमस्सर्ग्गः५१॥

ऐसे आश्रमको देखमहाबलवान्राजा विश्वामित्रबहुतप्रसन्नहुये व जपकरनेवालोंमें श्रेष्ठ वसिष्ठजी के विनय सहित प्रणाम किया १महात्मा वसिष्ठजीने पूंछा राजन् बहुत अच्छीतरह यह कह राजाको आसनभी दिया २ जब अच्छी तरह विश्वामित्रजी बैठे तो मुनिराजने फल मूल जोकुछ मौजूदथा विश्वामित्रकेभोजनके लियेदिया ३ वसिष्ठजी से ऐसीपूजापाय राजश्रेष्ठ विश्वात्रजीने तपस्या अग्नि शिष्यादिकोंकी कुशल मुनिराजसे पूंछी ४ तब वसिष्ठजीने अग्निहोत्र वृक्षादिकोंकी सबकीकुशल राजासे कही ५ जब राजा सुखसे बैठेतो तपस्वियोंमें श्रेष्ठ ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी फिर राजासे बोले ६ हेराजन् भलातुम्हारे यहां सब कुशलतोहै भला धर्म्म पूर्व्वक प्रजाकापालनतो करतेहो हेधार्म्मिक भला राजोंकेजोचारप्रकारके वृत्तहोतेहैं जैसे किन्यायसे द्रव्य बटोरना न्यायहीसे प्रजाका पालनकरना व बढ़ाना तथासत्पात्रको दानदेनासो इसीरीतिसे राज्य करतेहो ७ भला नौकर चाकरोंको भली विधि नौकरी चाकरी देकर पालन करतेहो व सब प्रजातुम्हारी शिक्षामें चलतीहै भला सब शत्रुओंको तुमने जीति लियाहै ८ हे शत्रुसूदन भला तुम्हारी सेना खजाना मित्र पुत्र पौत्रादिकोंमें तोकुशलहै ६ यह सुन राजा विश्वामित्रजीनेसबोंमें कुशल बताई व विनय सहित वसिष्ठजीसे बोले १० इसरीतिसे कभी मुनिसे राजाने कभी राजासे मुनिने परस्पर परमानन्दितहो दोनोंजने विविधि भांतिकी कथा कहते कहाते रहे ११ जब कथा समाप्त हुई तो वसिष्ठजी हँसतेहुये विश्वामित्रजीसे बोले १२ हेराजन् यद्यपि आपकेसाथ बहुत सेनाहै तथापि हमारी इच्छाहै कि सहित सैन्य आपकी महिमानीकरें जो आप प्रसन्नता सहित अङ्गीकार करें १३ हे राजन् तुम अभ्यागतोंमें श्रेष्ठहो जो सत्कार हमसे होसकै आदर पूर्व्वक ग्रहण कीजिये १४ जब इस भांति वसिष्ठजीने कहा तो राजाबोले

मुनिराज आपने हमारी पहुनईकी हमारी जानमें आपका वचनहीं पूजाहै १५ इसके सिवाय फल फूल मूल विमल जल जोकुछ तुम्हारे आश्रमपै विद्यमानथा उससे भी हमारी पहुनईकी सर्व्वोपरि हमको दर्शन दिया इससे बढ़के और क्याहै १६ कहां लो कहें आपकी पूजा हमको चाहिये कि करें सो आपहीने सबभांतिसे करी अब हम प्रणाम करतेहैं व अपने स्थानको जातेहैं सदा कृपादृष्टि से देखाकीजियेगा यही हमारी महिमानीहै १७ जब राजाने ऐसाकहा तोमहादानी वसिष्ठजीने बार२ कह२ निमन्त्रणकिया कि नहीं अवश्यहीहमारी पहुनई कबूलहो १८ विश्वामित्र जीनेकहाबहुत अच्छा जिसमें आपकी प्रसन्नताहो सोई सही १६ जब विश्वामित्रजीने पूजा लेनेको अङ्गीकार किया तो वसिष्ठजीने नन्दिनीनाम अपनी गायको बुलाया यह नन्दिनी कामधेनुकी नातिनीथी व कहा २० कि हम सहित सैन्य इस राजर्षिकी पहुनई अच्छे २ भोजनों से किया चाहते हैं सो तुम सब सामग्री बहुत जल्द करो २१ छः रसों में जिसको २ जिस २ की इच्छा हो तिसको २ तौन २ पहुंचाओ क्योंकि तुम कामधेनु तो हौ क्यानहीं देसक्ती २२ फिर रसों में भी खानेपीने चाटने सूंघने आदि के सब पदार्थ तुरन्त प्रत्येक मनुष्य की रुचि के अनुसार सबके लग पहुंचाओ. अब विलम्ब न हो इसके सिवाय सब प्रकार के अन्नों के ढेर भी लगादो जिसमें जिसे जो भावे सो वही ले २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये वालकाण्डे द्विपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ५२ ॥

जब इसरीति से वसिष्ठजी ने अपनी धेनुसे कहा तो उस कामधेनु ने जिसको जो बांछित था उसके लिये वही पदार्त्थ पहुंचाया १ जैसे ऊख के जितने विकार सब प्रकार की मिठाइयाँ हैं शहद से बनीहुई चीजें धान इत्यादि के लावा अवँरा महुआ हर्र गुड़ आदि मिलाय एक प्रकार की मदिरा व साधारण मद्य पीने की नानाप्रकार की बस्तु पुआ आदि खाने की अनेकप्रकार की बस्तु २ गरम भात के ढेर पर्व्वताकार रसिआउरि नानाप्रकार की दालि दधि दुग्ध की तो छोटी २ नदियां ३ नानाप्रकार के स्वादिष्ठ खांड़ के विकार इनको छोड़ और नानाप्रकार के पदार्थों से पूर्ण भोजनपात्र कर दिये ४ कहां तक कहें जिसको जो

कुछ भोजन अभीष्टथा उसके आगेवही पहुंचगया जिससे राजा विश्वामित्र जी की सेना के सबलोग तृप्त होगये ५ विश्वामित्र जी भी अपने पुरोहित मन्त्री दीवान सबके साथ अपूर्व्व पदार्त्थ भोजनकर बहुत प्रसन्न हुये ६ जब सब नौकर चाकर मन्त्री दीवान सेना आदि के साथ राजा हर्षित हुये तो वसिष्ठजी से बोले ७ कि हे ब्रह्मन् पूजनीय आपने हमारी पूजाकरी व सबप्रकार के सत्कार किये अब हम कुछ कहते हैं श्रवण कीजिये ८ इस गाय के स्थान में हमसे सैकरों सहस्त्रों गायें लीजिये इसे हमें दीजिये व क्योंकि यह एकप्रकार का रत्नहै और जितने रत्न संसार में हैं उनके लेनेवाला राजाही होताहै ९ तिससे यह धेनु हम को दीजिये धर्म्म की राहसे यह हमारीही है जब विश्वामित्रजीने वसिष्ठजी से ऐसा कहा तो १० मुनिराज राजा विश्वामित्रजी से बोले हे राजन् न हम सैकरों धेनु देनेसे न अर्ब्बों धेनु देनेसे ११ न चांदी की राशि देने से अपनी गाय देंगे क्योंकि यह हमारे यहां से परित्याग करने के योग्य नहीं है १२ जैसें मनस्वीपुरुष को अपनी कीर्त्ति के बटोरने में बिचार रहता है वह उसे कभी नहीं जाने देता वैसेही हमको यह गाय है क्योंकि इसीसे देवता पितरों का काम चलता व हमारी प्राणयात्रा होती है १३ व इसीसे सब अग्निहोत्रक्रिया वलि वैश्वदेव अतिथि पूजन होमसामग्री स्वाहा स्वधा वषट्कार विविध प्रकार की विद्या हैं १४ यावदेक पदार्त्थ हैं सब इसी से हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है हमारा सर्व्व धन यही है व इसीसे हम सदा सन्तुष्टचित्त बनेरहते हैं कि जब जो चाहते हैं देदेती है कहां तक बतावें बहुत कारण हैं जिनसे इसे हम तुमको नहीं देसक्ते १५ वसिष्ठजी के ऐसे बचन सुन विश्वामित्र जी बड़े हठ के साथ बड़ी सावधानी से फिर बोले १६ हे मुनिराज सुवर्ण की घण्टा बाँधे सोनेही की जंजीरों से बँधे हुये सुवर्णही के अंकुश हौदा आदि सहित चौदह सहस्त्र हाथी आप को देंगे १७ व सुवर्णही की घण्टा बँधी हुई सब सुवर्ण मय चार २ घोड़े नहे हुये आठसै रथदेंगे १८ व काम्बोज बाह्लीक अरब आदिदेशों में उत्पन्न उच्चैश्श्रवा आदि की जाति के घोड़े सब सुवर्ण के भूषण पहिने हुये ११००० आपको देंगे १९ व नानाप्रकार के रंगों की जु-

वानी गायें एककरोर देंगे पर यह शबल रंग की अपनी गाय हमको देहीदीजिये २० कहां तक कहें जितने रत्न व जितना सोना चाहोगे सब देंगे पर यह गाय हमको दीजिये २१ इसरीति से विश्वामित्र जीनें भल २ कहा पर उन्हों ने कहा राजन् हमतो किसीरीति से न देंगे फिर चाहे जो हो २२ क्योंकि यही हमारा रत्नहै यही हमारा धन है यही हमारा सर्व्वस्व है व यही हमारे प्राण रूप हैं २३ ॥

दो० पौर्ण मास अरु दर्शमख विविध दक्षिणा साथ ॥
विविध क्रिया ममहैं यही यासों रहत सनाथ १ । २४
सकल क्रियन की मूल यह यामहँ संशय नाहिं ॥
बहु प्रलाप सों काम नहिँ यहनदेब तुम काहिं २ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेआदिकाव्येत्रिपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५३ ॥

हे राम जब वसिष्ठ जीने अपनी कामधेनु न दी तो राजा विश्वामित्र जीने जबरदस्ती गाय छोरलिया १ जब छोरके मुनिराज की धेनु राजा लेचले तो मारे दुःख के रोदन करने लगी व मारे शोकके व्याकुलहुई २ व अपने मन में बिचारने लगी कि क्या हमको महात्मा वसिष्ठ जीने त्याग दिया जो राजा के दूत खेदेलिये जाते हैं हमारे दुःख को नहीं देखते ३ महासिद्ध महात्मा महर्षि वसिष्ठजी का मैंने कौन अपकार किया जो मुझ निर्दोष को धार्म्मिक मुनिराज छोड़े देते हैं ४ मुनिधेनु ऐसी चिन्तनाकर बारम्बार ऊंचीसांसे ले राजभटों के हाथसे छोड़ाय अतिवेग से महापराक्रमी मुनिराज महाराज वसिष्ठजी के पास पहुँची ५ सैकरों महापराक्रमीयोधा नन्दिनीको पकरे थे पर सबको झिटक पटक वायुवेग महात्मा वसिष्ठजी के चरणशरणमें पहुंची ६ पहुंचतेही बार २ बँबाने हुंकरने व रोनेलगी वसिष्ठजीके आगेठाढ़हो रोतीहुई मनुष्यकी बोलीबनाय यहबोली ७ हे भगवन् क्या आपने मुझको परित्यागकिया जो तुम्हारे यहांसे राजाकेयोधा मुझकोलिये जातेहैं ८ यहसुन ब्रह्मर्षि जी परमदुःखित धेनुसेबोले जैसेकोई अपनीभगिनी को दुःखितदेख बड़े प्रेमसे पूछताहै ९ हे नन्दिनि न हम तुमको त्यागतेहीहैं न तुमनेकुछहमारा अपराधही कियाहै यहराजा अपने बलसे जबरदस्ती हमसे तुमको छीने

लिये जाताहै १० हमारे इसके समान सेनानहीं कि युद्धकरें रहातपोबल सो उससे हमजीत सकतेहैं परन्तु एकतो राजा ऐसेही अवध्यहोताहै दूसरे आजतो विशेषरीतिसे अवध्यहै क्योंकि आजहमने अतिथि जानके इसे खिलाया पिआयाहै अबक्यामारें फिरयह पृथिवीका पतिहै यद्यपि तपोबलसे क्षत्रिय राजा को न मारनाचाहिये तथापि मारभी डारें तो देशबिना राजाका होजाय सबप्रजापीडित होजाय ११ कुछआपअकेला हमसे अधिक बलवान्नहींहै पर इसके साथ यहकई अक्षौहिणी सेनाहै जिसमें सैकरोंहाथी घोड़रथ छकड़ेहैं इससे वह हमसे बलवत्तमही है १२ जब वसिष्ठजीने ऐसाकहातो बहुतनम्रहो महाप्रभाव मुनिराजसे धेनुफिरमधुर वचनबोली १३ हे ब्रह्मन् क्षत्रियोंके अल्पबल होताहै व ब्राह्मणोंके क्षत्रियादिकोंसे बहुत इसीसे ब्राह्मणही बलवत्तर होते हैं सदासब प्रकारसे ब्राह्मणोंका तपोबल क्षत्रियोंके बलसे अधिकही होताहै १४ आपकेअपरिमित बलहै विश्वामित्र यद्यपि महापराक्रमीहैं तथापि आपसे अधिक वलवान् नहींहै क्योंकि तुम्हारातेज वे नहींसहसकते १५ हे महातेजस्वी बसिष्ठजी हमको इसकार्य्यके लिये प्रेरणाकीजिये व अपना ब्रह्मबलभी हम में आरोपण कीजिये तिसदुष्टात्मा राजाके अहङ्कार व जो कुछसेनाहै सबहम क्षणमात्रमें नाशदेतीहैं १६ जब महायशस्वी वसिष्ठजीसे गायने ऐसाकहा तो वे बोले अच्छातुम ऐसीसेना अपनेबलसे उत्पन्नकरो जो शत्रुके बलको मर्द्दनकरे १७ तिसकेऐसे वचनसुन उस कामधेनुने हुङ्कारमारा जिससे सैकरों पह्लवनाम म्लेच्छ उत्पन्नहुये १८ विश्वामित्र देखतेही थे किउन पह्लवोंने उनकीसब सेनामारडारी इसदशाको देख राजाने परमक्रोध किया व कड़ीआंखेंकर निहारा १९ व नानाप्रकारके छोटेबड़े आयुधोंसे पह्लवोंको मारडारा तो विश्वामित्रके मारेहुये सैकरों पह्लवोंकोदेख २० फिर कामधेनुने शक व यवननामकम्लेच्छ उत्पन्नकिये तिन शक व यवनोंसे पृथिवी पूर्णहोगई २१ ये सब शक यवनादि बड़ेतेजस्वी महापराक्रमी सबपीलेवस्त्र धारणकिये अतितीखी तरवार पटा व भाला धारण किये सबके देहोंकारङ्ग सुवर्णके समान चमकदारथा २२ ॥

दो० तिननाश्यो पावकसरिस नृपतिकेरि सबसेन ॥
सोलखि विश्वामित्रनृप छाड़्योअस्त्र सुखेन १ । २३

तिनसों सबशक यवन काम्बोजरु बर्व्वर आदि ॥
धेनुरचित नाशेनृपति म्लेच्छजाति खरनादि २।२४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेचतुःपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः॥५४॥

जब विश्वामित्रजीके अस्त्र शस्त्रोंसे मोहित शकयवनादिकों को देखा तो वसिष्ठजीने कामधेनुसे कहा कि अबकी हमारे कहनेसे योगाभ्यास करके और म्लेच्छ बनाओ १ तब तिस धेनुके हुङ्कारसे सूर्य्यसमान तेजस्वी काम्बोजनामक दूसरे म्लेच्छ उत्पन्नहुये व तिसके स्तनोंसे शस्त्र हाथ में लिये बर्व्वरनामकहुये २ व योनिसे यवन गुदासे शक व रोमोंसे हारीत किरातादि सब म्लेच्छ ३ हे राम तिनसबोंने सहितहाथी घोड़ारथ पैदर के जितनीफौज विश्वामित्रकी थी नाशकरदी ४ जबदेखा कि सब सेना वसिष्ठजीने अपनी धेनुके द्वारानाश करादिया तो मनमें यहबिचारकर कि ऋषिहीके प्रभावसे यहगाय सबनाशकिये देतीहै इससे उन्हींका मारना ठीकहै विश्वामित्रके १०० पुत्रथे नानाप्रकारके आयुध ले २ ५ बड़ा क्रोधकर वसिष्ठजीको मारनेदौरे कि महात्मा बसिष्ठजीने एकऐसी हूंकी भरी कि सबकेसब भस्महोगये ६ तिनकेरथ घोड़ेपैदर आदिजितनी सेनाथी वहभी वसिष्ठजीने एक मुहूर्त्तमात्र में भस्मकरदिया ७ जबसब अपने १०० पुत्र व जितनी सेनाथी सबको देखा कि वसिष्ठजीने भस्मकर दिया तो विश्वामित्रजी बहुत लज्जित हुये व मानों बिना बेग के समुद्र दांतटूटेहुये सर्प्पग्रहण ग्रसित सूर्य्यके समानतुरन्त प्रभाहीन होगये ८ व सबपुत्र सेना के मारजाने से ऐसेदीनहूये जैसेपक्षीके पङ्खकटजानेपर बलहीन होजाताहै जबसब बलका उत्साह जातारहा तो अब और सेना बटोरनेसे मनखींचलिया जाना कि अब लड़नेसे मुनिराजसे न जीतेंगे १० बस एकअपने पुत्रको राज्य भारदे आप तपस्याकरने को बनको चले गये ११ वहां किन्नर गन्धर्व्व सर्प्पसेवित हिमालय पर्व्वत के समीप जाय महादेव के प्रसाद के लिये तपस्या करनेलगे १२ कुछ काल के पीछे श्रीमहादेवजीने प्रसन्नहो महामुनि विश्वामित्र जी को दर्शन दिया १३ व कहा राजन् किसलिये तपस्या करते हो जो अभीष्ट हो कहिये हम वरदेनेकेलिये आयेहैं जो मनहो मांगिये १४ जब महा-

देवजीने ऐसाकहा तो प्रणामकर विश्वामित्रजी बोले १५ हेमहादेव जो हमारे ऊपर प्रसन्नहुयेहो तो साङ्गोपाङ्ग उपनिषद सहित धनुर्व्वेद दीजिये १६ जो जो अस्त्र शस्त्र देवता दानव महर्षि गन्धर्व्व यक्षराक्षसादिकों केहैं सब आपके प्रसादही से आयजावें पढ़ने की आवश्यकता न रहै १७ जब ऐसा वर माँगा तो महादेवजी ने कहा बहुतअच्छा ऐसाही होगा इतना कह चलेगये १८ जब महादेवजी से विश्वामित्र जीने ऐसा वर पाया तो ऐसा अहङ्कार हुआ जिसका कुछ ठीकनहीं १९ मारे वीर्य्यके ऐसे बाढ़े जैसे पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा को देख समुद्र बढ़ता है व अपने मनमें जाना कि अब क्याहै वसिष्ठ जी मारेही धरेहैं २० यह बिचार वसिष्ठजी की कुटीपै आय ऐसे अस्त्र बरसाये जिनसे उस बनके बासी सब भस्म होनेलगे २१ विश्वामित्र के चलाये अस्त्र देख हजारों मुनिलोग भयभीतहो चारों दिशों को भागे २२ वसिष्ठजी के भी जो शिष्यथे व जो उनके आश्रम पर के मृगपक्षी थे सबके सब भाग गये २३ यहां तक कि वसिष्ठजीका आश्रम जीवोंसे शून्यहोगया एक मुहूर्तमात्र कोई चिनकता मिनकता नहीं था जैसे कि उसरही भूमिमें वृक्षादिकों के न होनेसे सदा बिन प्राणियों के शब्दहीनही रहता २४ यद्यपि वसिष्ठजी बारबार यही कहते रहे कि न डरो हम क्षणमात्र में विश्वामित्र को मारे डालते हैं जैसे अँधियारीको सूर्यनाशते हैं तथापि किसीने न माना सबके सब भागही खड़े हुये २५ ॥

दो० यहकहि अतितेजस्विमुनि रोष सहित कहँ बात ॥
नृपवर कौशिक सों जपन परम शील गुण व्रात १ । २६
चिरसम्बर्द्धित मोर तुम आश्रम दीन उजारि ॥
यासों मूढ़ दुराचरण तुम कहँ डारब मारि २ । २७
यह कहि दण्ड उठाय अति बेग क्रोधकिय धीर ॥
धूमरहित कालाग्निसम ज्यहिलखि लरजतबीर ३ । २८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेपञ्चपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५५ ॥

जब वसिष्ठजीने ऐसा कहा तो विश्वामित्रजी ने आग्नेयास्त्र उठाय कहा खड़ेतो हो खड़ेतो हो १ उधर विश्वामित्र ने तो ऐसा कहा इधर

वसिष्ठजी ने ब्रह्मदंड उठाया मानों दूसरा कालदंडही है व क्रोधकर यह बोले २ हेक्षत्रिय हम तेरे सामने खड़ेहैं जो जो अस्त्र शस्त्र महादेव से पायाहो सब हमारे ऊपर चलाय देखाव एक क्षणमात्र में सब नाश किये देतेहैं ३ कहां तेरा क्षत्रिय का बल कहां हमारा बड़ा ब्रह्मबल हे क्षत्रियाधम हमारा ब्रह्मबल देख ४ यह कह ब्रह्मास्त्र चलाया कि उसके लगतेही अत्युत्तम जो विश्वामित्रका चलाया हुआ आग्नेयास्त्रथा शांत होगया जैसे अग्निका वेग जल परने से शांत होजाता है ५ इसके पीछे विश्वामित्रजी ने वारुणास्त्र रुद्रास्त्र इन्द्रास्त्र पाशुपत ऐषीक ६ मानव मोहन गान्धर्व्व स्वापन जृम्भण सन्तापन विकलपन ७ अति दारुण शोषण अति दुर्ज्जय वज्रास्त्र ब्रह्मपाश कालपाश वरुणपाश ८ शिवजी को परमप्रिय पिनाकास्त्र ओद झूर दोवज्र दंडास्त्र पैशाचास्त्र क्रौञ्चास्त्र ९ धर्म्मचक्र कालचक्र विष्णुचक्र वायव्य मथनास्त्र हयशिरोस्त्र १० कङ्काल मुशल विद्याधरास्त्र अतिदारुणकालास्त्र ११ अतिघोर त्रिशूलास्त्र कपालास्त्र कङ्कणास्त्र इतने सब अस्त्र १२ वसिष्ठ जी के ऊपरछोड़े यह परम अद्भुत हुआ सो सब अस्त्र ब्रह्माके पुत्र वसिष्ठजी ने ब्रह्मास्त्रसे सब काट डारा १३ जब सब अस्त्र शस्त्र शांत होगये तो विश्वामित्रजी ने ब्रह्मास्त्र चलाने के लिये उठावा उसे देख अग्न्यादि देवता १४ देवर्षि गन्धर्व्व नागकिन्नरादि सब त्रिलोकी के बासी भयभीत हुये कि क्या होगा १५ परंतु सोभी विश्वामित्रजी का चलाया हुआ ब्रह्मास्त्र भी वशिष्ठजीने अपने ब्रह्मास्त्र से शांतकरदिया १६ जब विश्वामित्र के भी ब्रह्मास्त्रको अपने ब्रह्मास्त्र से खींच अपना में मिलायलिया तो ऐसा भयानक रूप होगया कि उसे देख तीनोंलोकों को मूर्च्छा आगई उसके स्मरणमात्र सेभी सबको भय होनेलगा महादारुण रूप जैसे नृसिंहजी का भयानक रूपथा १७ जितने रोम वसिष्ठजी के थे सबमें निर्द्धूम अग्नि की चिनगारियों के समान लपक निकलनेलगी १८ वसिष्ठजी के हाथमें भी ब्रह्मास्त्र देदीप्यमान होने लगा मानों निर्द्धूम कालाग्नि है जानों दूसरा यमदंड है १९ यह दशा देख महातपस्वी वसिष्ठजी की सब मुनिगण स्तुति करनेलगे व उनसे कहने कि ब्रह्मन् तुम्हारा बल अमोघ है अपने तेजसे इस ब्रह्मास्त्र के तेजको भी धारण

कीजिये २० तुमभी अब विश्वामित्र के ऊपर ब्रह्मास्त्र न छोड़ना नहीं तो वे भस्मही होजायँगे रहा जीतने को सो तो तुमने उनको जीतही लिया आपका बल अमोघ तो हैही है क्यों न जीतें अब आपकी कृपा से सब लोकभी आनन्दित हों २१ जब सब मुनियों ने ऐसा कहा तो वसिष्ठजी ने विश्वामित्र के ब्रह्मास्त्र का तेज वा अपने ब्रह्मास्त्र का तेज सब अपना में खींचलिया विश्वामित्र की सब शक्ति जातीरही तो बोले कि २२ क्षत्रियके बलको धिक्कार है भाई बल एक ब्राह्मणही के तेजका नामहै क्योंकि एकही ब्रह्मास्त्रसे हमारे सैकड़ोंअस्त्रशस्त्र नाश होगये २३ सो ऐसा ब्रह्मतेज देख अब प्रसन्नेन्द्रिय व प्रसन्नमनहो वह तपस्या करेंगे जो ब्राह्मणत्व होनेका कारण है २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेषट्पञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५६ ॥

जब इसरीति से सब शक्ति जाती रही तो विश्वामित्र जी का हृदय जरने लगा महात्मा वसिष्ठजी के साथ बैर करने का फल भलीभांति उनको मिला उसे विचारते हुये बार २ ऊंची सांस खींचते हुये १ अपनी रानी के साथ दक्षिण दिशाको तपस्या करने चलेगये व वहां पहुंच अतिघोर तपस्या करनेलगे २ फल मूल भोजन करतेहुये सब इन्द्रियों को जीत महातपस्या की इस तपस्या से फिर विश्वामित्र जी के सत्यधर्म्मपरायण पुत्रहुये ३ उनके नाम हविष्यन्दमधुष्यन्द दृढ़नेत्र येथे येसब महारथी थे जब तपस्या करते२ हजारन वर्ष बीते तोलोक के पितामह ब्रह्माजी ४ आय विश्वामित्र जीसे मधुर वचनबोले हेकुशिकनन्दन तुमने राजर्षियों के लोक जीतलिये ५ इस तपस्या से तुमको अब हम राजर्षि समझनेलगे यहकह सब देवोंके सङ्ग ब्रह्माजी तो ६ ब्रह्मलोक को चलेगये विश्वामित्रजी ने मारे लज्जाके नीचे मुख करलिया ७ व परम दुःखित हो बोले कि हाय मैंने इतनी तपस्या की तो भी ब्रह्माजी ने मुझे राजर्षिही कहा ब्रह्मर्षि न कहा ८ इससेमैं इस तपस्या का फल अच्छा नहीं मानता मनमें यह निश्चयकर फिर तपस्या करनेलगे व बहुत दिनोंतक करते रहे उन्हीं दिनों में एक अति सत्यवादी जितेन्द्रिय १० राजा इक्ष्वाकु के वंश में त्रिशंकुनाम राजा हुये

तिनके मनमें यह बात आई कि हम ऐसी कोई यज्ञक्रिया करें ११ कि अपने इसी शरीर से स्वर्ग्गलोक को चलेजाँय वसिष्ठ जी को बुलाय अपना मनोरथ कहा १२ वसिष्ठजी ने कहा यहबात नहीं होसक्ती कि तुम सदेह स्वर्ग्ग को चले जावहां यज्ञ करने से जैसे सबलोग मरने के पीछे यह शरीर यहीं छोड़कर स्वर्ग्ग को जाते हैं वैसे तुमभी यज्ञ करने से जाय सक्तेहो जब वसिष्ठजी ने ऐसा सूखा जवाब देदिया तो त्रिशंकु दक्षिण दिशाको चलेगये १३ जाते जाते वहां पहुंचे जहां वसिष्ठजी के पुत्र बड़ी तपस्या कररहे थे वहां के जाने मेंभी यही बिचार था कि यज्ञ कराय सदेह स्वर्ग्ग को जाँय १४ तहां जाय महातेजस्वी त्रिशंकुजी ने वसिष्ठजी के सब पुत्रों को देखा कि एक स्थानपै सबके सब तपस्याकर रहेहैं १५ तिन महात्मा गुरुपुत्रों के निकट पहुँच यथाक्रम सब प्रणाम कर वसिष्ठजी के उत्तर देनेसे लज्जित हो नीचे मुखहो १६ हाथजोड़ सब महात्मा गुरुपुत्रों से बोले कि आप लोगोंके हम शरण को आयेहैं १७ हमने आपके पिताजी से यज्ञ कराने को कहाथा सो उन्होंने तो जवाब दियाहै अब आप लोगोंसे प्रार्थनाहै कि यज्ञ करने करानेके लिये आज्ञा होजावे १८ हम सब अपने गुरुपुत्रों के नमस्कार करके उनसे प्रसाद माँगते हैं व बारबार प्रणाम करते हैं कि १९ सब लोग हमको यज्ञ करावें जिससे सशरीर देवलोक को हम चले जाँय २० ॥

दो० सब गुरु सुतहु प्रसन्नह्वै करियो कृपापुनीत ॥
जिमिवसिष्ठमुनि उतरदिय तिमिनदिह्यहुगतप्रीत १
तुम्हहिंछोड़ि गतिआन नहिं देखतकतहुं महानु ॥
करिकैकृपा कराइये शुभमख ज्यहि जगजानु २ । २१
नृपवर श्रीइक्ष्वाकु के वंश केरि यह रीति ॥
सदा पुरोहितही करत रहत प्रेमसों प्रीति ३
कुछ न अनोखी बात यह जौन पुरोहित लोग ॥
वर पण्डित ते तारहीं यजमानहिँ गत शोग ४ । २२
सो वसिष्ठ मुनिराज के पीछे तुम मम देव ॥
तारहु सोइ बिचारि जिय मानहु बात अभेव ५ । २३

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये वालकाण्डेसप्तपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५७ ॥

जब राजा त्रिशंकु के ऐसे वचन सुने तो वसिष्ठजी के सब पुत्र बड़े कुपित हो राजा से बोले १ कि हे दुर्व्वुद्धि जब सत्यवादी महात्मा अपने गुरू से जवाब पाया तो अब तिसका अनादर कर कैसे अन्य किसी से यज्ञ कराया चाहता है २ क्योंकि सब इक्ष्वाकुवंशियों की परमगति पुरोहितही हैं फिर तू कैसे अपने सत्यवादी गुरू के वचन का उल्लङ्घन किया चाहता है ३ भला जिस यज्ञ को भगवान् वसिष्ठजी ने कहा कि यह नहीं होसक्ता तो उसको हमलोग कैसे करा सक्ते हैं ४ हम जानतेहैं राजन् तुम बड़े अनारी हो अब अपने नगरको फिर लौट जाव तुम तो उनके शिष्यही हो वे तो तीनलोक को यज्ञ करासक्ते हैं तिसका अपमान हमलोग कैसे करें जो तुम्हें अलग यज्ञ करावें ५ तिनलोगों के ऐसे क्रोधयुक्त वचन सुन राजात्रिशंकु फिर गुरुपुत्रों से बोले ६ कि जैसे भगवान् गुरुजी ने जवाब दिया तैसेही आपलोग गुरुपुत्रों ने भी दिया अब हम जाते हैं और किसी के शरणागत होंगे आप लोग सुख से बैठिये ७ ऋषिपुत्रोंने जब ऐसा कठोर वचन सुना तो महाक्रोध से शाप दिया कि राजन् अच्छा अन्यसे यज्ञ करावो पर हालसाल चण्डाल तो होवौ फिर देखा जायगा ८ यहकह वे सब महात्मा लोग झटपट अपने अपने आश्रम में घुसरहे जिसमें ऐसे पापी के दर्शन न हों ६ ऐसे महादारुण वचन गुरुपुत्रों के सुन राजा त्रिशंकु अपने पुर को चले आये व मारे दुःख के चिन्तना करने लगे१०जब वह रात्रि बीती तो राजा चण्डालता को प्राप्त होगये जिसमें सब नील के रँगे कपड़े धारण किये नीलही के समान कालारङ्ग देह का होगया शिरके बार बहुत छोटे होगये चिता की भस्म व मुरदोंकेसे फटेफुटे कपड़े धारण किये जितने भूषण थे सबके सब लोहे के होगये ११ राजा को ऐसा देख सब मन्त्री लोग पुरवासियों के सङ्ग राज नगर से भाग खड़े हुये १२ अब अकेले राजा घर में बैठे क्याकरें मन में कुछ शोचबिचार महातपस्वी विश्वामित्र जी के शरण को चलेगये १३ चण्डालरूप धारणकिये राज्य से भ्रष्ट राजात्रिशंकुको देख विश्वामित्रजी के दयाआई १४ मारे दयाके राजा से बोले राजन् तुम्हारा कल्याण हो कैसे हो १५ यहां आनेका कौन प्रयोजन है अयोध्या के स्वामी हो तुम चण्डालता को प्राप्त हुये १६

मुनिके ऐसे वचन सुन चण्डालता को प्राप्त परमचतुर राजा महाचतुर विश्वामित्रजी से बोले १७ महाराज हमने कुछ अपना मनोरथ गुरू व गुरुपुत्र सबसे कहा उसके लिये तो कोई उपाय उन्होंने न किया बरन उसके बिपरीत गुरुपुत्रों ने शाप दिया जिससे इस दशा को पहुंचे १८ हमने सौ अश्वमेधयज्ञ किये जिसमें सहित शरीर स्वर्ग्गको चले जायँ सो फल न मिला औरका औरही होगया १९ हम सत्यही कहते हैं न तो आजतक कभी हमने झूठ कहाहै न कहेंगे चाहे बड़े कष्ट में भी परें पर झूठ न कहें यह अपने क्षत्रिय के धर्म्म की सौगन्द खातेहैं २० कि हमने बहुत तो यज्ञकिये धर्म्म से प्रजापालन किया अपने उत्तम शील से गुरु महात्मा लोगोंको भी सन्तुष्ट किया २१ अब भी धर्म्म ही के लिये एक यज्ञ और किया चाहते थे पर गुरूलोग न प्रसन्नहुये २२ ॥

दो० हम भाग्यहि मानत सब पौरुष निष्फल जान ॥
भाग्यकरत सब भाग्यही है यहगति नहिं आन १ । २३
पर मारत हत भाग्य मम ऊपर कृपा करेहु ॥
होय सकल शुभतब हमहिं अब बांछित फलदेहु २ । २४
अब न आन शरणहिं कबहुं जैहौं नहिं गति आन ॥
भाग्य हमारो बदलिये दास आपनो जान ३ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेऽष्टपञ्चाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५८ ॥

साक्षात् चण्डालता को प्राप्त राजाने जब ऐसा कहा तो विश्वामित्र जी मधुर वचन बोले १ राजन् अच्छी तरहसे आये हम तुमको जानतेहैं कि तुम बड़े धर्म्मात्मा हौ हम तुम्हें शरण देंगे हे नृपति श्रेष्ठ न डराइये २ हे राजन् हम सब पुण्यात्मा ऋषिलोगों को न्योततेहैं वे सब यज्ञ में सहायता करेंगे व तुम आनन्दित ह्वै यज्ञ करोगे ३ व जो यह गुरू के शाप से तुम्हारा खराब रूप होगया है इसी रूप से सदेह स्वर्ग्ग को जावगे ४ जिससे कि तुम शरणागत वत्सल कौशिकमुनि के शरण में आये हौ इससे हे नरनाथ हम स्वर्ग्गलोक तो मानों तुम्हारे हाथही में धरा समझते हैं ५ ऐसा कह विश्वामित्र जी परमधार्म्मिक अपने पुत्रों से बोले कि पुत्रो राजा के यज्ञ करनेके लिये सामग्री एकत्रकरो ६

व वसिष्ठ के पुत्रों के साथ सब ऋषिलोगों को हमारी आज्ञा से बुलालावो कि सब अपने २ शिष्य पुरोहितादिकों के साथ आवें ७ जो कोई हमारे वचन के प्रतिकूल कुछकहे कि शापित राजा के यहां हम यज्ञ न करावेंगे तो सबके सब वचन हमसे आय आय कहना ८ यहसुन विश्वामित्रजी के सब पुत्र इधर उधर गये सबको निमन्त्रण दे आये जिससे नानाप्रकार के देशों से सब मुनिलोग आनेलगे ९ विश्वामित्र जीके शिष्य भी जो न्योता देनेगये थे सब के सब लौटआये व महा-तेजस्वी अपने गुरूजी से सब मुनिलोगों के वचन कहे १० हे विश्वा-मित्र जी आप के वचन से सब ऋषिलोग चले आये परमहोदय नाम ऋषि नहीं आये ११ इसके सिवाय वसिष्ठजी के सब पुत्रों ने जो महा क्रोध करके कहा है सो सुनिये १२ कि जिस यज्ञ का यजमान तो चण्डाल व यज्ञ करानेवाला क्षत्रिय जिसको यज्ञ कराने में अधिकारही नहीं फिर ऐसे यज्ञ में देवर्षिलोग काहे को हव्य भोजन करनेलगे १३ भला देवता तो जानों इसयज्ञमें आहुति भोजनही न करेंगे,पर महात्मा ब्राह्मणलोग भी चण्डाल का अन्न भोजन कर विश्वामित्र के गये कैसे स्वर्ग को जायँगे १४ हे मुनिशार्दूल सहित महोदय मुनि वसिष्ठजी के पुत्रों ने बड़ेक्रोध से ऐसे वचन कहे १५ तिन अपने शिष्यों के ऐसे वचन सुन मारेक्रोध के लालेनेत्र कर सहितरोष विश्वामित्र जी बोले १६ कि देखो हम महा उग्रतपस्या कर रहे हैं सब प्रकार से अदूष्यहैं तिस पर भी जो वसिष्ठ के पुत्र हमको दूषते हैं तो सब दुष्ट भस्म होजायँगे १७ और काल के पाश में बँधेहुये यमपुर को जायँगे पीछे सात सौ जन्मतक मुर्दों के कपड़े छोरनेवाले होंगे १८ जिसमें कुत्ते का मांस प्रतिदिन खाने को परै व डोम उनका नामहो महा निर्दयी भी सब के सबहों महा बिकराल व भयानक रूप से लोक में घूमा करें १९ व महोदय नाम दुर्बुद्धिने जो दोष रहित हम को दूषा है सो सब लोक में दूषित होके निषाद जाति होय २० ॥

दो० प्राणि घात रत बिनदया सदा रहहिं बहुकाल ॥
हमरे क्रोध समूह सों दुर्गति लहहिं कराल १ । २१
इमि कहि विश्वामित्रमुनि ऋषिन माँझभे मौन ।

महा तपस्वी तेजमय सकल धर्म्म के भौन २ । २२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेएकोनषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ५९ ॥

सहित महोदय वसिष्ठजीके पुत्रों को अपनी तपस्या के बलसे हत जान महातेजस्वी विश्वामित्र मुनि ऋषियों के बीच में बोले १ यह महा धर्म्मिष्ठ दानी हमारे शरण को प्राप्त इक्ष्वाकु वंशी राजा त्रिशंकु अपने इसी शरीर से देवलोक जीतने की इच्छा करता है २ इसलिये जिस युक्ति से यह अपने शरीर से देवलोक को चलाजाय उसी युक्ति से हमारे साथ यज्ञ कराइये ३ विश्वामित्रजी के ऐसे बचन सुन अति धर्म्मज्ञ सब मुनिलोग आपसमें बोले ४ कि ये कुशिकवंशी विश्वा-मित्र जी बड़े क्रोधी हैं जो वचन कहते हैं उसके न करने में अच्छा नहींहै ५ क्योंकि ये अग्निहीके समानहैं कोपकर शाप जरूरदेंगे ६ तिसमेवैसाही यज्ञकरो जिससे राजात्रिशंकु विश्वामित्रके तेजसे सहित शरीर स्वर्ग्ग को चलाजांय ७ यह कह सबऋषिलोग यज्ञक्रिया वेद बिधान से करनेलगे ८ उस यज्ञ के अध्वर्य्यु तो विश्वामित्रजी हुये और अन्य बड़े २ बिज्ञानी ऋषिलोग जो अच्छीरीति से वेदमन्त्र जानतेथे ऋत्विजहुये ९ सबकेसब विधि विधान सहित यज्ञकरनेलगे इस रीति से बहुत दिनोंतक यज्ञक्रिया होतीरही तब महातपस्वी विश्वामित्रजी ने १० भागलेने के लिये सबदेवताओं का आवाहन किया परन्तु कोई देवगण भागलेनेके लिये तिसयज्ञ में नआये ११ तबतो महामुनि विश्वा-मित्रजी महाकोपकर श्रुवाउठाय राजात्रिशंकु से बोले १२ हे राजन् हमारी तपस्या का बलदेखिये कि तुमको इसीदेह से अपने बल से स्व-र्गको पहुंचाते हैं १३ राजन् इसीशरीर से स्वर्ग्गलोक मिलना बड़ा कठिनहै परन्तु हमारे जो कुछ तपोबल है उसका फलदेखिये कि सहित शरीर उसीके प्रभावसे स्वर्ग्गको चलेजाइये १४ जब विश्वामित्रजी ने ऐसाकहा तो सहितदेह राजास्वर्ग्ग को चलेगये सब मुनिलोग देखतेरहे १५ वहांजब सदेह राजात्रिशंकु स्वर्ग्गलोक में पहुंचे उन्हेंदेख इन्द्रजी सब देवगणोंसहित बोले १६ हे त्रिशंकु मूढ़ तुम गुरु शापसे हतहो इससे स्वर्ग्गके योग्यनहीं हो नीचेशिरकर फिर भूतल को चलेजाव १७

जैसेही इन्द्रने ऐसाकहा कि नीचेमुहँकर त्रिशंकु हे विश्वामित्र रक्षाकी-जिये ऐसाकहते स्वर्गसे गिरे १८ राजाके दुःखित बचनसुन महाकोप कोपितहो विश्वामित्रजी यज्ञभूमि से बोले वहींरहो वहींरहो उससमय ऋषियों के मध्यमें विश्वामित्र ऐसेशोभित होतेथे जैसे मरीच्यादिकों के मध्य में प्रजापति शोभित होतेहैं १६ व यहविचारा कि जैसेस्वर्ग में उत्तरओर ध्रुवजी अचलटिके हैं तैसेही हम दक्षिण दिशामें त्रिशंकु को स्थापित करें इसलिये प्रथम त्रिशंकु के निकट रहनेके लिये दक्षिण मार्ग में टिकनेके निमित्तनये सप्तर्षि बनाये फिर नये २७ अश्विन्यादि नक्षत्र मारे क्रोधके रचे २० इसके पीछे उसीदक्षिण दिशामें मारेक्रोधके मूर्च्छितहो छोटे छोटे और नक्षत्र बनाये २१ फिर बिचारा कि जो यहनया स्वर्ग हमने बनायाहै उसमें अन्य इन्द्र बनावें वा बिनाइन्द्रही का रहनेदें त्रिशंकुही इन्द्रहों अन्यके बनानेकी कौन आवश्यकता है फिर मारेक्रोध के नये नये देवताभी बनानेलगे २२ जब देवताओं ने जाना कि अब ये त्रिशंकु के रहनेकेलिये सबनया स्वर्ग तो बनायही चुके देवताभी बनाते हैं तो सबकेसब देवता व ऋषिलोग अतिघबड़ाय महात्मा विश्वामित्रजी से हाथजोड़ बोले २३ हे तपोधन हे महाभाग यहराजा गुरुशाप से शापितहै सदेह स्वर्गजानेके योग्यनहीं है २४ देवोंके ऐसेवचन सुन मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्रजी सुरगणों से बोले २५ हाँ यह बातसत्य है कि सदेह ऐसेलोग स्वर्ग को नहीं जाय सकते परन्तु हममैंतो प्रतिज्ञाकी है कि यहत्रिशंकु सदेह स्वर्गमें बसै उसे अबहम झूठनहीं करसकते २६ यहकुछ बातनहीं इस सदेह त्रिशंकु के लिये निरन्तर स्वर्ग वासका सुखहो व यहस्वर्ग में बसै इस केसङ्ग रहनेके लिये हमारे बनाये हुये नक्षत्र स्थिरता पूर्व्वक रहें २७ जबतक सबलोक टिकेहैं तब-तक ये हमारे बनायेहुये ऋषिदेवतादिभी टिकेरहैं हेदेवो इसबातकी सम्मति आपलोगभी दे देवें २८ जब विश्वामित्रजीने ऐसाकहा तो सब देवतालोगोंने कहा अच्छाजो आपको यही अभीष्टहै तो ये आपके बनाये हुये भी सब ऋषिलोग व नक्षत्रादि भी दक्षिण दिशामें स्वर्गबास किया करें २९ सोभी इस क्रमसे कि जो ज्योतिश्शास्त्रमें लिखा हुआ वैश्वानर मार्गहै जिसमें सनातनसे नक्षत्र बिचरते हैं उसके बाहर ये सब तुम्हारे

बनाये हुये नक्षत्र चलाकरें व तिन नक्षत्रों के बीच में देदीप्यमान ३० नीचेको शिरकिये देवों के समान तेज धारणकिये त्रिशंकु नाम नक्षत्र रूप भी टिके रहें ३१ व कीर्त्तिमान् सकल मनोरथ सिद्ध राजा त्रिशंकु के पीछे पीछे तुम्हारे बनाये हुयेसब नक्षत्र घूमा करें ३२ ॥

दो० धर्म्मात्मा कौशिक सकल सुर वन्दित त्यहिकाल ॥
ऋषिन मध्य सब सुरनसों कह भलकीन नृपाल १ । ३३
तबसब सुरऋषि मुनि निकर गमने निज २ धाम ॥
रघुबर मखके अन्तमें सब बिधि पूरण काम २ । ३४

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये वालकाण्डेषष्ठितमस्सर्ग्गः ॥ ६० ॥

जब सब मुनिलोग यज्ञ कराय २ चले तो विश्वामित्रजी उन्हें देख बोले १ हे मुनिलोगो अबतो यह त्रिशंकु नक्षत्रोंके सङ्ग दक्षिण दिशामें ऐसा व्याप्तहै कि इस दिशामें कहीं तपस्याही करनेका स्थान नहीं रहा इससे अब किसी अन्य दिशामें चलके तपस्या करें २ हम जानतेहैं कि अति विशाल पश्चिम दिशामें जो पुष्करतीर्थ है उसके किनारे बहुत अच्छा तपोबन है वहीं चल तपस्या करें ३ ऐसा कह विश्वामित्रजी पुष्कर तीर्थ में जाय मूल फल खाय खाय अत्युग्र तपस्या करनेलगे ४ उसी समय में अयोध्या के राजा महाराज अम्बरीष अश्वमेध यज्ञ करने लगे थे ५ कि राजाके यज्ञ का पशु चन्द्र हरलेगये जब पशु चोरागया तो पुरोहित ने राजासे कहा ६ हे राजन् आज पशु हरगया सो तुम्हारे न रक्षा करने ही से गया है यह अच्छा नहीं हुआ क्योंकि पशु इत्यादि के हरजाने के दोष जो अच्छी तरह रक्षा नहीं करता उसीको होतेहैं ७ तिससे जब तक यज्ञकर्म्म समाप्त हुआ चाहै तब तक कितो कोई पशु ही और लाइये वा गोधन देकर कोई मनुष्यही लाइये तो इस विघ्न का प्रायश्चित्त होजाय ८ पुरोहित के वचन सुन राजा सहस्रों गोधन दे पशु ढूंढ़नेलगे ९ ढूढ़ते ढूंढ़ते देश राज्य नगर आश्रमादि पुण्य स्थानोंपै ढूंढ़ा १० जाते जाते ऋचीक मुनिको देखा जो कि एक पर्व्वतके कँगूरामें अपनी स्त्री पुत्रोंके साथ बैठेथे ११ महातेजस्वी राजाने मुनिके प्रणाम कर बहुत भांति प्रसन्नकर कराय तपस्या करते हुये मुनिराज से कहा

कि १२ हे महाराज जो करोरि गाय लेकर अपना एक कोई पुत्र बेंचते तो अच्छाथा १३ क्योंकि हमारे यज्ञ का पशु कहीं खोय गयाहै सब देशों में घूमआये न उसीका कहीं पता मिलता है न औरही कोई दाम दिये मिलताहै १४ इसलिये आप अपना एक पुत्र दाम लेकर दीजिये जब राजाने ऐसे वचन कहे तो ऋचीकजी बोले १५ हेराजन् हम अपना ज्येष्ठपुत्र तो किसी प्रकार से न बेंचेंगे क्योंकि वह सब देव पितृ क्रिया का अधिकारी होताहै ऋचीक के वचनसुन तिन महात्मा पुत्रोंकी माता १६ महाराज अम्बरीष से बोली कि भगवान् भार्ग्गव हमारे पतिनेतो कहा कि ज्येष्ठ पुत्र बेंचने के योग्य नहीं १७ उसी रीति से शुनकनाम जो सबसे छोटा पुत्रहै वह हमको बहुत प्याराहै तिससे छोटा पुत्र हम तुमको नदेंगी १८ क्योंकि बहुधा ज्येष्ठ पुत्र पिताको अधिक प्रिय होता और सबसे छोटा माताको तिससे हम इसछोटेकी ज़रूर रक्षाकरेंगी १९ जब मुनि वा मुनिपत्नी ने ऐसे वचनकहे तो उनके मँझिलेपुत्र शुनश्शेफ आपही आय बोले २० ॥

दो० पिता ज्येष्ठ बेंचत नहीं लघुइ न बेंचत माइ ॥
मध्यम बेंचा मानि नृप मुहिंलै चलु हरषाइ १ । २१
मुनिमध्यम सुतवचनसुनि नृप हाटककीराशि ॥
बहुमणिगणादीन्ह्योंद्विजहि महादानिपरकाशि २ । २२
अरु गोशत साहस दई शुनश्शेफ लै भूप ॥
परममुदितमन निजपुरहि गमनकीन सुख रूप ३ । २३
रथ चढ़ाय शुनशेफ कहँ अम्बरीष महिपाल ॥
महायशी गमन्यहुमुदित मखहित अतिहिनिहाल ४ । २४

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीये वालकाण्डेएकषष्टितमस्सर्ग्गः ६१ ॥

शुनश्शेफ को ले राजा अम्बरीष चले तो पुष्कर तीर्थ में मध्याह्न के समय पहुंचे वहां स्नान संध्या तर्प्पणादि करनेलगे कि १ शुनश्शेफ ने देखा तो उसी ज्येष्ठ पुष्कर तीर्थ में ऋषियों के संग विश्वामित्र जी तपस्या कररहे हैं २ उनको अपना मामा जान परमातुरहो उदासीनहो-गये भूंख प्यास भी बहुत लगीथी कुछ गली चलने का परिश्रम भी था

इसलिये बनाय दुःखी होगये ३ द दौरकर जाय जीने की इच्छा से विश्वामित्र के कोरा में गिरे व बोले कि न हमारे माताहै न पिता फिर भाई बन्धुको कौन कहै वेतो हैही नहीं ४ सो आप अपनी तपस्या के धर्म्म से हमारी रक्षाकोजिये क्योंकि यदि संसार का संसार आपके शरण में आवे तो उसकी रक्षाकरने में समर्थ हौ व सब प्रकार का हित कर सकते हौ ५ इसलिये ऐसा कीजिये कि जैसे राजालोग अपने सब कार्य्यकर कराय आनन्दित होतेहैं वैसेही हमभी बहुत दिनों तक जीकर उत्तम तपस्याकर अंत समय स्वर्गलोक को जायँ ६ सो मुझ अनाथ के नाथ आप प्रसन्नचित्त होकर बूझिये व जैसे दुःखों से पिता अपने पुत्रकी रक्षा करता है वैसेही मेरी रक्षा कीजिये ७ तिसके ऐसे दीन बचनसुन महातपस्वी विश्वामित्रजी बहुत कोपकर शुनश्शेफ को समझाय बुझाय अपने पुत्रों से यह बोले कि ८ जिस परलोक के प्रयोजन के लिये पितालोग पुत्र उत्पन्न करते हैं उसका प्रयोजन अब आया है ९ हे पुत्रो यह अति वाल ऋचीक मुनि का पुत्र हमारे शरणागत हुवा है इसको प्राण दान देने से हमारा प्रियकरो १० तुम सब सुकृती व धर्म्म परायण हौ इसलिये इस शुनश्शेफ के स्थान पै राजाके यज्ञमें पशु बन अग्निको तृप्तकरो ११ ऐसा करने से शुनश्शेफ के प्राण बचजायँगे राजा का यज्ञ निर्विघ्नता पूर्व्वक समाप्त होगा सब देवता सन्तुष्ट होंगे व हमारी आज्ञा का प्रतिपालन होगा जो पुत्रों का धर्म्म है १२ विश्वामित्रजी के ऐसे वचन सुन मधुच्छन्दादि जो मुनि के पुत्र थे सहित अभिमान व हँसौवा के बोले १३ कि आप अपने पुत्रों को छोड़ और के पुत्र की रक्षा कैसे करते हौ यह तो वैसाही कर्म्म देख परता है जैसे कोई सुंदर भोजन तैयार हो उसको छोड़ कुत्तेका मांस भोजन कर ले १४ तिन अपने पुत्रोंके ऐसे वचन सुन मारे क्रोधके आंखें लालीकर बोले १५ कि तुम लोगों ने हमारे वचन का प्रतिपालन नहीं किया व जो तुम्हारा धर्म्महै कि जब तक पिता जिए तब तक उसका वचन मानै उस धर्म्म को भी उल्लङ्घन किया यह बड़ा हमारा अनादर हुआ जिस से तुमलोगों ने ऐसा किया है १६ तिससे जावो जैसे वसिष्ठ के पुत्रोंको हमने शापदिया था वे डोम होगये थे वैसेही तुम लोग भी डोम हो

कुत्ते का मांस भोजन करते हुये १००० वर्ष तक पृथिवी में बसो १७ अपने पुत्रोंको ऐसी शाप दे विश्वामित्रजी शुनश्शेफ की रक्षा सब भांति कर बोले १८ कि हे शुनश्शेफ तुम को जब पशु के स्थानापन्न वैष्णव स्तम्भ में कुशकी रस्सीसे बांधें व रक्तचन्दन लगाय रक्तपुष्पों की माला पहिरावें १९ तैसेही जो दो मन्त्र हम बतावेंगे अग्नि के आगे पढ़ना उससे इन्द्र व विष्णु दोनों देवता प्रसन्न होंगे २० जब अम्बरीष के यज्ञमें गाथारूप दोनों मन्त्र गावोगे तो तुम्हारे प्राण बच जायँगे व राजा की यज्ञक्रिया भी सिद्ध होजायगी २१ सो दोनों गाथा रूप मन्त्र विश्वामित्रजीसे सीख शुनश्शेफजी राजा अम्बरीषके पास आय बोले २२ हे राजन् अब चलिये शीघ्र चलें आप झट पट अपनी यज्ञक्रिया पूरी कीजिये २३ ऋषि पुत्र के ऐसे वचन सुन राजा परमानन्दित हो अपने यज्ञस्थान में आये २४ व सभासदों की अनुमति से लाले कपड़े पहिराय यज्ञ पशु बनाय शुनश्शेफको वैष्णव यज्ञस्तम्भमें बांधा २५ जैसेही शुनश्शेफजी यज्ञस्तम्भ में बाँधे गये जो मन्त्र विश्वामित्रजी ने बताये थे उनसे इन्द्र व विष्णु की स्तुति करनेलगे २६ तिन मन्त्रों से इन्द्र व विष्णु दोनों देव एकांत स्तुति से बहुत प्रसन्न हो शुनश्शेफ को चिरञ्जीवी होने के लिये आशीर्व्वाद दिया २७ व राजा को भी आशीर्व्वाद दिया कि जाव पशुको छोड़ दो यज्ञ पूर्णहुआ राजा भी यज्ञ फल पाय परमानन्दित हुये व सब यज्ञ क्रिया समाप्तहुई २८ व विश्वामित्रजी फिर १००० वर्ष तक पुष्कर तीर्थमें तपस्या करते रहे २९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेद्विषष्टितमस्सर्गः ॥ ६२ ॥

इस रीतिसे १००० वर्ष तपस्या करते२ बीते जब तपस्या समाप्त हुई तो तपस्याका फल देनेकी इच्छासे सब देवता लोगआये १ उन में ब्रह्माजी परम रुचिर वचन बोले हे विश्वामित्र अबतकतो तुम राजर्षि रहे पर अबकी तपस्यासे ऋषिहुये अभीब्रह्मर्षि नहींहुये २ यह कह ब्रह्मादिदेव तो अपने अपने धामको चलेगये विश्वामित्रजी फिर तपस्या करने लगे ३ बहुत कालके पीछे मेनका नाम अप्सरा पुष्कर में स्नान करनेकी इच्छासे आई ४ तिसे मेघके बीचमें विजुलीके समान चमकती

हुई देख महातेजस्वी विश्वामित्र जी ५ कामके बशहो यहबोले ६ हे अप्सरा अच्छीतरहसे आई हमारे आश्रम पै निवास कर कामसे मोहित हमारे ऊपर कृपाकर ७ यहसुन मेनका मुनिके आश्रमपै बसने लगी यह विश्वामित्रजीकी तपस्यामें कैसाबड़ा भारी विघ्नहुआ ८ इसरीतिसे १० बर्षतक मेनका सुख पूर्व्वक विश्वामित्रजीके आश्रमपै रही ६ उसकेसङ्ग मुनिराज भोग विलास करते रहे दश बर्षके पीछे मुनिके बड़ी चिन्ता हुई रात्रि दिन उसीके शोचमें चित्तलगा १० व यह बुद्धिआई कि यह जो हमारी तपस्यामें विघ्नहुआहै वह सब देवता लोगोंका कर्म्महै ११ देखो दश बर्ष बीतगये हमको जानपरताहै कि अभी जानों एकही रात्रि दिन बीता हाय कामसे मोहितहो मेरी तपस्यामें बड़ा विघ्न हुआ १२ यह कह बार२ ऊर्धीसाँसेंले मुनिराज पछिताने लगे मुनिकी यह दशा देख मेनका थरथराय काँपनेलगी जानाकि अब बिना शापदिये न रहेंगे परन्तु मुनिने अपने तपके प्रभावसे कोप शान्त किया व मधुर बचन कहे तेरा कुछदोषनहीं जा यह सब हमाराही दोषहै १३ बस यह कह विश्वामित्र उस स्थानको छोड़ उत्तर दिशाको चले १४ व ब्रह्मचर्य्य करनेमें नैष्ठिकी बुद्धिकर कामके जीतने की इच्छासे कौशिकी नदी के किनारे पै जाय फिर अत्युग्र तपस्या करनेलगे १५ वहाँ अतिघोर तपस्या१००० बर्षतक करते रहे यहाँतककि सब देवतावोंको भय पहुंची १६ तब सब देवता व ऋषिलोग सम्मतकर ब्रह्माजीके निकट गये व बोलेकि कुछसन्देहनहीं प्रथमतो विश्वामित्र राजर्षि रहे फिर तपस्या करनेसे आपने ऋषि बनाया अब उनको महर्षि कहिये१७ देवोंके ऐसेबचन सुनलोक के पितामह ब्रह्माजी विश्वामित्रजी से मधुरबचन बोले १८ हेमहर्षि विश्वामित्र बहुत अच्छेहो तुम्हारी उग्रतपस्यासे हमबहुत प्रसन्न हुये तुमको हम ऋषियोंमें मुख्यहोनेका आशीर्व्वाद देते हैं १६ ब्रह्माजीके ऐसेबचन सुन तपोधन विश्वामित्र हाथजोर प्रणामकर ब्रह्माजीसेबोले २० कि हेमहाराज अपने शुभ कर्म्मोंसे हमको तो ब्रह्मर्षिशब्दही अभीष्टहै यदि आपने महर्षि शब्द कहा इससे हमने जानाकि हम जितेन्द्रिय नहीं हैं नहीं तो आप ब्रह्मर्षि कहते २१ ब्रह्माजीने कहा हां अब तक भीतुम जितेन्द्रिय नहीं हुये और ब्रह्मर्षि शब्द जितेन्द्रिय केही लियेहै

इसलिये जोउसकी इच्छाहै तो यत्नकरो यहकह ब्रह्माजी स्वर्ग्गको चलेगये २२ सब देवताभी जहांके तहां चलेगये तो विश्वामित्रजी ऊपरको वाहु उठाय निरालम्बहो वायुपीर कर तपस्या करनेलगे २३ चैत्रसे जब तक पानी नहीं बरसताथा तब तक पञ्चाग्नि तापते वर्षामें रात्रि दिन निरारेमें बैठेरहते जाड़ेकेदिनोंमें जलशायी रहते इस तरह १००० वर्ष तक महाघोर तप किया २४ तिस विश्वामित्र महामुनिकेऐसी तपस्या करनेसे देवता वइंद्र सबको महासन्ताप हुआ २५ ॥

दो० तब सुरपति निज काजलगि सकल देवसँगजाय ॥
रम्भासों कह कुशिक सुत अहित करहु तुमधाय १ । २६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेत्रिषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६३ ॥

हेरम्भा देवताओं का यह बड़ा भारी कार्य्य है जोतुम विश्वामित्र मुनिको कामसे मोहितकर तपस्यासे बगदावो १ जबऐसा इन्द्रजीने कहा तो वह बहुत लज्जितहो हाथजोड़ पुरन्दरसे बोली २ हे इन्द्र येमहा मुनिविश्वामित्रजी बड़े कठोर स्वभावहैं जैसेही मैं उनके निकट गई अवश्य कठिन शाप मुझको देंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है ३ तिससे उनके पास जाने में मुझे बड़ा भयहै आप कृपाकीजिये वहां न पठाइये ४ तब हाथजोड़े कांपतीहुई रम्भासे इन्द्रबोले हे रम्भे मडरो तुम्हारा कल्याण हो हमारी आज्ञामानो ५ हमभी हृदयके क्षोभ करानेवाले कोकिलहो नानाप्रकार की लताओं से शोभित वसन्त ऋतुमें काम समाज के साथ तुम्हारी सहायता को आवेंगे व तुम्हारे निकटही टिकेरहेंगे ६ तुमदेदीप्यमान परमशोभन बहुगुणयुक्त रूपधारण कर महातपस्वी विश्वामित्र को मोहितकरो ७ इन्द्रके ऐसे वचन सुन रम्भा अतिशोभन रूपवनाय मन्द मन्द मुसुकातीहुई विश्वामित्र को मोहित करनेलगी ८ मुनिने कोकिलकी मधुरवाणीसुन रम्भाकोदेखा ६ व तिसका अपूर्व्वशब्द वगीतसुन रम्भाको देख परमविस्मय को प्राप्तहुये १० व जाना कि ये सबकर्म्म इन्द्र केहैं इसलिये महाक्रोधकर रम्भा को शापदिया ११ कि हेरम्भे जिससे कि काम क्रोधकेजीतने की इच्छासे तपस्या करतेहुये हमको तुम लोभित करातीहो इससे १०००० बर्ष तक शिलाहोकर टिकोगी १२ फिर

नियत समयके पीछे महातेजस्वी अतितपस्वी एकब्राह्मण हमारे कोपसे पापरूपिणी तुम्हारा उद्धारकरेगा १३ इतनाकह महातेजस्वी विश्वामित्र कोपको न धारण करसके व पछितानेलगे कि क्याकहें इसके शापदेनेसे फिर तपोवल क्षीणहोगया १४ तिसमुनिके महाशापसे रम्भा पत्थर की होगई व महर्षिके वचन सुनकामभीजो इन्द्रकेसाथ आयाथा लौटगया १५ अब महातेजस्वी विश्वामित्रजीका तपोवल मारे कोपके जातारहा इन्द्रियां अपनेवशमें न रहीं इससे शान्तचित्त न हुये १६ बरन मनमें बड़ीचिन्ता करनेलगे व कहने कि अबहम कभी न कोपहीकरेंगे न किसीको कुछकहहींगे १७न सहस्रों वर्षतक साँसहीलेंगे बरन इन्द्रियों को जीत आत्मा को सुखा डारेंगे १८ जबतक कि ब्राह्मणोंके प्रभाव व तेजको न पहुंचेंगे तबतक न साँसहीलेंगे न कुछ भोजनही करेंगे १६ जोकहें कि बिनाभोजन किये देह कैसे रहेगा सो नहीं तपस्या के प्रभावसे हमारेअङ्ग न क्षीण होंगे चाहे भोजनकरें वा न करें २० इसरीतिसे हजारवर्ष तपस्या करने की फिरमुनिराजने प्रतिज्ञाकरी २७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेचतुष्षष्टितमस्सर्गः॥६४॥

इस प्रतिज्ञाके पीछे उत्तरदिशा को छोड़ पूर्व्वदिशामें जाय महामुनि विश्वामित्रजी तपस्या करनेलगे १ वहां सहस्र वर्षपर्य्यन्त तो मौन व्रतधारण कर परमदुष्कर तप किया २ काष्ठसमान सहस्र वर्षतक तपकरतेरहे व बहुतेरेविघ्नहुये परमुनिराजके अन्तःकरणमें क्रोध न आया ३ जब विश्वामित्र जीने निश्चय जानलियाकि अबचाहे जैसाहो क्रोध हमारा कुछ न करसकेगा हमारा यहसहस्र वर्षतकका नियम पूर्ण होगया ४ तब अन्न भोजन करनेकी तैयारीकी जैसेअन्न बनके तैयारहुआहै कि ब्राह्मणबनके इन्द्रने आय बनाबनायाहुआ अन्नमांगा ५ जितना अन्नभोजन के लिये तैयार हुआथा सबब्राह्मण जानइन्द्रको देदिया आपबिनाभोजनही केरहगये ६ पर ब्राह्मणसे कुछ न बोले मौनव्रत ही को धारणकरलिया अबकी श्वास ऊपर को चढ़ाय मौनव्रतमें टिके ७ यहांतक कि सहस्रवर्षतक साँसही न लिया ऐसाकरनेसे शिरसेधुआं निकलनेलगा ८ जिससे तीनोंलोक कँप उठे व प्रकाशित होउठे तब सबदेवता गन्धर्व्व ऋषिनाग राक्षसकिन्नर ६

येसबतिसके तपोवलसे मोहित होगये सबके तेजमन्दहोगये तब बड़ेकष्टको पाय महा दुःखितहो सबकेसब जायब्रह्मा जीसेबोले १० कि हेदेव विश्वामित्रजीको हमलोगोंने बहुतबहुत कारणोंसे लोभितकियाकराया पर तपस्यासेन चले बरन उनका तपबढ़ताहीगया ११ थोड़ाभी विघ्न उसमें न देखपरा न कुछ उनको कष्टही हुआ इससे जो मुनिको अभीष्ट है वहजो न दियागया १२ तोअपनी तपस्याके बलसे वे चराचर तीनोंलोक नाशकरदेंगे व सबदिशाव्याकुलहोजायँगीकुछकहीं प्रकाशित न रहेगा १३ देखिये सबसमुद्र थरथरारहेहैं सबपर्व्वत फटेजातेहैं पृथिवी कांपरहीहै पवन बड़े वेगसे चलतीहै १४ हेब्रह्मन् यहनहींजानते किसंसार नास्तिकोंके समान क्यामन्दकर्म्म तो न करनेलगेगा क्योंकि आजकल त्रिलोकी का मन चलायमान होरहा है इससे महामूर्खों के मनके समान होगयाहै १५ कहाँतककहें तिसी महर्षिके तेजसे सूर्य्य की प्रभाजाती रही है इससे जबतक महामुनिराज इसलोकके नाशनेमें बुद्धि न करें १६ तभीतक आपको चाहिये कि उनको प्रसन्न कीजिये क्योंकि व अग्निही के समान हैं त्रिलोक भस्मही करदेंगे कुछ किया कराया न होगा जैसे सृष्टि नाशके समय में कालाग्नि भगवान् संसार को जारते हैं वैसेही ये जारेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं १७ इससे जो इनको अभीष्ट है सो वर आप देही दीजिये नहीं तो वे इन्द्रपुरी के राज्यकी इच्छा करनेलगेंगे ऐसा कह सुन ब्रह्मादि देवता १८ महात्मा विश्वामित्रजी से जायबोले हेब्रह्मर्षिजी आप बहुत अच्छेतो हो तुम्हारी तपस्या से हम बहुत प्रसन्न हुये १९ हे कौशिक तुमने अपनी उग्रतपस्या से ब्राह्मणता पाया अब हम सब देवोंके साथ तुमको बड़ी आयुष देतेहैं २० तुम्हारा कल्याण हो सुखपूर्व्वक चले जाइये आजसे तुम राजर्षि से ब्रह्मर्षि हुये कुछभी सन्देह नहीं ब्रह्माजीके ऐसे वचनसुन सब देवताओं के २१ प्रणामकर विश्वामित्रजी बोले कि जो हमको ब्राह्मणता मिली व बड़ी आयुष भी हमें दीगई २२ तो ओंकार वषट्कार व सब वेदभी हमें अंगीकार करें क्षत्रियों की विद्या जाननेवाले व ब्राह्मणों की विद्या जाननेमें श्रेष्ठ २३ ब्रह्माजीके पुत्र वसिष्ठजी भी कहदेवें कि ये ब्रह्मर्षि हुये तो यही हमको अभीष्ट है यदि ऐसा होजाय तो कुछ सन्देह नहीं आपलोग प्रसन्न हो

अपने २ स्थानको जाइये जो ऐसा न होसकै तोहम फिर तपस्या करेंगे २४ यहसुन देवताओं ने जाय वसिष्ठजीकी बड़ी प्रार्थना की कि उन्हों ने जाय कहदिया कि विश्वामित्र तुम सत्य २ ब्रह्मर्षि अब हुये कुछभी संदेह नहीं २५ वसिष्ठजीने व सब देवताओं ने कहदिया कि तुम ब्रह्मर्षि हो कुछ संदेह नहींहै इतनाकह देवगण अपने २ स्थानको चलेगये २६ और विश्वामित्र जीने भी उत्तम ब्राह्मणता को पाय वसिष्ठजी की पूजा करी २७ व वहांसे चल तपस्या करतेहुये जाय सब पृथिवी घूम फिर आये हे रामचन्द्रजी इस रीतिसे इन विश्वामित्रजीने ब्राह्मणता पाई है २८ हेराम ये मुनियों में श्रेष्ठहैं व ये मानों शरीर धारणकिये हुये तपोरूपहैं धर्ममें तत्पर भी यहीहैं वीर्य्य पराक्रमादिभी इनके समान इन्हीं मेंहै २९ इतना कह शतानन्दजी चुपायरहे शतानंदजीके ऐसे वचनसुन राम व लक्ष्मण जीके सामने ३० हाथजोड़ महाराज जनकजी विश्वामित्रजीसे बोले कि हम धन्यहैं हमारे ऊपर बड़ी अनुग्रह आपने की ३१ जो इन राजकुमारों के साथ हमारे यज्ञमें आप पधारे हे ब्रह्मन् अपने दर्शन से हमें तुमने पवित्र किया ३२ तुम्हारे दर्शन से हमने बहुत प्रकार के गुण पाये व विस्तारपूर्व्वक आपकी तपस्याके समाचार सुने ३३ हमने व रामचन्द्रजीने व सब सभासदों नेभी आपके असंख्य गुण सुने ३४ तुम्हारे तप वल व गुण सब प्रमाण करने से बाहर हैं कोई भी नहीं प्रमाण कर सकता ३५ आश्चर्यरूप तुम्हारी कथा सुन हमको तृप्तिनहीं होती पर क्याकरें अब सूर्य अस्ताचलको जाया चाहतेहैं संध्या वंदनादि कर्म्म करने का समय आयगयाहै ३६ अब जातेहैं बड़े प्रातःकाल फिर आपके दर्शनहोंगे तुम्हारा कल्याणहो हमको जानेकी आज्ञा दीजिये ३७ जब जनकजीने ऐसा कहा तो प्रसन्नमन हो विश्वामित्रजी ने विदेहराजको विदाकिया ३८ ॥

दो० इमिकहि मिथिलाधिप मुनिहि परदक्षिण करिनीक ॥
गुरुजन वान्धव सहितनिज भवनगये विधिठीक १ । ३९
अरु कौशिकमुनि राम रघुनन्दन अनुज समेत ॥
मुनिगण पूजित तहँगये जहां निवास निकेत २ । ४०

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेपंचषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६५ ॥

तिसके पीछे जब प्रातःकाल हुआ तो महाराज जनकने स्नान संध्या तर्प्पण पूजनादिकर रामलक्ष्मण सहित विश्वामित्रजीको स्थानपै बुलाय पठाया १ व शास्त्रविधि से विश्वामित्रजी व राम लक्ष्मण की पूजाकर राजा बोले २ हे भगवन् आप अच्छी तरहसे आये अब हम आपका कौन काम करें हमको आज्ञा दीजिये क्योंकि हमआपकी आज्ञाही के पात्रहैं ३ जब महात्मा जनकजी ने ऐसा कहा तो वचन कहने में अति चतुर विश्वामित्र जी राजासे बोले ४ कि ये दोनों महाराज दशरथजी के पुत्र रामलक्ष्मण क्षत्रियों में श्रेष्ठ लोकमें विख्यात वह धनुष देखा चाहते हैं जो तुम्हारे यहांहै ५ तिससे आप देखादीजिये केवल इनके दर्शनही से इनका प्रयोजन निकलआवेगा देखके चलेजाँयगे ६ यहसुन राजाजनक जी बोले कि जिसलिये यह धनुष यहां धराहै उसके समाचार सुनिये ७ राजानिमिकी छठी पुस्तिमें एक देवरातनाम राजा हुये तिनको यह धनुष पूजा करने व शत्रु मारने के लिये महादेव जीसे धरोहर की रीति पर मिलाथा ८ जब दक्ष प्रजापतिके यज्ञथा उसमें महादेवजीका भाग नहीं लगाथा तो शिवजीने यही धनुष उठाय सब देवोंको परास्त कर कहा ६ कि जिससे भागके अर्थी हमारा भाग तुमने इस यज्ञमें नहीं लगाया इससे तुम सबोंके मूड़ हम इसी धनुष से काट डारेंगे १० तब देवता लोग बहुत उदास होगये व महादेवजीको किसी न किसी तरह से प्रसन्न किया ११ तब प्रसन्नहो शिवजीने यह धनुष सब देवताओं को दिया फिर महादेव व सब देवगणों ने किसी कारण प्रसन्नहो देव-रातराजा को थाती सौंपा १२ कि जाव इसकी पूजा किया करना और इससे शत्रुओं कोभी मारना १३ तबसे यह यहां रहता है हमभी यज्ञ करने के लिये हलसे पृथिवी जुताते थे कि हलके कूंड़से एक कन्या भूमि मेंसे निकली जिससे कि हलकी पद्धतिका सीता नामहै इसीसे उसका सीतानाम धराया सो इस कन्याको हमने सब देवता व राजोंका वल परखने के लिये रख छोड़ाहै कि जो इस धनुष को तोड़े उसीके संग इस का विवाह करेंगे यह कन्या योनिसे नहीं उत्पन्न हुई १४ सो भूतल से उत्पन्न इस हमारी कन्याको देख २ से आय २ राजालोगों ने अपना २ पराक्रम देखाय चाहा कि हम अपना विवाह इसके संगकरें १५ परंतु

हमने तो सबका वीर्य्य परखने के लिये प्रतिज्ञा कीथी उसको किसी ने पूरीही न किया इससे विवाह नहीं किया १६ प्रथम तो एक २ राजा की परीक्षा अलग २ लीगई थी फिर सब बटुर २ अपने वीर्य्य की परीक्षा देनेकेलिये एकत्र हुये १७ परंतु न इस धनुष को तोड़ही सके न उठायही सके १८ इसलिये तिन सबोंमें हमने थोड़ा वीर्य्यजान सब राजोंको लौटादिया इस बातको आपभी जानें हे मुनिराज १६ जब हमने अपनी कन्या का विवाह न किया तो सब राजालोगोंने हमारी पुरी आनघेरा कि हम जबरदस्ती विवाह करलेंगे २० परन्तु यहां वह बातकहां हमने सबको हरादिया हारने परभी उन लोगोंने हमारी पुरीकेसाथ बड़े २ उपद्रवकिये २१ यहांतक किजो २ पदार्थ अपनी पुरी की रक्षाके लिये हमने एकत्र कियेथे सबके सब एकवर्ष तक लड़ाईहोने से नाशको प्राप्त हुये तो हम अत्यन्त दुःखित हुये २२ व जाय हमने तपस्याकर देवताओं को प्रसन्न किया देवता लोगोंने परम प्रसन्नतासे बहुतसी चतुरंगिनी सेना हमको दी २३ उस सेनाके साथ लड़ने से पराजित हो सबके सब इधर उधर भाग गये यद्यपि अपने २ वलका उन लोगोंको बड़ा अभिमान था परंतु उनकी सेना ऐसी तितरबितरहो भागी कि सेनापति मंत्री दीवान आदिकों का कहीं पता न मिला २४ हे मुनिशार्दूल तिससे यह परम देदीप्यमान धनुष हम रामचन्द्र व लक्ष्मणकोभी देखावेंगे २५ यदि श्रीरामचन्द्र इसधनुष कीरोदा उतरीहैं उसको खींचकर चढ़ादेंगे तो अयोनिजा अपनी सीतानामकन्या उनको देदेंगे२६॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेषट्षष्टितमस्सर्गः॥६६॥

सो० जनक वचन सुनि कान कौशिक मुनि नृपसन कह्यउ ॥
धनुष देखावहु आन परम रम्य रघुनन्दनहिं १ । १
सुनि नृप सचिव बुलाय अनुशासन दीन्ह्यहु त्वरित ॥
माला चन्दन लाय दिव्य धनुष आनहु सकल २ । २

राजा जनकजी के ऐसे वचन सुन मन्त्रीलोग जहां धनुष था गये बड़े २ योधा बुलाय धनुष उठवाय लाये ३ इस धनुष के लाने में महापराक्रमी ५००० योधा लगते थे सोभी गिरते परते जिसी किसी

प्रकारसे बना खींचखांच उसकी पेटी पकड़ कर लाये ४ इसके धरने के लिये एक ८ पहियों की बड़ी भारी लोहकी पेटी बनी हुई थी उससहित सब मंत्रीलोग खिंचवाय लाये व राजा से बोले ५ हेराजन् इस धनुष की पूजा सब राजा लोगोंने कीथी यदि देखने के योग्य समझिये तो रामचन्द्रजी को देखाइये ६ तिन लोगों के ऐसे वचन सुन हाथ जोड़ राजा जनक महात्मा विश्वामित्रजी व रामलक्ष्मणजी से बोले ७ हेब्रह्मन् यह धनुष महादेवजीका है इसलिये शिवके समान जान आजतक सब निमिवंशी राजा इसकी पूजाही करते चले आये हैं यद्यपि बड़े २ प्रतापी राजा होगये हैं परन्तु इसकी प्रत्यञ्चा किसी की चढ़ाई नहीं चढ़ी ८ सो कुछ जनकवंशी राजोंकीही यहदशा नहीं हुई बरन सबदेव गण सबदैत्य सब राक्षस गन्धर्व्व यक्ष किन्नर नाग कोई भी इसे नहीं चढ़ासक्के ९ फिर इसके चढ़ाने में मनुष्यों की कौन गिनती है न कोई इसे चढ़ायही सक्का न झुंकायही न अकेले उठायही सक्का १० हांआप की आज्ञा से मँगाया है चढ़ना चढ़ाना तो कठिन है क्योंकि आज तक बहुत वीर घूम गये हैं पर इन दोनों राजपुत्रों को देखातो दीजिये शिवका धनुष है दर्शनही जानों करलेंगे ११ जनकजीके ऐसे वचन सुन विश्वामित्रजी ने रामचन्द्रजी से कहा अयेवत्स राम धनुष देखोतो १२ मुनिराज के ऐसे वचन सुन जिस लोहकी पेटीके भीतर वह धनुष धरा रहताथा उसे खोलखाल धनुष देख रामचन्द्रजी बोले १३ कि हमने यह धनुष तो अच्छी तरह से देखा अब हाथसे छूते हैं इसके चढ़ाने व उठा लेने के लिये भी यत्न करते हैं १४ इस बातको सुन राजा व मुनिराज दोनों जनोंने अङ्गीकार किया कि बहुत अच्छा मुनिके वचन सुन श्रीरामभद्रने अपनेकरकमल से झटपट बीचमें पकड़ उठायही तो लिया १५ और लाखोंमनुष्य देखतेही रहे कि एक खेलही के साथ धनुष की पनच चढ़ादी १६ जैसेही खींचकर चढ़ाया है कि बीचोबीच से धनुष के दो खण्ड होगये १७ तिसके टूटनेका शब्द ऐसाहुआ जैसा कि वज्रपात में होताहै उस समय सब पृथिवी काँपउठी पर्व्वत ठौर २ फट गये १८ सब मनुष्य हरबराय २ जो जहां रहे भूमिमें गिरपरे केवल राजा जनक व विश्वामित्र व रामलक्ष्मण को छोड़ १९ सब लोग तो महा

भयभीत हुये कि यह क्याहुआ पर राजा जनकजीके मनमें जो यहशङ्का समाई थी कि रामचन्द्रसे भी धनुष न चढ़ेगा वह जातीरहीइससे परम हर्षित हुये व हाथजोड़ महाराज विश्वामित्रजीसे बोले २० हे भगवन् महाराजकुमार श्रीरामउदार का वीर्य्य हमने देखा इनका पराक्रम वीर्य सब अत्यद्भुत व अचिन्तनीय तर्कणा रहित है ऐसा तो हमनेकभी नहीं देखा अहोभाग्य है २१ हमने अब जाना कि हमारी कन्या सीता दशरथ राजकुमार परमोदार पूर्णकाम श्रीरामको पतिपाय जनक वंशियों के कुलकी कीर्त्ति फैलावेगी २२ मेरी प्रतिज्ञाभी सत्यहुई जो कि वीर्यही कन्याके विवाहके मध्ये मोल ठहराया था अब प्राण से भी अधिक प्यारी व दुलारी अपनी कन्या रामचन्द्रको अवश्य देंगे २३यदि आपकी सम्मति होतो हमारे मन्त्री लोग रथोंपर चढ़ बहुतही शीघ्र अयोध्या पुरीको जायँ २४ महाराज दशरथजी से विनयपूर्व्वक वार्त्ता कर यहां के सकल समाचार कह महाराज को हमारे पुर में लिवालावें २५ यहभी कहें कि आपके बालकों की मुनिराज ने अच्छी रीतिसेरक्षा की है प्रसन्नचित्तहो मिथिलापुरी को पधारिये २६ ॥

चौ० ॥ कहकौशिक अभिलाष तुम्हारा । सबविधि शोभनसहितविचारा ॥ नृपवर मन्त्रिन्ह तुरत बुलावा । अवधहि सब समझाय पठावा ॥ १ । २७ ॥ सकल वृत्त गणकी वरचीठी । नृपवर मन्त्रिन्हदई सुमीठी॥ लैसब साजसाज मन्त्रीगन ॥ चले अयोध्यहि सकल मुदितमन २ ।२८

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेसप्तषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६७ ॥

दो० पाय जनक आज्ञा मुदित मन्त्रिदूत चढ़ियान ॥
तीनिरात्रिबसिमार्ग्गमहँ पहुंचेअवधसुथान १ । १
जनकनगर निजबासकहि दशरथदूतन साथ ॥
जाय सभामहँदेवसम नृपलखिनायहुमाथ २ । २
हाथजोरि गत भयसकल दूतनृपति सोंजाय ॥
मधुरविनयनय युतवचनबोलेअति हरषाय ३ । ३

हे महाराज महायज्ञशाली राजा जनकजीने अति स्नेहयुक्त मधुरवाणी आपसे कह ४ कुशल प्रश्न सब पुरोहित मन्त्रिगण राज्य

कौशकी पूंछा है ५ कुशलप्रश्न पूंछने के पीछे विश्वामित्र जीके सम्मत से यहबात आपसे कही है ६ कि हमने पूर्व्वही यह प्रतिज्ञा की थी कि जो महावीर्य पराक्रम युक्त पुरुष होगा जो महादेव के धनुष को चढ़ावेगा उसके सङ्ग अपनी कन्या का विवाह करेंगे इस विषय में बहुत राजालोगों ने क्रोधभी किया व सबके सब अहङ्काररहित कियेगये व सबका वीर्य जातारहा ७ तिस हमारी कन्याको विश्वामित्रजी के साथ आय आप के पुत्र श्रीरामने जीता ८ व जो धनुष हमारे यहां भूपालों का वीर्य परखने के लिये रक्खा था उसेभी बीच समाज में श्री रामचन्द्रने तोड़ा ६ सो हम अपनी सीता कन्या इन्हीं रामभद्र को दिया चाहते हैं क्योंकि इनमें सब प्रकार का पराक्रम है इसलिये हमअपनी प्रतिज्ञा को भी उतरना चाहतेहैं आप इस विषय में आज्ञा देने केयोग्य हैं १० व हे महाराज वसिष्ठादि पुरोहित ब्राह्मणों के साथ बरात साज सहित समाज यहांआय अपने पुत्रोंको देखिये ११ व हमारी प्रतिज्ञा पूरी कीजिये यहां आनेपर दोनों पुत्रों के विवाह की शोभा देखियेगा अर्थात् एक हमारे ऊर्म्मिला नाम कन्या है उसके सङ्ग लक्ष्मण का विवाह करेंगे १२ हे महाराजाधिराज राजा जनक ने ऐसे मधुर वचन विश्वामित्रजी व शतानन्दजी के सम्मत से कहे हैं १३ दूतोंके ऐसेवचन सुन राजा परमहर्षित हुये व वसिष्ठ व वामदेवादि ब्राह्मण तथामन्त्रिगणों को बुलाया व उनसे बोले १४ कि कौसल्या के आनन्द बढ़ाने वाले रामभद्रकुमार अपने भाई लक्ष्मण के साथ विश्वामित्रजी से रक्षित आजकल जनकपुरी में बसते हैं १५ राजा जनकजी रामभद्रका वीर्य्य सब भांति देख चुके हैं इसलिये अपनी कन्या उनको दिया चाहते हैं १६ जो आपलोगोंको यहबात रुचैतो चलिये महात्मा जनकजी की पुरीको शीघ्रही चलें जिसमें जो मुहूर्त्त विवाह के लिये नियत है उसदिन तक पहुंच जायँ बिलम्ब न हो १७ ॥

दो० यहसुनि मनगुनि मन्त्रिगण ऋषिन सङ्ग हरषाय ॥
कह अति शोभन बात यह चलिय भूपसुखदाय १
मन्त्रि वचन सुनिनृपति मणि मन्त्रि पुरोहित वृन्द ॥
सबसन कह प्रातहि चलब करहु उपाय सुछन्द २ । १८

जनक मन्त्रिगण निशितहां निवसे पाय सुपास ॥
सकलभांति सुखयुत अशन आसन लहि सुखवास ३। १६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेऽष्टषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६८ ॥

जब रात्रि बीतगई प्रातःकाल होतेही सबभाई वन्धुओंकेसाथ प्रसन्नचित्तहो राजा दशरथ महाराज अपने मन्त्रिश्रेष्ठ सुमन्त्र जीसे बोले १ कि आज अभीसे सब खजाने के अधिकारी बहुत साधन रत्नादि लेले आगे चले जहां बरात के टिकने का स्थान विचारा जाय वहां सब प्रकार सुपास की वस्तु एकट्ठा करावें २ उन्हीं के सङ्ग चतुरङ्गिनी सेना भी शीघ्रही चलै रथगाड़ी छकड़े आदिभी जायँ आज्ञामें अन्तर न होनेपावे३ वसिष्ठ वामदेव जावालि काश्यप मार्कण्डेय कात्यायनादि ४ सब ब्राह्मणों के लिये इनकी रुचिके अनुसार सवारियां तैयारहों कि उनपर चढ़ चढ़ येलोग भी आगेचलें हमारे लियेभी रथ तैयारहो जिसमें बिलम्ब न हो क्योंकि येराजा जनक के दूत हमको बहुत जल्दी करातेहैं ५ महाराज की ऐसी आज्ञा पाय चतुरङ्गिनी सेना जब महीपाल ऋषियों के सङ्ग चले पीछे पीछे चली ६ जाते जाते चारदिन मार्ग्गमें बिताय महाराज सहित समाज जनकपुर में पहुंचे राजा जनकजी दशरथ जी का आगमन सुन अगुआनी आन मिले व सब पूजाकी सामग्रीएकत्र करादी ७ अतिवृद्ध महाप्रतापी राजा दशरथजी को पाय राजा जनक परमानन्दितहुये ८ व महाराज दशरथसे हर्ष सहित बोले ९ हे नरश्रेष्ठ आप अच्छी तरह से आये बड़े भाग्य की बात है जो यहां प्राप्तहुये अच्छा हुआ अब आपके पुत्रोंनेजो पराक्रमकियाहै उसकी शोभाभी पावोगे १० यह भी बड़े भाग्य की बातहै जो सब ऋषियों के साथ महातेजस्वी वसिष्ठ जी भी आये जैसे कि देवोंके सङ्ग इन्द्र आते हैं ११ बड़े भाग्य की बात है कि अब कन्यादान के बिषय में जो विघ्न थे नाश को प्राप्त हुये व हमारा कुल महापराक्रमी रघुवंशियोंके सम्बन्धसे पवित्रहुआ १२ अब प्रातः काल सब ऋषियों के साथ विवाह यज्ञ हो आप आनन्दित हो देखें १३ तिस के ऐसे वचन सुन ऋषियों के बीच में बैठे हुये महाराज दशरथ राजा जनकजीसे बोले १४ कि हमने यह सुन राखाहै

कि कन्या गोदानादिकों का दान लेना दाता के अधीन होता है जबकभी वह देता तभी लिया जाताहै इसलिये जैसा जैसा आप कहेंगे वैसावैसा हम करते रहेंगे क्योंकि आप दाता ठहरे १५ महा सत्यवादी राजा दशरथ जीके ऐसे धर्म्मयुक्त व यशोवर्द्धन वचन सुन राजा जनक अतीव विस्मित हुये क्योंकि देखो इनके पुत्रों ने अपने वीर्य्यसेही कन्या जीती है तथापि राजा विनयपूर्व्वकही बोलते हैं कोई अहङ्कारकी बात नहीं कहते १६ इस के पीछे सब मुनिलोग परस्पर के मिलने से परम हर्षित हो सुखपूर्व्वक रात्रि को वहां बसे १७ महाराज दशरथ भी राम लक्ष्मण परमप्रिय पुत्रों को देख परमहर्षित हो जनक से सब भोजनादि पूजापाय बहुत प्रसन्न हुये १८ व महातेजस्वी राजा जनक भी जो कुछ नेगचार लौकिक वैदिक विवाह विषयक रहगये थे सब अपनी दोनों कन्याओं से कर कराय रात्रि को सोयरहे १९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेएकोनसप्ततिमस्सर्ग्गः ॥६९ ॥

जब प्रातःकाल हुआ तो राजा जनक ऋषियों के सङ्ग प्रातस्सवनादि सन्ध्या वन्दनादि कर्म्मकर शतानन्दनाम अपने पुरोहित से बोले१ हमारे भाई महातेजस्वी महापराक्रमी अतिधार्म्मिक कुशध्वज नाम जो साङ्काश्या नाम पुरी में वसते हैं २ जिस पुरी में शत्रुओंके रोकने के लिये बड़े खावां व शहरपनाह आदि बनेहैं व उसके निकट इक्षुमती नदी बहरहीहै उसका जल पीते हैं पुरीकी ऐसी शोभाहै जैसे पुष्पक विमान कीहै ३ तिस अपने भाई को हम देखा चाहतेहैं क्योंकि वे अपनी पुरीही में बसे हमारे यज्ञ की रक्षा किया करते हैं वे भी इस विवाह सुख को हमारे सङ्ग भोगें ४ ऐसा कहतेही थे कि कुछ लोग शतानन्द जी के साथ जाने के योग्य अपने आप आये तिनको जनक जीने शतानन्द जी के सङ्ग जाने के लिये आज्ञादी ५ राजा की आज्ञापाय अति शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार हो वे लोग कुशध्वजके लेने कोगये जैसे बामनजी के लेने को इन्द्र की आज्ञा पाय देवगण गयेथे ६ ते सब साङ्काश्या पुरीमें पहुंचे राजाकुशध्वज को देख जो वृत्तान्त जनक जीके थे सबोंने कहेसुने ७ दूतों के वचन सुन जनकजीकी आज्ञा से कुशध्वज

राजा जनकपुरी में आये ८ व परम धर्म्मात्मा जनकजी को देखा प्रथम शतानन्द के प्रणामकर पीछे जनक जीके प्रणाम किया तब शतानन्द व जनक जीकी आज्ञा से राजों के योग्य आसन पै बैठे ६ जब कुशध्वज व जनक दोनों भाई एकआसनपै बैठे तो सुदामानाम मन्त्रीसे बोले १० हे मन्त्रिश्रेष्ठ तुम इक्ष्वाकुवंश विभूषण महाराज दशरथ जी के निकट जावो व पुत्र सहित उनको यहां लिवालावो ११ जहां महाराज दशरथ उतरे थे वह मन्त्री वहां पहुंचा देखतेही प्रणामकर राजा से बोला १२ हे अयोध्यानाथ महाराज राजा जनक आपको सहित पुरोहित व पुत्रों के देखा चाहते हैं १३ मन्त्री के ऐसे वचन सुन महाराज दशरथ जी सब ऋषि लोगों व भाई बन्धुओंको सङ्गले जहां राजा जनक थे वहां जाय पहुंचे १४ व अपने भाई बन्धु ऋषि मुनि लोगों के साथ जनकजी से बोले १५ हे राजन् आप जानते हैं कि इक्ष्वाकुवंशियों के कुलदेव वसिष्ठही जी हैं और सब कार्य्य ज्यों ज्यों ये बताते हैं त्यों त्यों होते हैं १६ इससे विश्वामित्र जीकी सलाहसे सब ऋषियों के साथ सब धर्म्म यथाक्रम बतावेंगे १७ इतना कह जब महाराज दशरथ जी मौन हुये तो ऋषिश्रेष्ठ भगवान् वसिष्ठजी वचन कहने में बड़े चतुर राजा जनक व शतानन्द जीसे बोले १८ कि उस साक्षात् परमेश्वर परब्रह्मसे नाशरहित सदा रहनेवाले महाराज ब्रह्मा जी उत्पन्नहुये तिस के मरीचि मरीचि के कश्यप पुत्र हुये १९ कश्यप से सूर्य्य नारायण हुये सूर्य्य से वैवस्वत मनुहुये ये मनुजी सब प्रजाओं के पतिहुये व सबसे प्रथम राजा यही हैं इनके इक्ष्वाकु नाम तनयहुये २० इन्होंने अयोध्या पुरी बसाई इनके कुक्षिनाम पुत्र हुये २१ कुक्षिके विकुक्षि उत्पन्न हुये विकुक्षि के महाप्रतापी वाण नाम पुत्रहुये २२ वाणके महा तेजस्वी अनरण्य नाम अतिप्रतापी हुये अनरण्य के पृथु पृथु के त्रिशंकु २३ त्रिशंकु के धुन्धुमार धुन्धुमार के महारथी युवनाश्व नामक हुये २४ युवनाश्व के महाराजाधिराज चक्रवर्त्ती मान्धाताजी हुये मान्धाता के महातेजस्वी सुसन्धि २५ सुसन्धि के ध्रुवसन्धि व प्रसेनजित् दो पुत्र हुये ध्रुवसन्धि के महायशस्वी भरत नाम पुत्र २६ भरत के महातेजस्वी असित नाम हुये २७ जिन असित के वैरी हैहय तालजङ्घ शूर

शशविन्दु नामक हुये २८ तिनके सङ्ग युद्ध करनें से राजा असित हार गये व अपनी दोरानियोंके साथ हिमवान् पर्व्वत पै तपस्या करनें चले-गये २६ राजा असित इस कुल में बड़े अल्प पराक्रमी हुये वहां जाय कुछ दिनों में शरीर त्याग स्वर्गी हुये राजा की उन दिनों में दोनों स्त्रियां गर्भिणी थीं ३० उनमें से एक ने अपनी सौतिको सहित बिष भोजन देदिया उसी पर्व्वतपै उन्हीं दिनोंमें भृगुवंशी च्यवन ऋषितप-स्या करते थे ३१ उनमें जिसने बिष खाया था वह देव समानतेजस्वी च्यवन जीके शरणागत हुई ३२ व पुत्र होनेकी इच्छासे मुनि के च-रण कमलों की वन्दना करके हाथजोर आगे बैठगई इस रानी का कालिन्दी नाम था ३३ मुनिराज कालिन्दी से बोले कि हे महाभागे तेरे पेट में महावलवान् व महाप्रतापी पुत्र है ३४ वह थोड़ेही दिनोंमें बिषसे लपेटा हुआ होगा तेरे सब दुःख जातेरहेंगे कुछ शोच न कर३५ सो राजपुत्री च्यवन मुनि के प्रणामकर उन्हीं के प्रसाद से पुत्र उत्पन्न करती भई उन दिनों में बेचारी को बारबार अपने पतिका शोक होता था कि जिससे आतुर रहती थी ३६ देखो इसकी सौतिने उसे गर्भ मारने के लिये उसे गर कहे विष दियाथा पर ईश्वरेच्छा योंथी कि उस गरके साथ पुत्र होने से उसका सगर नाम धराया गया३७ ये सगर महाप्रतापी राजाहुये इनके असमंजस नाम पुत्रहुये असमंजस से अंशुमान् अंशुमान्से दिलीप दिलीपके भगीरथ ३८ भगीरथके ककु-त्स्थ ककुत्स्थ के रघु रघुके प्रवृद्ध वसिष्ठजीके शाप से इन्हींका पुरुषाद कहे राक्षस नाम हुआ ३९ इन्हों ने भी गुरू को शाप देनेके लिये जल उठाया था पर अपनी रानी मदयन्ती के रोकने से अपनेही पैरों पर छोड़लिया इससे पैरों में कुछ कंजनसा पाप चिह्न होगया इससेइन का एक कल्माषपाद नामहुआ इनसे शङ्खणनाम हुये शङ्खण से सुदर्शन सुदर्शन के अग्निवर्ण ४० अग्निवर्ण के शीघ्रग शीघ्रग के मरु मरुके प्रशुश्रुक प्रशुश्रुक के अम्बरीष ४१ अम्बरीष के नहुष नहुष के ययाति ययातिके नाभाग ४२ नाभाग के अज अज के महाराजाधिराज ये द-शरथजीइनसे ये दोनोंभाई राम लक्ष्मण हुये ४३ ॥

दो० ब्रह्मासे लैरामलग सब इक्ष्वाकु नरेश ॥

शुद्धवंश धार्म्मिक यशी सत्य वचन शुभवेश १ । ४४
राम लषन हित तब सुता मांगत देहु महीप ॥
उनके समबरहैं यही खोजिदेखु सबद्वीप २ । ४५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७० ॥

जब वसिष्ठजी ने ऐसाकहा तो हाथजोड़ राजा जनक बोले कि हम भी अपने कुलकी परम्परा कहतेहैं सुनिये १ क्योंकि कुलीनों को उचित है कि कन्यादान के समय अपने कुलको सम्पूर्ण परम्परा कहें इससे कहते हैं सुनलीजिये २ तीनोंलोकों में अपने कर्म्मों से प्रसिद्ध परम धर्म्मात्मा सब प्राणियोंमें श्रेष्ठ निमिनाम राजाहुये ३ तिनके पुत्रका तिथि नामहुआ तिथिके पुत्र जनक नामहुये इन्हींके समय से सब इसवंश के राजा जनक कहाने लगे इनसे ये प्रथम राजा इसवंश के गिनेजाते हैं जनकके उद्गावसु नामराजाहुये ४ उदावसुके परमधर्म्मात्मा नन्दिवर्द्धन नन्दिवर्द्धनके परमशूरवीर सुकेतु नामहुये५ सुकेतुके परमधर्म्मात्मा देवरात देवरात के वृहद्रथ ६ वृहद्रथ के बड़ेशूरवीर महावीरनामक बड़ेप्रतापीहुये महावीर के बड़े सत्यपराक्रमी धारणाशक्तिमान् सुधृतिमान् नामहुये७सुधृतिके परमधार्म्मिक धृष्ठकेतु नामकहुये राजर्षि धृष्ठकेतु के हर्य्यश्वनामक ८ हर्य्यश्वके मरु मरुके प्रीतीन्धक प्रीतीन्धक के परम धर्म्मात्मा कीर्त्तिरथ ९ कीर्त्तिरथ के देवमीढ देवमीढ के विवुध विवुध के महीध्रक १० महीध्रकके राजा कीर्त्तिरात कीर्त्तिरातके महाराज महारोमा ११ महारोमाके महाराजश्वर्णरोमा राजर्षि स्वर्णरोमाके ह्रस्वरोमा १२ तिस धर्म्मज्ञ महात्मा स्वर्णरोमा के दो पुत्र ज्येष्ठहम जिसका सीरध्वज नामहै दूसरे कुशध्वज १३ हमारे पिता जी हमको राज्यदे व कुशध्वज को सौंप आप बनको चलेगये १४ वृद्धतो थेही कुछदिन तपस्या करके पिताजी तो स्वर्गबासीहुये हम अपने भाई कुशध्वज को स्नेहपूर्व्वक पालते हुये राज्यकरनेलगे १५ इसरीति से बहुत दिनोंतक राज काज करते रहे कि एक समय साङ्काश्य नगरी का राजासुधन्वा कि बड़ाबलवान्था आय उसने हमारी मिथिलानगरी को घेरिलिया १६ व दूतों के हाथ कहलाभेजा कि तुम्हारे यहां शिवका धनुष व सीतानाम कन्या

है हमको दोनों देदेवो १७ जबहमने नहींदी तो हमसे उससे अतिघोर युद्धहुआ जिसमें सुधन्वा को हंमने मारडारा १८ सुधन्वाको मार साङ्काश्यानगरी के राज्यसिंहासन पै महा शूरवीर अपने भाई कुशध्वज को बैठाया १९ सो ये हमारे छोटेभाई कुशध्वज व हम दोनों परम प्रसन्नता से आपको दो बधूदेते हैं कृपापूर्व्वक ग्रहण कीजिये २० उनमें सीतातो रामचन्द्र को व ऊर्म्मिला लक्ष्मण को सो सीता तो वीर्य्य शुल्काही है अर्थात् श्रीरामभद्र कुमारने अपना वीर्य्यही खर्च कर शिवधनुष तोड़ हमारी प्रतिज्ञा पूरीकर उसेग्रहण करने का विचार कियाहै व वहदेवकन्याओं के समान रूपगुणादिकों में हैं २१ व दूसरी ऊर्म्मिलाहै सो हमतीन बार सत्यही कहते हैं कि परमप्रीति से दोनों आपकी बधूकर के देंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं २२ अब प्रथम राम लक्ष्मण दोनों बालकों से प्रथम गोदान कराइये पीछे नान्दीमुखादि श्राद्ध जो पितरों के लिये विवाहादि शुभकर्म्मोंमें किये जातेहैं आप या महाराज दशरथ करें २३ आज मघानक्षत्र है आजके तीसरेदिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र होगा उसीमें विवाहक्रिया कीजिये २४ अभीसे राम लक्ष्मण के सुख के लियेदान पुण्य कराइये २५॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेएकसप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ७१ ॥

जबश्री जनकजीनेऐसा कहातो जनक व वसिष्ठजी व राजादशरथ से विश्वामित्र बोले १ हेराजन् सत्यही सत्य इक्ष्वाकुवंशी व विदेहवंशी राजोंके कुलचिन्तना करने व प्रमाण करने से बाहर हैं इसीसे इनके तुल्य और कोई कुलनहीं है २ इसके सिवाय सबतरह से धर्म्मरूपादिमें राम लक्ष्मण व सीता ऊर्म्मिला का योगभी समान है तनिक भी न्यूनाधिक नहीं ३ पर एकबात हमें और कहनी है सोभी सुनिये कि येजो महाधर्म्मज्ञ राजा जनकजी के भाई राजा कुशध्वज हैं ४ अतिरूपवती दो कन्या इनकेभी हैं सो उन्हें हम बधू बनानेकेलिये माँगतेहैं ५ एक को भरत कुमारकी स्त्री बनाया चाहते हैं एकको महाबुद्धिवान् शत्रुघ्न की क्योंकि ये राजकुमार भी महात्माहैं व उन्हीं के योग्य सब तरहसे ये दोनों कन्याभी हैं ६ ये महाराज दशरथजीके चारोपुत्र रूप व यौवनयुक्त

लोक पालोंके समान व देवतुल्य पराक्रमहैं ७ इससे हेराजन् इनदोनों कन्याओं व इनदोनों कुमारोंका भी सम्बन्ध अवश्य कीजिये कि इक्ष्वाकुजी का कुल और सुशोभितहो क्योंकि आप पुण्यात्मा हैं ऐसाकहने में किसी बातकी चिन्ता न कीजिये ८ यह वसिष्ठजी की सलाहसे विश्वामित्रजीकी बात सुन राजाजनक हाथजोड़ दोनोंमुनियों से बोलेकि ६ कि हम अपने कुलको धन्य समझते हैं जिसकुलके योग्य सम्बन्ध करने को यह कुलदोनों मुनियोंने अपने मुखारविन्दसे बताया १० सो बहुत अच्छा भाई कुशध्वज की कन्या भरत व शत्रुघ्न की स्त्रियांहों ११ ये चारो राजकुमार चारोराज कुमारियों का विवाह एकही रात्रि में करें १२ अब कल उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रहै इसीमेंसब पण्डितोंकी सम्मतिहै विवाह होजानाचाहिये क्योंकि इसनक्षत्र केप्रजापति भगदेवताहैं १३ ऐसेवचनकह हाथजोड़ राजाजनक दोनों वसिष्ठ विश्वामित्र मुनिराजों से बोले १४ कि आप लोगोंने परम धर्म्म किया हम दोनों जनों के शिष्य हैं हमारा व राजा दशरथ व कुशध्वज का राज्य आपही लोगोंके आधीन है जहां चाहिये सुखपूर्व्वक विराजिये १५ जैसे जनक पुरी राजा दशरथकी है तैसेही अब अयोध्यापुरी हमारी है प्रभुताभी दोनों में समान है इसमें कुछ सन्देह नहीं यहां भी आपलोगों का स्थानहै और वहांभी १६ राजाजनक ऐसा कहतेहीथे कि प्रसन्नता पूर्व्वक राजा दशरथ जी बोले १७ कि तुम दोनों भाइयोंके असंख्य गुणहैं कहां तक बखानें आप लोगोंने ऋषि मुनि व राजा लोग सबकी अच्छी पूजाकी इसलिये हम बहुत प्रसन्न हैं १८ अब आप आनन्दित हो बैठिये हम भी अपने स्थानपै जाय विधिपूर्व्वक नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्ध करतेहैं १९ जनकजी से ऐसाकह सुन विश्वामित्र व वसिष्ठ दोनों मुनियों को आगेकर राजा दशरथजी जहां उतरेथे वहांआये २० व जितने नान्दीमुख मातृ पूजनादि कर्म्महैं किये कराये प्रातः काल होतेही अपने पुत्रोंकी पहिले पहिल दाढ़ीबनवाई २१ जिसमें ब्राह्मणोंको लाखोंमोदान दिये कि जिसमें पुत्रोंका कल्याणहो २२ ॥

दो० हाटक शृङ्गी पयसिनी वत्ससहित नृपराज ॥
कांस्यदोहनी युतदियो चरिलष धेनुविराज १ । २३

बहुरि बहुत मणिपट निकर पुत्रन हित महिपाल ॥
दीन द्विजन गोदान हित सुतवत्सल त्यहिकाल २ । २४
कृतगोदान स्वसुतन युत शोभित भयहुमहीश ॥
जिमि शशिसोहत लोकपति सँय्युत महा धनीश ३ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेद्विसप्ततितमस्सर्गः॥७२॥

जिसदिन राजा दशरथजी ने अपने पुत्रोंकी दाढ़ी बनवाई थी उसी दिन भरतजी के मामा केकयदेश के राजाके पुत्र युधजितूजी आये १ राजादशरथजी को देख कुशल प्रश्न करकराय विनय पूर्व्वक बोले २ कि केकय देशके राजा हमारे पिताजीने बहुत बहुत तरह से आपकी कुशल पूंछी है व जिन हम लोगों की कुशल आप चाहते हैं तिनकी सब तरह से कुशल है ३ पिताजी को हमारे भानजे भरतजी के देखने की इच्छा है तिसी के लिये हम अयोध्या में आये थे ४ वहां सुना कि आप पुत्रों के विवाह के लिये निज पुत्रों को सङ्गले जनकपुरी को गये हैं ५ इसलिये अपने भानजे के देखने के लिये बहुत शीघ्र यहां को चले आये हैं यह सुन महाराज दशरथ ने अपने परम प्रिय अतिथि को देख ६ उत्तम उत्तम पदार्थों से सहित सत्कार उनकी पूजाकी व सब अपने महात्मा पुत्रोंके साथ रात्रिभर तहां रहे ७ जैसे ही फिर प्रातःकाल हुआ कि उठके प्रातस्नान सन्ध्यादि करकराय ऋषियों के साथ यज्ञस्थान में आये ८ जब मध्याह्न में विजय मुहूर्त्त आया तो सब भूषण वस्त्रादि पहिने ओढ़े हुये भाइयोंके साथ श्रीरामचन्द्रजी भी सब नेग चार करनेलगे ९ जितने मङ्गल कार्य्य हुये सब वसिष्ठादि मुनियों की आज्ञासे ही हुये उसी समय वसिष्ठजी राजा जनकजी से बोले १० हे राजन् अब राजा दशरथ अपने पुत्रों से सब मङ्गलाचार करवा चुके अब दाता की चाहना करते हैं ११ क्योंकि जब दाता व प्रतिग्रहीता दोनों तैयार हों तो सब अर्थ सिद्ध होतेहैं तिससे अब आप भी विवाह के सब कर्म्म कराय अपने धर्म्म को पहुंचिये १२ जब वसिष्ठजीने ऐसा कहातो महादानीराजाजनक बड़ेबिचार पूर्व्वकबोले १३ कि महाराज दशरथ के रोंकने के लिये कौन द्वारपाल हमारा नि-

यत है व वे किसकी आज्ञा परखते हैं अपने घरमें आने में कौनसा बिचार होता है क्योंकि यहभी तो राज्य उन्हीका है चले नहीं आते १४ हमारी कन्याभी तो सबकीसब मङ्गलाचार किये कराये वेदी पर बैठीहैं मानों अग्नि की शिखा के समान देदीप्यमान हो रहीहैं १५ हम तो खुद महाराज दशरथजी के आनेकी प्रतीक्षा करते हैं कि कब आवें कब विवाह हो इससे शीघ्र वेदी पर आय विवाह करें अब किस लिये विलम्ब करते हैं १६ यह सुन वसिष्ठजी ने ज्योंकात्यों सब महाराजदशरथ से कहा सो सुन सब ऋषियों के साथ अपने पुत्रों को विवाह करने केलिये जनक मन्दिर में प्रवेश कराया १७ जब सब राजकुमार मण्डप के नीचे पहुंचे तो राजा जनक वसिष्ठजी से बोले कि हे ऋषिराज आप सब ऋषियों के साथ लोकाभिराम रामचन्द्र के विवाह की क्रिया कराइये १८ वसिष्ठजी ने कहा अच्छा सब क्रिया की कराई जाती है यह कह विश्वामित्र व सतानन्दजो को आगे कर मड़ये के नीचे अग्निस्थापन करने के लिये वेदी बनाई २० व उसको गन्ध पुष्प चन्दनाक्षत से वेदी के चारोंओर भूषित किया सुवर्णकी मंजुषा तथा करवा आदि पात्र बनवाय दूर्व्वाङ्कुरादि से शोभित किया २१ सर्व्वत्र अंकुर भर भर कोपर धरे धूपभर भर धूपपात्र सैकरों स्थापित किये शङ्खाकार बहुत से पात्र धरे स्त्रुवादि सब अर्घ्य पाद्यादि युक्त किये २२ बहुत से पत्रों में लावा अक्षत भराय भराय धराये मन्त्र पढ़ पढ़ सर्व्वत्र कुश बिछाये २३ बिधिपूर्व्वक मन्त्र पढ़ पढ़ वेदीपै अग्नि स्थापन किया फिर वसिष्ठ जी ने वरकी सन्ती आप आहुति देनेलगे २४ फिर श्रीसीतामहारानी को सब भूषण भूषित कराय लाय वेदीके निकट लोकाभिराम श्री राम के सामने बैठाया २५ व राजा जनक जी रामचन्द्रसे बोले हेराम यह हमारी प्यारीकन्या तुम्हारी धर्म्मचारिणी है २६ इसे अच्छीतरह से अवलोकन कर इसका हाथ अपने करकमल से ग्रहण कीजिये २७ इतनाकह जलाक्षत द्रव्य सहित जानकीजी का हाथ ले रामचन्द्रजीके हाथ पै जनकजी नेधरदिया ऋषिलोग व देवतालोग साधु साधु करनेलगे २८ देवता लोगोंने अपनेनगारे बजायबजाय पुष्पोंकी वर्षाकीइस रीतिसे महाराजजनकजीने अपनी कन्याश्रीसीता रामचन्द्रजीकोदी २९

फिर बड़े हर्ष से कहा लक्ष्मणजी तुम भी आवो हमारी कन्या ऊ-र्म्मिला को ग्रहण करो ३० अब विलम्ब न करो लक्ष्मण से ऐसा कह भरतजी से जनकजी बोले हे रघुनन्दन अपने करकमलसे माण्डवी का कर ग्रहण कीजिये ३१ तदनन्तर शत्रुघ्न से बोले कि हे शत्रुसूदन तुम अपने हाथ से श्रुतकीर्त्ति नाम कन्या को ग्रहण करो ३२ तुम सब जन सौम्य स्वभाव व सुचरित व्रत हो दैवयोग से पत्नीभी वैसीही मिली हैं इनको अङ्गीकार करो जिसमें समय न बीतजाय ३३ जब जनकजीके ऐसे वचन सुन वसिष्ठजी की आज्ञा से चारों राजकुमारों ने चारों राज कुमारियों के करकमल अपने अमल करकमल से ग्रहण किये ३४ व अपनी अपनी भार्य्याओं के साथ अग्नि व जनक तथा सब ऋषियों की प्रदक्षिणा चारों राजकुमारों ने की ३५ इस रीति से जैसा कुछ वेद में लिखाहै उसी विधानसे सबका विवाह हुआ ३६ उस समय फिर देव-ताओं के नगारे तुरुही आदि बाजे आकाश में बाजे व पुष्पोंकी वर्षाहुई ३७ अप्सरा अपने आप नाचने लगीं व गन्धर्व्व गानेलगे श्रीरामचन्द्रा-दिकों के विवाह मङ्गल में ऐसा अद्भुत हुआ ३८ इस प्रकार सब नगारे बाजते गाजतेरहे कि तीन तीनवार अग्निकी प्रदक्षिणाकर अपनी अपनी स्त्री को सब महाराज कुमारों ने ग्रहणकिया ३९ व अपनी अपनी स्त्रियों के सङ्ग सब राजकुमार जनवासकोगये राजादशरथ भी ऋषियों के संग पुत्र पुत्रवधुओं के विवाह का सुख देखते हुये जनवास में आये ४० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेत्रिसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७३ ॥

इसरीतिसे सब विवाह वेद विधिसे हुआ जब रात्रिबीती तब महा-मुनि विश्वामित्रजी राजा दशरथ व राजा जनकजी से विदा हो कौशि की नदीके तटपै जो उनकी कुटीका पर्व्वत था वहां फिर तपस्या करने चलेगये १ विश्वामित्रजी के चलेजाने पै राजा दशरथजी भी जनकपुरी के महाराज से पूछ अपनी पुरी जाने को चले २ चलने के समय राजा जनकजी ने बहुत से भूषण वस्त्रादि दिये व एक लाख धेनु बहुत अन्य पदार्त्थ दिये ३ करोरि तो दुशाला धूसा कम्बलादि ऊर्ण वस्त्रदिये हाथी घोड़े रथ पैदर सब ढूंढ़ ढूंढ़ जो जो उत्तम थे अच्छी तरह भूषित कराय

कराय महाराज को दिये ४ सौ सौ कन्या प्रत्येक चारों राजकुमारियों को दासी बनाने के लिये दीं बहुत से सेवक भी दिये करोरि करोरि रुपये मुहरें मोती मंगादिये ५इ न्हेंइसके विशेष और बहुत दायजदिया व राजा दशरथजी से विदा हो जनकजी तोअपने राजमन्दिर को चलेगये महाराज दशरथ जी भी अपने महात्मा पुत्रोंके साथ ६ सब ऋषियोंको आगेकर सब सेना से नगारे शङ्खादि बजाय अयोध्यापुरी को चले ७ सब समाज के साथ बड़े हर्ष से वरात चलीआती थी कि ८ काकादि दुष्टपक्षी चारों ओर से बोलने लगे तिनके बोलने से महा अशकुन सूचित हुआ व मृग लोगसमाज की दक्षिण ओर निकलने लगे जिनसे महा शकुन सूचित हुये ९ तिनको देख महाराजाधिराज दशरथजी ने वसिष्ठजी से पूंछा १० कि ये दुष्टपक्षी काकादि चारोंओर कुशब्द करते हैं व शुभ मृगगण प्रदक्षिणा करते हैं जिनसे हमारा मन कांपता है यह क्या है शुभकारी है व अशुभकारी ११ राजादशरथजी के वचन सुन महामुनिराज वसिष्ठजी अति मधुर वाणी बोले कि इसका जो फल है सुनिये १२ जो ये वायसादि घोर पक्षी इधर उधर उड़तेहैं इससे कोई महाघोर भय होनेवाला है यह सूचित होताहै और मृगगणों के प्रदक्षिण चलने से उस दोष का नाश व सकल कल्याण सूचित होताहै १३ सब लोग आपसमें यही बतलाही रहेथे कि सामने से महाप्रचण्ड पवन बही जिससे सब पृथिवी कांपउठी बड़े बड़ेभी वृक्ष उखड़उखड़ गिरने लगे १४ ऐसी धूर उड़ी कि मारे अँधियारी के सूर्य्य छिपगये किसी को कोई दिशा नहीं सूझती थी सेना के ऊपर ऐसी भस्म आय उड़के परी कि सब के नेत्र मूंद गये १५ उस समय वसिष्ठ व अन्य ऋषि लोग व सहित पुत्र राजादशरथ इनसबकेतो कुछ चेत रहा बाकी सेना सब अचेत होगई क्योंकि उस अन्धकार में सबकी सब आच्छन्नही होगई १६ ॥

दो० इमि सब बल व्याकुल रह्यउ परशुरामकहँ भूप ।
लख्यहु भीम दर्शन जटा धारि कराल स्वरूप १ । १७
अति कराल कैलास सम कालानल दुर्द्धर्ष ।
अति तेजोमय इतर जन दुर्न्निरीक्ष्य गत तर्ष २ । १८

परशु धरे बर कांध पर सशर शरासन हाथ ।
मनहुँ अपर शिवत्रिपुर बध हित आवत जगनाथ ३ । १९
भीमरूपपावकसरिस ज्वलितदेखित्यहि लोग ।
मुनिगण होम जपादि कर मनमहँ करतनियोग ४ । २०
सब मुनिगण यह परस्पर कहन लगे भृगुनाथ ।
कापितुवधनहिं सहिकरन क्षत्रिय चहत अनाथ ५ । २१
पूर्व्वहि करि क्षत्रियवधन क्रोध रहित गतशोक ।
भयहु रहै भृगुपति बहुरि करिहैं नृपन सशोक ६ । २२
यहकहि मुनि गण अर्घ्यलै भीम दर्श भृगुनाथ ।
राम राम कहि मधुरवच बोले मनहुं अनाथ ७ । २३
ऋषि न दई पूजालई जामदग्न्य भृगुराम ।
दशरथ नन्दन रामसन बोल्यहुमनहुं अकाम ८ । २४

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीयेवालकाण्डेचतुस्सप्ततितमस्सर्गः ॥७४॥

हे राम दशरथनन्दन बीर तुम्हार वीर्य्य हम अद्भुत सुनतेहैं व तुमने जनक पुरमें धनुष तोराहै यहभी अच्छी तरह सुनाहै १ सो उस धनुषका भंजन बड़ा अद्भुत व चिन्ता रहितहै उसीको सुन निज मन गुन हम यहां आयेहैं आप यह दूसरा धनुष लीजिये २ यह अति कठोर धनुषहै व इसका जामदग्न्य धनुष नामहै इसकी रोदा खींच इस पर बाण चढ़ाओ व अपना बल देखावो ३ जब हम तुम्हारा बल देख लेंगे इस धनुष पै रोदा खींच बाण चढ़ादोगे तो तुम्हारे साथ हम द्वन्द्व युद्ध करेंगे क्योंकि बीर्य्यमें हम तुम्हारी प्रशंसा समझतेहैं ४ परशुरामजीके ऐसे वचनसुन मनगुन राजा दशरथ बहुत उदासहोबड़ी दीनताकेसाथ हाथ जोर बोले ५ हे भृगुनाथ आपनेजो कोप करके क्षत्रियोंका बिनाश कियाथा सो रोष तो अब शान्त हुआ क्यों नहो आप तपस्वी ब्राह्मणतोहै हीहैं अब हमारे लड़के इन बालकों को अभय करदीजिये ६ क्योंकि वेदाध्ययन व्रत साली भार्गवों के कुलमें उत्पन्न आपने इन्द्रके सामने एक समय कहा है कि आजसे अब अस्त्र हम न धारण करेंगे यह कह सब अस्त्र शस्त्र फेंक दियेथे ७ फिर तुमने सब पृथ्वी क्षत्रियोंसे ले कश्यप मुनिको देकर

जाय तप करनेके लिये महेन्द्राचल पर बसे ८ सो हे मुनिराज हमारा सर्व्वस्व नाश करनेके लिये आप यहां आयेहैं अकेले रामहीके मारेजाने पर हम सब न जीवेंगे ९ राजा दशरथ ऐसा कहतेही रहे परन्तु परशुरामजी उनका अनादर कर रामचन्द्रहीसे बोले दशरथ से कुछ भी नहीं १० हे राम ये दो धनुष श्रेष्ठ अति दिव्य सब लोकमेंपूज्य अति पुष्ट बलवानहैं व विश्वकर्म्माने बनाया है ११ सो एकतो जब महादेव जी त्रिपुरासुरको मारने चलेथे तब देवताओंने उन्हें दियाथा जिसे तुमने तोड़ डाला है १२ यहजो हमलियेहैं उन्हीं मेका दूसराहै व उससे अति कठोरहै इसे देवों ने श्रीविष्णु को दियाथा १३ यह वैष्णव धनुष शत्रुओंका नाशक शिव धनुषके समानहीं वरन उससे अधिकहै १४ क्योंकि जब ये दोनों धनुष दोनों देवों को मिलेथे तब महादेव व विष्णु के बलकी परीक्षा लेनेके लिये सब देवोंने ब्रह्माजीसे पूछा १५ तिनका अभिप्रायजान ब्रह्माजीने दोनों देवों का पराक्रम परखने के लिये दोनों में बिगार करादिया १६ उस बिगारमें महादेव व श्रीविष्णुमें महायुद्ध हुआ जिसमें दोनों को परस्पर जीतनेकी इच्छाथी १७ यद्यपि महादेवका भी धनुष बड़ा करालथा पर विष्णुके धनुषसे कुछ वश न चला केवल एक हुङ्कारमें श्रीविष्णुजीने शिवजीको स्तम्भन करदिया १८ तब सब देवताओं ने आय दोनों सुरोत्तमोंकी बड़ी प्रार्त्थनाकी बहुत कहने सुननेपै दोनोंशान्त हुये १९ इस रीतिसे श्रीविष्णुके पराक्रमसे शिवका धनुष जृम्भितदेख सब देवता व ऋषियोंने शिवसे विष्णु को श्रेष्ठ माना २० कुछ दिनके पीछे शिवजीने क्रोधकर अपना धनुष देवोंको देडारा देवोंने मिथिलापुरी के राजा महाराज देवरातको देदिया २१ व यह धनुष जिसपर तुमको बाण चढ़ाने को कहते हैं हमारे पितामह ऋचीक मुनि को श्रीविष्णु जीने थातीसौंपाथा २२ ऋचीकजीने प्रसन्नहो अपने पुत्र व हमारे पिता जमदग्नि जीको दिया २३ जब हमारे पिताजी शस्त्र धारण करना छोड़ तपस्या करने लगे तब राजा सहस्त्रबाहुने प्राकृती मतिमें आय हमारे पिताको मारडारा २४ हमने जब अति अयोग्य व दारुण अपने पिता का बध सुनातो मारे रोषके इक्कीस बार तक जैसे २ उत्पन्न होते गये भूमण्डल के क्षत्रिय मार डारे २५ व सब पृथिवी हमको मिलगई तब यज्ञ

करके सम्पूर्णपृथिवी यज्ञान्तमेंमहात्मा कश्यप मुनिकोदक्षिणामेंदेदी २६ देकर महेन्द्राचल पे तपस्या करने चलेगये थे अब तुमनेशिव का धनुष तोड़ डारा उसका शब्द सुन बड़े वेग से यहां आयेहैं २७॥

चौ० ॥ सो मम जनक पितामह केरो ।वैष्णव धनुष सकल श्रुतिटेरो॥ क्षत्रिय धर्म्म राम करि आगे। अहण करहु तुम सब भ्रम त्यागे १।२८ धनुष श्रेष्ठ पर योजित करहू। रिपु हर शर मम संशय हरहू॥ जो यह करि सकिहौ रघुनाथा। द्वन्द्व युद्ध करवें तव साथा २।२६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेबालकाण्डेपञ्चसप्ततितमस्सर्ग्गः॥ ७५ ॥

परशुराम जीके ऐसे वचनसुन श्रीरामचन्द्रजी अपने पिताके गौरवसे बहुत धीरेसे परशुरामजीसे बोले १ हे भार्ग्गव अपने पिताके मार जाने पर उसका बदला लेनेकोजो इकीस बार निः क्षत्रिय पृथिवी आपने कीहै वह हम सुन चुकेहैं आप अपने पिता के ऋण से छूटगये हम उस बात को अङ्गीकार करतेहैं क्योंकि शूरवीरको बहुत आवश्यक है कि बैर भाव को शुद्धही कर डारे २ परन्तु जो तुम यह समझते हो कि ये वीर्य्य हीन हैं क्षत्रियकी धर्म्मकी सामर्थ नहीं रखते इससे हमारा निरादर करते हो यह बाततो हम अङ्गीकार नहीं करते अब हमारातेज व पराक्रम देखिये ३ इतना कह परम क्रुद्ध हो श्रीरामचन्द्र जीने परशुराम के हाथसे बहुत शीघ्र धनुष बाण ले लिया ४ धनुष को चढ़ाय उसपै बाण चढ़ाया व परशुराम से क्रुद्ध होकर कहा ५ कि तुम ब्राह्मण होने के कारण हमारे पूज्य हो फिर विश्वामित्र जीकी भगिनी के पौत्र हो तिससे तुम्हारे प्राण हरनेके लिये हम बाणनहीं चलासक्के आपचाहे जो कहो ६ हां हम यह चाहतेहैं किअब इसीबाणसे जोतुम्हारीआकाशादि गमन शक्तिहै जिसके समान त्रिलोकीमें किसीकी नहीं उसे मिटा देंगे ७ क्योंकि यह वैष्णव बाण शत्रुओंके नाश करनेवालाहै जबसे चढ़ाचुके अब निष्फल नहीं लौटसक्ता ८ उसीसमय वरायुध धारण किये हुये श्रीरामभद्र कुमारको देखनेके लिये सबऋषियोंके साथ सबदेवता ब्रह्माजीको आगेकर ९ गन्धर्व्व अप्सरा सिद्ध चारण किन्नर यक्ष राक्षसादिकोंके साथ आये १० जब श्रीरामचन्द्रजीके तेजसे व कोपसे तीनो-

लोक जड़होगये तबपरशुरामजीका पराक्रम जातारहा ११ मारे रामचन्द्र जीके तेजसे जबपरशुरामजीभी जड़होगये तो श्रीकमलदल नयन श्री रामसे परशुरामजी बोले १२ हेरामचन्द्र जबहमने सबराजोंसे जीतपृथिवी यज्ञान्तमें कश्यपमुनिको दक्षिणा देदीथी तब उन्होंने हमसे कहा कि अब हमारे देशमें तुम न बसना १३ इससे हम अपने गुरूका वचन मान रात्रिको कभी पृथिवीमें नहीं बसते क्योंकितबसेहमने इस पृथिवी को कश्यपही कीकरदी इसीसे इसका काश्यपी एकनाम भीहै १४ तिससे हेराम इसहमारी सर्व्वत्रकी पहुंचको आप न विनाशिये जिसमेंकि हमारी अति वेगवती चाल बनीरहे झटपट हम अपने महेन्द्राचल पर्व्वत पै चले जायं क्योंकि समुद्र व कश्यप दोनों जनोंने वह पर्व्वत हमको देदियाहै १५ हांयह वैष्णवास्त्रमिथ्या नहीं होसक्ता सो इसकेलिये हमने तपस्याके बलसे बहुतसे लोक जीतेहैं तिनको इसमुख्य बाणसे हनिये और हमको जानेदीजिये जिसमें कालमें अन्तर न परै १६ जिस से कि इस धनुषको चढ़ानेवाला कोई न था और आपने लीला पूर्व्वकही चढ़ादिया व उसदूसरेको खण्डनभी करडारा इससे हमने ठीक २ निश्चय करलिया किआप सबके जीतनेवाले नाशरहित पुराण पुरुषोत्तम देवदेव नारायणहैं अब आपका कल्याणहो १७॥

चौ० ॥ ऐसुर गणदेखत यहआई । रामतुम्हहिं देखहुचितलाई ॥ तुम सबकर्म्म करनमहंनागर । अरुनसमर तब समकोउ जयकर १।१८॥ जो त्रिलोक नायक तुम पाहीं । हमहारे सब बिधि शकनाहीं ॥ लाजन आवत सोम्बहिं काऊ । सत्यवचन यह तुम्हहिं सुनाऊ२ । १९ ॥ आनबान सम नहिं तवशायक । छोंड़हुआशु शरहि सब लायक ॥ जब छोड़िहहु शर तुम रघुनाथा । जाब महेन्द्राचलहि समाथा ३ । २० ॥ परशुराम इमि कह तब रामा । महा प्रतापी पूरणकामा ॥ छोड़्यहु बाणसरोशन तानी । हते लोक भृगुपति के जानी ४ । २१ ॥ देखि लोक तपसार्ज्जित रामा । जब हतभये रहीनहिं सामा ॥ गयहु त्वरितसो अचल महेन्द्रा । लागयहु सु तपकरन द्विजपेन्द्रा ५ । २२ ॥ निर्म्मल दिशा सहित उप आशा । भई सकल शुभ लोकप्रकाशा ॥ ऋषिसुरगण धृतकरशर चापू । रामहिं लगे प्रशंसनआपू ६ । २३॥ दशरथ सुत रघुबरहि प्रशंसी । करी

प्रदक्षिणा प्रभु भृगुवंशी ॥ गयहु आत्म गति शुभगतिनीके । मुदितसकल जन सब विधिठीके ७ । २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेषट्सप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ७६ ॥

परशुरामजीके चले जानेपै प्रशंसा किये हुये दशरथ नन्दन श्रीरामचन्द्रजीने वरुणजीको हाथमें परशुरामजाका दिया धनुष देदिया १ तिसके पीछे वसिष्ठादि ऋषियोंके वन्दना कर अपने पिताको विह्वल देख उनसे बोले २ कि परशुराम अब चलेगये यह चतुरङ्गिनी सेना आप ऐसे स्वामीसे पालीहुई अयोध्याजीको चलै ३ रामचन्द्रजीके ऐसे वचन सुन महाराज दशरथजीने रामचन्द्रको दोनोंबाहु पसारिके छातीमें लगाया वशिर सूंघलिया ४ व परशुरामको चलगये सुन बहुत हर्षितहो अपने पुत्रोंको व अपनाकोभी मानों नयेशिरसे जन्मेजाना ५ फिर सेनाको आज्ञादी कि अयोध्यापुरीको चलीजाय ध्वजा पताका सहितअति रमणीय नगारे आदि बाजे बजाती हुई ६ सब राजमार्ग्गोंमें सुगन्धित द्रव्यसे छिरकाव होतीहुई अति शोभायमान चारोंओरसे पुष्प विथराई हुई राजाके आनेसे प्रसन्नमुख पुरबासियोंसे शोभित ७ मनुष्योंके समूहोंसे पूर्ण अयोध्यामें महाराज दशरथ पहुंचे अयोध्यानिवासी ब्राह्मण लोग जोबरातमें नहींगयेथे बहुत दूर आगे चलके आय मिले ८ महाराज अपने शोभायमान पुत्रोंके साथ नानाप्रकार के सुगन्धित पदार्त्थों से लीपे पोते दिव्य राजमन्दिरमें पधारे ९ व सब कामों से पूर्ण हो गृहमें आनन्दित हुये १० कौसल्या सुमित्रा कैकेयी येतीन पट्टरानियां व इन्हे आदि अन्यजो बहुतसी भोगिनी स्त्रियांथी सबसे नानाप्रकारके भोग विलासके पदार्त्थ ग्रहण किये ११ तिसके पीछेमहाभाग्यवती सीता ऊर्म्मिला व कुशध्वजकी कन्या माण्डवी श्रुतकीर्त्ति इनचारों बधुओंको सबरानियों ने नानामङ्गल गीतके साथ परछन कर उतारा १२ वे सब नानाप्रकार के माङ्गलिक रेशमी वस्त्र धारण किये प्रथम देवमन्दिर में प्रवेश कराईगईं व सबोंने देवताकी पूजा करी कराई १३ तदनन्तर जितनी गुरु पत्नी ब्राह्मणी व रानियां व अन्य बन्दना करनेके योग्य स्त्रियांथीं सबके बन्दना कर अपने २ पतियोंके सङ्ग अपने अपने नवमन्दिरो में एकान्त

स्थान पाय अतिहर्षाय विहारकरने लगीं १४ अबसब श्रीरामादि राजकुमार विवाहितहो सब अस्त्र शस्त्र विद्याओं में निपुण हो सब प्रकार धन सम्पत्तिपाय अपनेअपने इष्टमित्रोंके साथ दशरथ महाराजकी सेवाकरते हुये विराजने लगे १५ कुछ दिनोंके पीछे कैकेयीके पुत्र भरतसे महाराज दशरथजी बोले १६ कि हेपुत्र ये केकय देशके राजाके पुत्र तुम्हारे मामा युधाजित्नाम तुम्हारे बुलानेके लिये बहुत दिनोंसे टिकेहैं १७ महाराज के ऐसे वचन सुन कैकेयी नन्दन श्रीभरतकुमार शत्रुघ्न के साथ अपने मामाके सङ्गजानेका बिचार करनेलगे १८ प्रथम अपने पिताजीकी आज्ञा ले फिर परम कारुणिक रामचन्द्रजीसे पूंछ कौसल्यादि माताओंसे भी भली भांति पूंछ पांछ शत्रुघ्नके साथ केकय देशको चले १९ युधाजित् भी भरत शत्रुघ्न दोनों राजकुमारों को पाय अति हर्षाय जाय अपने नगरमें पहुंचे उनकेपिता केकयराज दौहित्रोंको देख बहुतसन्तुष्टहुये २० यहां जबभरत शत्रुघ्न अपने ननिऔरे को चलेगये तबदेव समान रूपधारी अपने पिताकी सेवा श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी करने लगे २१ उनमें श्रीरामचन्द्रजी पिताकी आज्ञासे राजकाजभी सब सबको प्रिय व हित करने लगे २२ फिर माताओं की इच्छानुसार माताओं के भी कार्य्यकरते गुरुओंके गुरुकार्य्य करते कराते जिससमय जिस कार्य्यका प्रयोजन देखते वहीकरते कराते २३ इसरीति से रामचन्द्रजी के शील स्वभाव से राजादशरथ व सब वेदपाठी ब्राह्मण लोग सब उद्यमीव जितने राज्य निवासी हैं सबके सब अति सन्तुष्ट हुये २४ तिनचारों पुत्रों में अति यशस्वी लोक में सबसे सम भाव रखनेवाले सत्य पराक्रमी ब्रह्मा के समान सबके पालनादि करनेवाले महा गुणवान् कृपानिधान श्रीरामचन्द्रही हुये २५ इसरीति से महाराजकुमार श्रीरामचन्द्र जी श्रीजनक नन्दिनी सीता जी के साथ उनमें अपना मनलगाय उनका मनअपना में निवेशित कर बहुत दिनोंतक बिहार करते रहे २६ ॥

चौ० ॥ ब्राह्मविवाह विवाहित सीता । यासों रामहिं प्रिया पुनीता ॥
प्रीतिरूप गुणशीलहि पाई । राम प्रीति दिन दिन अधिकाई १ । २७ ॥
राम से द्विगुण प्रीति हृदि माहीं । जनक सुता के संशय नाहीं ॥ राम जानकिहि सीता रामहिं । जानत मन सों मन अभिरामहिं २ । २८ ॥

राम से अधिक प्रीति वैदेही । करत सदा लषि परम सनेही ॥ रूप
देवता सम कमला सम । शोभा सीता माहिं नकछु कम ३ । २९ ॥ सीता
राजकुअँरि सँग रामा । अति शोभित भे पूरण कामा ॥ जिमि सब देव
देव हरि आपू । कमला सँग शोभित शुभ लापू ४ । ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेवालकाण्डेसप्तसप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ७७ ॥

समाप्तोयम्वालकाण्डः प्रथमः ॥



नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वेदान्त	**राग**	गोपीचंद भरतरी	स्वयम्बोध
योगवाशिष्ठ	रागप्रकाश	कथा श्री गंगाजी	ज्ञानचालीसी
आनंदामृतवर्षिणी	लावनी	अवधयात्रा	दोहावली
सांख्यतत्वकौमुदी	**क़िस्सा वग़ैरह**	भरतरीगीत	बालाबोध
काव्य	नानार्थनौसंग्रहावली	दानलीला व नागलीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
सूरसागर	ब्रह्मसार	दोहावली रत्नावली	किताबजंत्री
कृष्णसागर	शिवसिंहसरोज	गोकर्णमाहात्म्य	गणितकामधेनु
विश्रामसागर	भक्तमाल	श्रीगोपालसहस्रनाम	लीलावती
प्रेमसागर	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायणरास-	पटवारियों की पुस्तक भा
ब्रजविलास बड़ा व छो	विक्रमविलास	हनूमन्नाटक	**वैद्यकभाषा**
कृष्णप्रिया	बैतालपच्चीसी	हनुमानबाहुक	निघण्ट
विजयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी	अमरबिनोद
अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	हरिहर सगुण निर्गुण-	वैद्यजीवन
छन्दोर्णवपिंगल	शुकबहत्तरी	पदावली	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली
रसराज	बकावलीसुमन	बनयात्रा	अमृतसागर छोटा व बड़ा
सतसई मूल व सटीक	चहार दरवेश	कायस्थ वर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव
सभाविलास	क़िस्सा हातिमताई	विहार वृन्दावन	रसायनप्रकाश
तुलसीशब्दार्थप्रकाश	अपूर्वकथा	समर विहार वृन्दावन	झूलाझुल गुब्बी
भजनावली	क़िस्सा गुल सनोबर	कल्पभाष्य	दिललगन
प्रेमरत्न	सहस्र रजनीचरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंबाद	**ज्योतिषभाषा**
युगुलविलास	राबिन्सन् का इतिहास	उपदेशचन्द्रिका	जातकचन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	सीताहरण	मंगलबिनोद	जातकालंकार
बारहमासा बलदेव प्र-	सतीविलास	विजयचन्द्रिका	दैवज्ञाभरण
मनोहरलहरी	क़िस्सा मर्द औरत	सिद्धान्तसंग्रह	ज्ञानस्वरोदय
गंगालहरी	संगीत प्रह्लाद	नवीनसंग्रह	रमलसार
यमुनालहरी	**मुतफ़र्रक़ात**	रामविनयशतक	रमलनौरत्न
जगद्बिनोद	शनिश्चर की कथा	**दरसी**	इन्द्रजाल
शृंगारबत्तीसी	ज्ञानमाला	अक्षरावली	लीलावती

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दूकेंथीमहाजनी	ऐकचौपायोंकामदा
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकटके लाइसन्सका	खलतबेजा१सन्
सिद्धान्तचन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऐक२सन्१८७४ई०	१८७७ई०
भाषातत्वप्रकाश	महिम्नस्तोत्र	नागरी	ऐकमजमूआज़ावि-
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐकलगानमग़रबी	ताफ़ौजदारी१०सन्
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्यस्मृति	वशिमाली १०सन्	१८७२ई०
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषा टीका	१८५९ई०	ऐकमालगुज़ारीमग़-
संग्रहशिरोमणि	अमरकोषतीनोंकाण्ड	इंडियनपिनलकोर्ट	रबीवशिमाली१९
भगवद्गीतापंचरत्न	याज्ञवल्क्यस्मृति	मजमूआज़ाविताफ़ौ-	सन्१८७३ई०
दुर्गापाठमूलसटीक	सन्ध्यापद्धति	जदारीऐक२५सन्	तरमीममजमूआ
विष्णुभागवत	व्रतार्क	१८६१ई०	ज़ाबिताफ़ौजदारी
कथा यमद्वितीया	भगवद्गीताटीकाह-	ऐकरजिस्टरी२०	११सन्१८७४ई०
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीताटीकाआ-	सन्१८६६ई०	तक़ावीकेक़ायदे
कायस्थकुलभास्कर	गीतगोविंद	ऐकस्टाम्प१सन्	सवालवजवाबपु-
कायस्थधर्म्मनिरूपण	कथा सत्यनारायण	१८६२ई०	लिस
तथा छोटा	परमार्थसार	ऐकस्टाम्पअदालत	अवधरुहेलखण्ड
मधुरासभा	शार्ङ्गधरसंहिता	२६सन्१८६७ई०	रेलवेकादस्तूरुल्
ज्योतिष	पाराशरीसटीक	मजमूआऐकअवध	अमल
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोधसटीक	लगान१९सन्१८६८	ताज़ीरातहिन्द
मुहूर्त्तचन्द्रदीपिका	लघुजातक	ईसवी	किताबेंजोछपरही
मुहूर्त्तचिन्तामणिस-	षट्पंचाशिका	पुरज्जादारी२६सन्	हैंउनकेनामनीचे
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	१८६६ई०वग़ैरह	लिखेहैं
वृहज्जातकसटीक	गरुड़पुराण	ऐकस्टाम्पदस्तावे-	मदनपारिजात
जातकालंकार	रामविवाहोत्सव	ज़ात१८सन्१८६९ई०	मार्कण्डेयपुराण
जातकाभरण	अपरोक्षानुभव	ऐकताल्लुक़दारानअ-	उर्दूटीकासहित
होरामकरन्द	क़ानूनकेथी	क़रूज़अवध२४सन्	इति
मुहूर्त्तमार्तण्डसटीक	पटवारियोंकेक़ायदे	१८७०ई०	
मुहूर्त्तगणपति			

